CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री १००८ चिन्तामणि पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, अयोध्या नगर, भोपाल (म.प्र.)

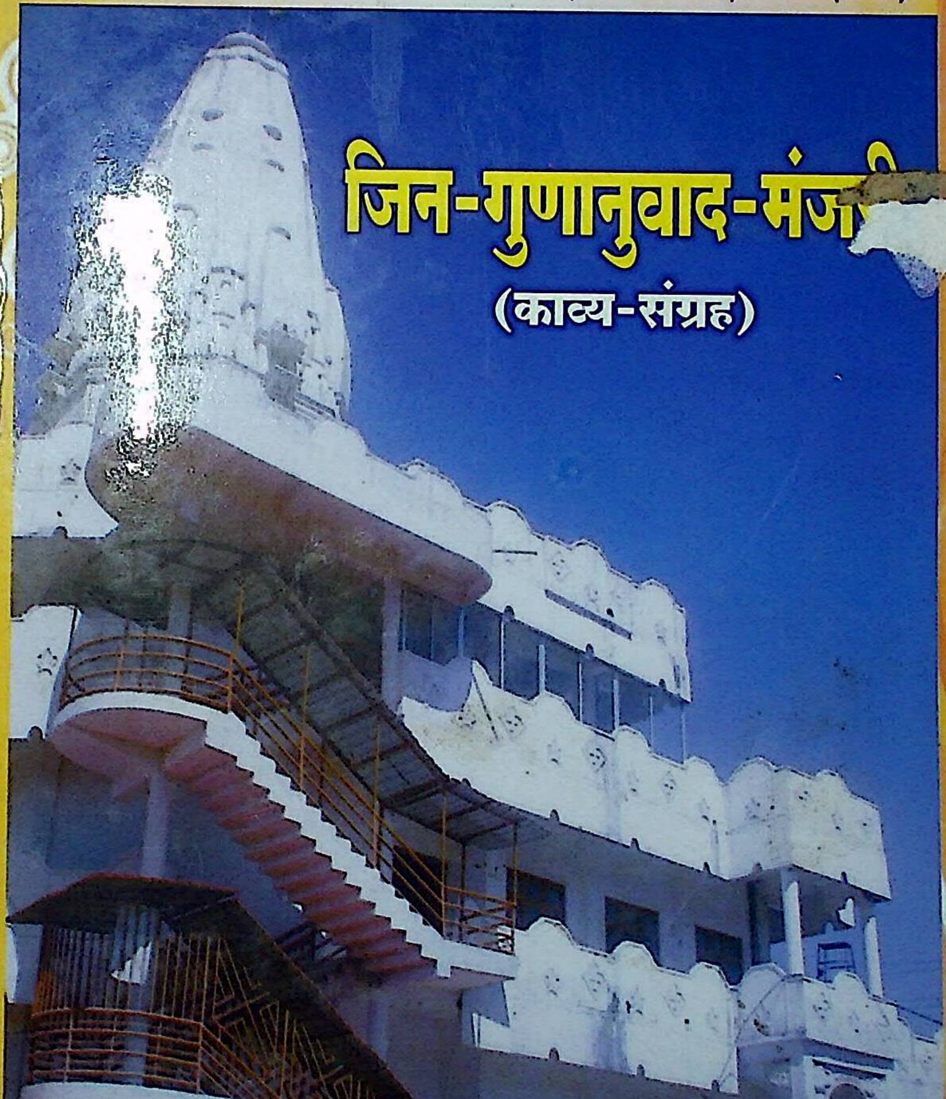

जिन-गुणानुवाद-मंजरी

(काव्य-संग्रह)

कवि : पं. लालचन्द्र जैन "राकेश"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्मतियाँ

आपकी जितनी भी रचनायें हैं वे सब सारगर्भित हैं। आपकी जितनी भी प्रशंसा की जाये, वह कम है। आप अपनी रचनाओं से "वर्णी प्रवचन [illegible]का" का गौरव बढ़ाने की कृपा [illegible] आपके प्रति बहुत-बहुत शुभ[illegible]एँ हैं -

[illegible]मेरचन्द्र जैन, सम्पादक
वर्ण प्रवचन 6.3.08
मुजफ्फर नगर (उ.प्र.)

आप बहुत ही सरल, शांत विचारों के धनी है और लेखनी लिखने में आशु कवि हैं। हर इंसान यह कार्य नहीं कर सकता। मैं वीर प्रभु से प्रार्थना करता हूँ कि आप शतायु हों और निरन्तर जिनवाणी की सेवा करते रहें।

शान्तिलाल बैनाड़ा
प्राफेसर कालोनी, आगरा (उ.प्र.)
14.10.2008

आपकी "पावन पावागिरि दर्शन" रचना को पढ़कर ऐसा लगा कि आपकी आत्मा में अनमोल रत्न समाये हैं जो समय-समय पर निकलकर अधर्मों को सन्मार्ग पर चलने को विवश करते हैं। मैं आपको "राकेश" की बजाय "रत्नाकर", जिसमें अनंत रत्न हों, कहना अच्छा समझता हूँ।

वैद्य बाबूलाल जैन
देहरे की टौरिया के पास, आजादपुरा,
ललितपुर (उ.प्र.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri
14.5
श्री ग० व० दि० जैन संस्थान
पुस्तक क्र० 5597
नरिया वाराणसी
Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

।। श्री पार्श्वनाथाय नमः ।।

जिन-गुणानुवाद-मंजरी

(काव्य-संग्रह)

कवि
पं. लालचन्द्र जैन "राकेश"

प्रकाशक
सकल दि. जैन महिला समाज
अयोध्या नगर, मिनाल परिक्षेत्र, भोपाल (म.प्र.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन-गुणानुवाद-मंजरी

प्रेरणा एवं शुभाशीष : निरतिचार व्रत पालक, स्वाध्याय रसिक, प्रवचन निष्णात, गुणग्राही
ब्र. श्री गोकुलराम जी, दिल्ली

कृति : जिन-गुणानुवाद-मंजरी

कवि : धर्म दिवाकर, सुधांशु, संतकवि
पं. लालचन्द्र जैन "राकेश"
एम.ए. (हिन्दी), एम.ए. (संस्कृत), बी.एड., शास्त्री, साहित्यरत्न, एम.जे.पी.एच.

सम्पादन : माँ भगवतीदेवी जैन स्मृति ग्रन्थागार, कृति क्रं. 3
36, भाग्यरेखा अमृत एन्क्लेव, अयोध्या नगर वायपास रोड, भोपाल (म.प्र.) - 462 041
मो.: 94253-72740, 98930-72575

प्रकाशक : सकल दि. जैन महिला समाज
अयोध्या नगर, मीनाल परिक्षेत्र, भोपाल (म.प्र.)

सन् : 2014, प्रथमावृत्ति

प्रतियाँ : 1000

मूल्य : रू. 50/- (मंदिर जी की गोलक में डालें)

मुद्रक : रुचि प्रिंटर्स, भोपाल (म.प्र.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन - गुणानुवाद - मंजरी

क्र.	विवरण	पृष्ठांक
	भाग-१	
01.	समर्पण	01
02.	कृतज्ञता, 1-2	02-03
03.	प्रकाशकीय – भक्ति का अमृत कलश	04
04.	लेखकीय – प्रेरणा और आशीर्वाद	07
05.	प्रस्तावना, लेखक : श्री रमेशचन्द्र जी मनयां, भोपाल	11
	भाग-२	
01.	मंगलाचरण	19
02.	जय हो णमोकार जय हो तुम्हारी	20
03.	हे शारदे माँ! हे शारदे माँ।	21
04.	शिक्षा दे रहीं है हम को माता परम पूज्य जिनवाणी	22
05.	जिनालय वंदना	23
06.	प्रार्थना : देव दर्शन	25
07.	प्रार्थना : हे नाथ तुमने हमको ....।	25
08.	प्रार्थना : तेरे घर के सामने	26
09.	दु:ख हरण स्तुति	27
10.	आत्म आलोचना	28
11.	चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तवन	30
12.	भ. आदिनाथ स्तुति: अयोध्यानगर	34
13.	भ. आदिनाथ स्तुति: कुण्डलपुर	36
14.	भ. शीतलनाथ चालीसा: साँची	37
15.	भ. शांतिनाथ चालीसा सेरौन जी	39
16.	भ. पार्श्वनाथ स्तवन विश्ववंद्यपारस प्रभु.......	41
17.	महावीराष्टक स्तोत्र: हिन्दी पद्यानुवाद	43
18.	महावीराष्टक स्तोत्र: हिन्दी गद्यकाव्यानुवाद	45
19.	जब महावीर भू पर उतरने लगे	48
20.	जय महावीर	50
21.	महावीर का जीवन जग के जीवों को वरदान ....।	51
22.	आज के संत्रासमय संसार में महावीर का संदेश......।	53

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

23.	भ. बाहुबली स्तवन	55
24.	प्रभु चरणों पर चल न सके तो.............	56
25.	स्वागत है अभिनंदन है, आचार्य संघ को वंदन है	57
26.	गुरुवंदना : आचार्य श्री के चरणों में..........	57
27.	आ. श्री ज्ञानसागराष्टकम्	58
28.	आ. श्री विद्यासागराष्टकम्	60
29.	पंचकल्याणक-गजरथ उत्सव: गंजबासौदा	62
30.	गुरु वंदना: आचार्य श्री विशुद्धसागरजी	63
31.	पंचकल्याणक-गजरथ उत्सव: अयोध्यानगर, भोपाल	64
32.	उपाध्याय श्री ज्ञानसागराष्टकम्	64
33.	मुनि श्रीसुधासागराष्टकम्	67
34.	विरासत के संरक्षक: मुनिश्री सुधासागरजी	68
35.	मुनिश्री अभयसागर प्रणामाञ्जलि।	70
36.	तुम आये तो लगा कि जैसे महावीर आये हैं।	71
37.	मुनिश्री आर्जवसागर जी स्तवन	72
38.	जय बोलो मुनिराज की जय बोलो	73
39.	मुनि श्री धरती पर एक आफताब हैं।	74
40.	संत का जीवन एक उत्तम पाठशाला है।	75
41.	पूज्य श्री गणेशप्रसाद जी वर्णी	76
42.	पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को सौ-सौ बार नमन है	77
43.	महावीर के सन्देशों को लाये तारण स्वामी	79
44.	भट्टारक श्री चारुकीर्ति को.......	81
45.	उठो सन्दीप भैया जी तुम्हें माता बुलाती है	53
46.	दीक्षा-दिवस: संत जीवन का जन्म दिन	84
47.	पिच्छिका : अहिंसा की संदेशिका	86
48.	साधु संघ का विहार : आज विदा की बेला आयी	87
49.	चलो पाठशाला चलें	89
50.	गुरु और ज्ञान	91
51.	गुरु और हर्ष	91
52.	गुरु पूर्णिमा	92
53.	पुस्तकें	92
54.	उठो जागो तुम्हें निर्माण की बेला बुलाती है	93

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

55.	पढ़ते जाओ-पढ़ते जाओ....	94
56.	स्वाध्याय करो स्वाध्याय करो-	95
57.	स्वाध्याय : परमं तप :	97
58.	उपवास : स्वास्थ्य के लिए अमृत रसायन	99
59.	आओ भव्यो सैर करे हम जिनवाणी उद्यान की :	100
60.	मोक्ष शास्त्र / तत्वार्थ सूत्र : जीवन का अमृत	104
61.	तरुण चिन्तामणि	105
62.	प.पू. मुनिश्री तरूणसागर जी के कड़वे प्रवचनों का हिन्दी अनुवाद	107
63.	प्रज्ञा रत्नावली	108
64.	स्व - रचित पुस्तकों के सुभाषित	109
65.	जीवन में संस्कारों का महत्व	111
66.	जीवन की रेल	112
67.	सुख और दुख	113
68.	दुख आया तो बन्धु.............	114
69.	करुणा भाव जगा जिनके मन	116
70.	किसी जीव को नही सताना	117
71.	अंडा शाकाहार नहीं है।	118
72.	गाय	118
73.	अपना किया भोगता मानव	120
74.	जब तक मन घट भरा नहीं	121
75.	रात्रि भोजन त्याग : छटवां अणुव्रत	122
76.	हित बोलो	125
77.	मित बोलो	126
78.	प्रिय बोलो	126
79.	बोलो कम और तौलो ज्यादा	127
80.	रक्षाबंधन	127
81.	पर्वराज पर्यूषण आओ.........	129
82.	दशलक्षण की गंगा में आतम को अवगाहो	130
83.	प्यास और तृप्ति	133
84.	कुत्तों से सावधान	134
85.	रत्नाकर बैंक में खाता खुलवाइये	135
86.	पावन पुष्पगिरि	137

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

87.	बुन्देलखण्ड के इस वैभव को कवि के बारम्बार प्रणाम	139
88.	आओ भव्यो दर्श करें हम पवातीर्थ स्थान के।	141
89.	चल मेरे घोड़े चल रे चल।	144
90.	वृद्धकाल मंगलमय हो।	146
91.	आया बुढ़ापा मूरख चेत।	147
92.	मूरख चेत बुढ़ापा आया	148
93.	अब करो न कुछ भी देर, करलो अपनी तैयारी	149
94.	तन का सत् उपयोग करो।	150
95.	कांणा पौंड़ा यह तन तेरा।	151
96.	मेरो मन तनिक चैन नहिं पावैं।	152
97.	मेरो मन तनिक न धीर धरै।	152
98.	रे मन तू अधीर न हो।	153
99.	शरीर : किराये का मकान।	153
100.	परिवर्तनशील संसार।	155
101.	जीवन एक पतंग है।	156
102.	उड़ गई चिड़ियाँ, चुग गई खेत।	156
103.	एक दिन सबको जाना है।	157
104.	आज बिदा की वेला आयी (समाधिकाल)	159
105.	उड़ गई सोन चिरैया।	160
106.	आज यह अरथी उठाई जा रही है।	161
107.	अरथी और डोली।	163
108.	जो जहाँ में नाम रोशन कर गये।	165
109.	मेरी श्रद्धांजलि सभा।	165
110.	बंद लिफाफा	170
111.	मंगलकामना	171

भाग-३

01.	कवि श्री पं. लालचन्द्र जैन ''राकेश'' का परिचय लेखिका – श्रीमती शोभा जैन, विदिशा	172
02.	पं. लालचन्द्र जैन ''राकेश'' की साहित्य-सपर्या	176
03.	प्राप्त पुरस्कारों तथा उपाधियों की सूची	181
04.	अर्थ : सौजन्य दाताओं की शुभनामावलि	182
05.	सम्मतियाँ	183

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

समर्पण

(१)

अरिहन्त-सिध्दाचार्य-पाठक,
साधुगण को कर नमन ।
विनय श्रध्दाभाव से,
रचे जिनवर स्तवन ।।

(२)

गूँथ कर उनसे बनाई,
शतलड़ी यह मंजरी ।
है समर्पित प्रभु चरण में,
गुणवती, रस से भरी ।।

- पं. लालचन्द्र जैन "राकेश"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृतज्ञता-।

एक पौधा
बिना प्रकाश, पानी और खाद के
सूख जाता है।
यदि सुयोग मिलें
तो,लहलहाता है
फूलता है, फलता है
और स-फल हो जाता है।।
कृतज्ञता में
जीवन भर फूल बरसाता है
सौरभ लुटाता है
और
दूसरों का जीवन
स-फल कर जाता है।
मैं भी
एक पौधा था
पेड़ बना हूँ।
कृतज्ञता में
शक्ति को तौल कर
हाथों को जोड़ कर
सेवा में
सविनय लगा हूँ।।
अंत में
भगवान नाभिनंदन को
वंदन है।
और आप सभी का
हार्दिक अभिनंदन है

आगरा, सन्-1998

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृतज्ञता-II

नारिकेल का वृक्ष खड़ा है,
सिर पर रखे घड़ों का भार।
बाल्यकाल में पिया नीर जो,
मान रहा उसका उपकार।।
कहता ``नीर दिया जो तुमने
क्षीर हुआ है आज वही।
पी लो सादर आमंत्रण है`
मेरा भी सद्भाव यही।।

आगरा, सन्-1998

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशकीय

भक्ति का अमृत कलश

अनादिकालीन कुसंस्कारों के वशीभूत हुआ मानव-मन अत्यंत चंचल है और इन्द्रियाँ अधीन कार्य करती है। मन को प्रतिपल कुछ न कुछ काम चाहिये। यदि उसे शुभ कार्यों में न लगाया गया तो वह अशुभ कार्यों में लगेगा और उसके कारण दुख की प्राप्ति होगी। अतः मन को शुभ कार्यों में लगाना प्रत्येक कल्याणार्थी का कर्तव्य है। **यह कृति अशुभ से निवृत्ति एवं शुभ में प्रवृत्ति का उत्तम साधन है, भक्ति का अमृत कलश है।**

जैन धर्म में पाँच भक्तियाँ, छः आवश्यक, एक निःसही और एक अः सही इन तेरह शुभक्रियाओं का उल्लेख किया गया है जिनमें मन को एकाग्र कर हम अशुभ आश्रव से बच सकते हैं। तेरह शुभ क्रियाओं में पंचपरमेष्ठी की भक्ति को प्रथम स्थान दिया गया है।

गुणानुराग को भक्ति कहते हैं। श्रद्धा, प्रार्थना स्तुति, विनय, आदर, नमस्कार, आराधना ये सब भक्ति के ही नामान्तर है। भक्ति को प्रकट करने के अनेक तरीके हैं। कोई यह भक्ति अपने आराध्य की अर्चना के रूप में प्रकट करता है तो कोई स्तुति, प्रार्थना, भजन के रूप में, कोई नृत्य, गीत आदि के द्वारा गुणों का गान करता है तो कोई संगीत के द्वारा अपने आराध्य को रिझाता है।

हमारे यहाँ भक्ति साहित्य का विशाल भंडार है। भक्तामर, कल्याणमंदिर, विषापहार, एकीभाव, जिन-चतुर्विंशतिका एवं स्वयंभू स्तोत्र आदि इसके प्रमाण हैं। इसी प्रकार हिन्दी में भी अनेक स्तुतियों/प्रार्थनाओं की रचना की गयी है कारण कि संसारी प्राणी राग, द्वेष, लोभ, अहंकार आदि दोषों से निरंतर दुखी बना चला आ रहा है और कभी-कभी वह कर्म की चपेट में इतना अधिक आ जाता है कि वह घबड़ा उठता है और उस दुख से छूटने के लिए ऐसी जगह अथवा ऐसी आत्मा की तलाश करता है, उस ओर अपना ध्यान केन्द्रित करता है, जहाँ दुख नहीं है और न दुख के कारण राग-द्वेष, अज्ञान आदि हैं। इस तलाश में उसकी दृष्टि वीतराग आत्मा में जाकर स्थिर हो जाती है और उसके दुख मोचन आदि गुणों में अनुराग करने लगती है। इसी गुणानुराग को भक्ति कहते हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिन-गुणानुवाद-मंजरी

भक्ति में अपूर्व शक्ति होती है। भक्ति से मुक्ति मंदिर का द्वार खुलता है, भक्ति से पूर्व संचित कर्मों का क्षय एवं पापों का नाश होता है। भक्ति से उपसर्ग दूर होते हैं तथा जरामरण और व्याधि से होने वाली वेदना एवं सर्व दुक्खों से छुटकारा मिलता है। अतः भक्ति करना प्रत्येक व्यक्ति का कर्तव्य है।

मानतुंगाचार्य की कारागार से मुक्ति, मुनिवादिराज को कुष्ठरोग से छुटकारा, धनंजय के पुत्र की सर्पविष से निवृत्ति इसी भक्ति के प्रताप एवं प्रभाव से हुई थी। हिन्दी की दुःख हरण एवं संकट मोचन स्तुतियों के पीछे भी ऐसे ही कथानक जुड़े हुए हैं।

पं. लालचन्द्र जैन "राकेश" द्वारा रचित यह कृति "जिन-गुणानुवाद-मंजरी" ऐसी ही स्तुतियों का संग्रह है। इसमें दैनिक स्वाध्याय करने योग्य, ज्ञान एवं पुण्यवर्द्धक, वैराग्योत्पादक, स्मरणीय रचनायें हैं। श्रुत है कि इनमें से कतिपय स्तुतियों/चालीसा आदि का कई महानुभाव प्रतिदिन पाठ करते हैं। जब भी समय मिले आप भी इन्हीं पढ़ें, गुनगुनायें, आत्मसात् करें और कण्ठ का आभूषण बनायें।

जिनवाणी परम औषधि है, विषय सुख का विरेचन करने वाली है, अमृत तुल्य है। पाप, ताप, संतापहारिणी और भवतारिणी है। इन स्तुतियों का पढ़ना भी जिनवाणी की ही वाचना है। इनसे आपको तत्व का बोध, आत्मा का शोध एवं चित्त का निरोध होकर कर्मक्षय की प्राप्ति होगी।

स्तुतियों के अतिरिक्त इसमें हर उम्र के सुधी पाठकों के लिए कुछ न कुछ अवश्य है। बालकों, युवकों के जीवन निर्माण के लिये आवाहन करने वाली रचनाएँ हैं तो वृद्धों के लिए वैराग्योत्पादक, आत्मसम्बोधन रूप कविताएँ भी। कुल मिलाकर जाप की माला में 111 दानों की तरह इसमें भी 111 रचनाएँ हैं। रचनाएँ मौलिक एवं रोचक, होने के साथ ही सरल, सरस एवं प्रवाह युक्त भाषा शैली में होने से गेय भी हैं।

वैचारिक सौन्दर्य मन के सौन्दर्य का परिचायक होता है। कर्ता लेखनी से लेखन क्रिया करता है, उसमें उसकी भाव दशा जुड़ी होती है। शुद्ध स्वच्छ लेखन के लिये शुद्ध, स्वच्छ आचार-विचार भी आवश्यक होते हैं। पंडित लालचन्द्र जी "राकेश" की ये रचनाएँ उनके जीवन की प्रतिविम्ब हैं। उनके व्यवहार एवं लेखन से यही भाव झलकता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हम पंडित जी के हृदय से आभारी हैं जिन्होंने हमें अपनी इस सुकृति को प्रकाशित कर पुण्यार्जन करने का सौभाग्य प्रदान किया। हम पंडितजी के सुखी, निरोग एवं दीर्घजीवन की प्रभु से प्रार्थना करते हैं। हम उन सभी बहनों के प्रति भी आभार व्यकत करते हैं जिनके अर्थ सौजन्य से यह कृति प्रकाशित की जा रही है। हम श्री रुचि प्रिंटर्स के प्रति भी हार्दिक आभार व्यक्त करते हैं जिन्होंने सुन्दर एवं समय पर कार्य सम्पन्न किया।

इस रचना से समाज धर्मध्यान के प्रति अग्रसर होगी हम ऐसी मंगलकामना करते हैं। श्री 1008 चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान की जय।

प्रकाशक
सकल दि. जैन महिला समाज
अयोध्या नगर, एवं मीनाल परिक्षेत्र, भोपाल (म.प्र.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री १००८ चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान

प्रथम तल (भूतल) में विराजमान समोशरण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री १००८ आदिनाथ भगवान

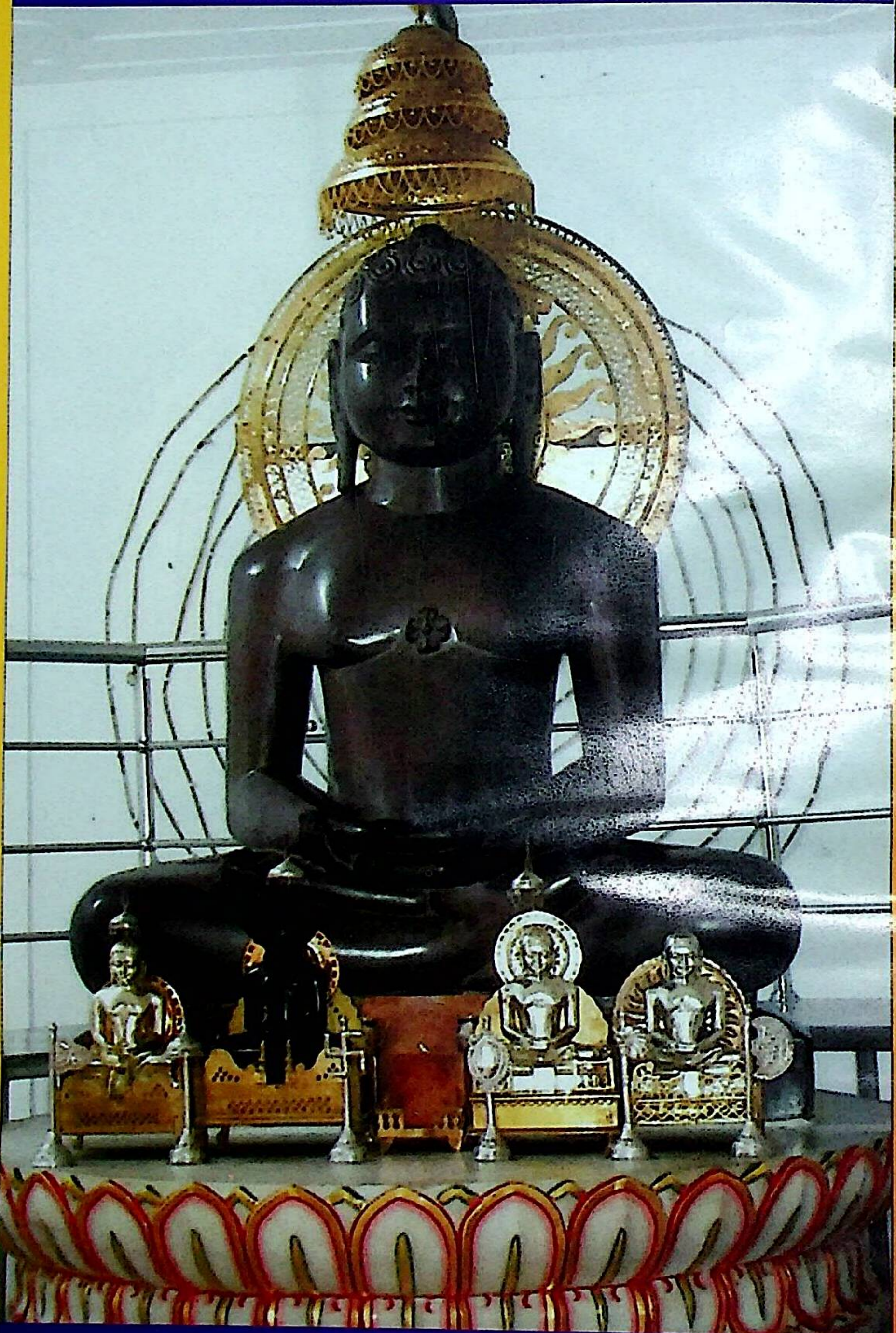

मध्यतल में विराजमान समोशरण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मूलनायक श्री १००८ चिंतामणि पार्श्वनाथ भगवान

ऊपरी तल में विराजमान समोशरण

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृतिकार

पं. लालचंद्र जैन "राकेश"

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

लेखकीय

प्रकाशन : प्रेरणा एवं शुभाशीष

गंजबासौदा एक धार्मिक नगर है। वहाँ व्रतियों एवं विद्वानोंका समागम निरन्तर बना रहता है। इसी क्रम में सन् 2008 में यहाँ ब्र. श्री गोकुलराम जी पधारे। आपश्री पदानुकूल चर्या के निरतिचार पालक तो हैं ही स्वाध्याय रसिक, विद्वान साधु हैं। आप का यहाँ कुछ दिनों प्रवास रहा। प्रवास काल में आप प्रतिदिन मेरे स्थान पर प्रातः-सायं श्री 1008 पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर, स्टेशन मंडी में प्रवचन करने लगे। आपका चिन्तन एवं प्रवचन शैंली अन्य प्रवचन कर्ताओं से विभन्न थी। आप 'जिनवाणी' में संग्रहीत प्राचीन विद्वानों-कवियों की पद्यरचनाओं यथा 'पखवाड़ा' आदि को आधार बनाकर प्रश्नोत्तर शैली में ऐसी तत्व चर्चा करते थे कि जिसके अर्थ करने और समझने में चित्तैकाग्रता की आवश्यकता होती थी। इस प्रकार आप प्रतिदिन नवीन एवं अछूते विषयों पर प्रवचन कर श्रोताओं को नित-नूतन ज्ञान देने लगे। प्रवचनांत में आप श्रोताओं को भजन कहने का निर्देश देते थे। जब कोई श्रोता भजन न कहता तब मेरा क्रम सुनिश्चित था। भजन के स्थान पर मैं स्व-रचित धार्मिक रचनायें सुनाता। ब्रह्मचाारी जी के प्रवास काल तक यह क्रम जारी रहा।

श्री ब्रह्मचारी जी गुणग्राही सुधी-साधु थे। आपको मेरी रचनाएँ रुचिकर लगी। अतः उन्होंने एक दिन भरी सभा में मेरी रचनाओं, शब्द चयन एवं संप्रेषणीयता की प्रशंसा की और कहा कि आप इनका प्रकाशन कराइये। यही नहीं उन्होंने शुभाशीष सहित एक हजार रुपये अपनी ओर से प्रकाशनार्थ देने की भी घोषणा की। मैंने कृतज्ञता पूर्वक उनसे करबद्ध निवेदन किया कि आप व्रती पुरुष हैं, आपका आशीर्वाद ही पर्याप्त है, मैं आपसे धनराशि नहीं ले सकता लेकिन श्री ब्रह्मचारी जी नहीं माने और मेरी प्रवासकालीन अनुपस्थिति में, अपने विहार के समय उक्त धनराशि ब्र. श्री संजय भैया को मेरे निमित्त दे गये, जो मेरे पास सुरक्षित है।

सन् 2008 के बाद पारिवारिक परिस्थिति वश में बासौदा छोड़कर-भोपाल के उप-नगर, अयोध्या नगर में रहने लगा। इस उपनगर में मीनाल आदि अनेक कॉलोनियाँ हैं इनमें लगभग 200 जैन परिवार रहते हैं। यहाँ के डी-सेक्टर में "श्री 1008 चिन्तामणि पार्श्वनाथ दि. जैन मंदिर" है, जो अत्यंत भव्य, तीन मंजिल उतुंग,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशाल एवं रथाकार आकृति में निर्मित है। जिनालय के दर्शन कर ऐसा प्रतीत होता है कि मानो कोई देवों का विमान ही स्वर्ग से उतरकर धरा पर आया हो। यह जिनालय मेरे निवास, "36 अमृत एन्क्लेव" से पैदल दूरी पर स्थित है। अतः मैं इसी जिनालय में धर्माराधन करने लगा जिनालय के सन्निकट ही "विशुद्ध-निलय" संत निवास अपनी छटा बिखेर रहा है।

यहाँ की जैन समाज शिक्षित, सभ्य, सुशील, सहृदय, कर्मठ एवं धार्मिकता से ओतप्रोत है। व्यापारी, अधिकारी, डॉक्टर, इंजीनियर, न्यायाधीश आदि सभी श्रेष्ठ वर्ग की समाज इस जिनालय से जुड़ी है। मैं भी जिनार्चना, प्रवचन, सम-सामयिक कार्यक्रमों में भागीदारी आदि के माध्यम से सपरिवार इस जिनालय एवं समाज से जुड़ गया।

यहाँ रहते हुए मुझे लगभग पाँच वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। सन् 2009 में श्रमणचर्या शिरोमणि, प्रज्ञासरोवर के राजहंस, माँ जिनवाणी के प्रणत और प्रणीत प्रवचनकार, बालयतीश्वर प.पू. आचार्य श्री विशुद्धसागर जी महाराज के मंगल सान्निध्य, प्रतिष्ठाप्रज्ञ श्रीमन् पं. विमल कुमार जी सौंरया के कुशल प्रतिष्ठाचार्यत्व एवं श्री कमल हाथीशाह के सफल संयोकत्व में "श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा एवं सप्त गजरथ महोत्सव" का जो गरिमामय आयोजन हुआ था, उसका मैं प्रत्यक्षदृष्टा-पुण्यार्जक रहा हूँ। उस समय मैंने "भोपाल के जैन मंदिर" नामक एक परिचयात्मक पुस्तक लिखी थी, जो उदारहृदय, धार्मिक दम्पत्ति "श्रीमती सरोज-विजय जैन (अपर महाप्रबंधक, बी.एच.ई.एल., भोपाल)" के न्यायोपात्त अर्थ सौजन्य से प्रकाशित की गयी थी।

सन् 2009 और उसके बाद पारिवारिक अनेक अनिवार्यताओं में व्यस्तता के कारण आदरणीय ब्र. श्रीगोकुलराम जी दिल्ली द्वारा मेरी कविताओं के प्रकाशन हेतु दिये गये आशीर्वाद एवं आर्थिक सहयोग का मुझे स्मरण ही नहीं रहा किन्तु सन् 2013 में बरसाती बादलों की तरह वह प्रसंग मेरे मन और मस्तिष्क में बिजली की तरह कौंध गया जिसे मैंने पर्यूषण पर्व में स्थानीय समाज को इंजी. श्री एम.के. जैन सा. के माध्यम से सम्प्रेषित किया।

समाज ने न केवल मेरी भावना को गंभीरता से सुना अपितु उसे पूर्ण करने की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वीकृति भी प्रदान की। यदि मेरे पास भव्य एवं भद्र परिणामी श्री ब्र. गोकुलराम जी की आशीर्वादात्मक उक्त धनराशि जमा न होती तो संभव है कविताओं के इस संकलन के प्रकाशन का विचार भी मेरे मन में नहीं आता और यदि श्री विजय कुमार जी जैन, अपर महाप्रबंधक, बी.एच.ई.एल. भोपाल एवं श्रीमती डॉ. सविता जैन का भरपूर सहयोग न मिलता तो इसका प्रकाशन भी संभव नहीं हो पाता क्योंकि किसी भी कार्य की सफलता का रहस्य उसके प्रति पूर्ण समर्पण एवं प्रयास की निरन्तरता में निहित होता है। उदारता एवं सहयोग के गुण आपको पैतृक सम्पत्ति के रूप में प्राप्त हुए है। दोनों महानुभावों को हार्दिक साधुवाद। इसके अतिरिक्त यहाँ की जिनवाणीभक्त विदुषी, उदारहृदय, गुणग्राही एवं कृतज्ञ महिला समाज ने अर्थ सौजन्य प्रदानकर पुण्यार्जन किया है तथा श्रीमती सरोज विजय जैन, श्रीमती सविता जैन, श्रीमती संगीता रवीन्द्र जी जैन, श्रीमती सरोज अशोक जी जैन, श्रीमती शारदा जैन, श्रीमती ऊषा हाथीशाह एवं श्रीमती शशिकान्ता जैन आदि ने समन्वय एवं सम्पर्क द्वारा इस कार्य को पूर्णता प्रदान की है। एतदर्थ मैं सम्पूर्ण जैन समाज एवं सम्पूर्ण महिला समाज के प्रति अपना हार्दिक आभार प्रकट करता हूँ।

अ.भा.दि. जैन विचार मंच के यशस्वी अध्यक्ष, वरिष्ठ साहित्यकार, मुनिभक्त, श्रावक शिरोमणि, समाजभूषण, समाजगौरव आदि अनेक महनीय उपाधियों से अलंकृत हमारे सुहृद श्रीमान् रमेशचन्द्र जी मनयां भोपाल ने इस संकलन की भूमिका लिखकर इसे गरिमा प्रदान की है। इसके लिए मैं उनके प्रति हृदय की अतल गहराई से बहुमान सहित आभार प्रकट करता हूँ।

इस कृति को बहुआयामी एवं सर्वोपयोगी बनाने में इंजी. श्री विजय कुमार जी जैन, पूर्व अपर महाप्रबंधक, बी.एच.ई.एल. भोपाल, श्री एम.सी. जैन, इंजी. श्री एम.के. जैन, श्री देवेन्द्र कुमार जी पूर्व जिला न्यायाधीश, श्री विजय कुमार जी ट्रान्सपोर्ट, श्री इंजी. के.सी. गोयल, श्री इंजी. निर्मलचन्द्र जी, श्री रवीन्द्र कुमार जी (एफ-24) आदि का समय-समय पर यथायोग्य विविध सहयोग प्राप्त होता रहा है। मैं आप सभी का हृदय से आभारी हूँ।

साहित्य - साधना में सतत अनुकूलता प्रदान करने के लिए सुपुत्र श्री अनिल कुमार जैन, पुत्र बधु श्रीमती रेखा जैन एवं सुपौत्र श्री अनिरुद्ध और अरिहंत के लिए

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हमारा हार्दिक शुभाशीर्वाद है।

मैं अल्पज्ञ हूँ, इन रचनाओं में अनेक त्रुटियाँ संभव है। इस भूल-चूक के लिए जिनवाणी माता मुझे क्षमा करें एवं सभी सुधी पाठकों से निवेदन है कि भूल को सुधार कर पढ़ें।

एक बार पुनः ब्र. श्री गोकुलराम जी दिल्ली को सादर इच्छामि तथा सकल दि. जैन समाज व सकल महिला समाज, अयोध्या नगर एवं मीनाल को हार्दिक धन्यवाद एवं शुभाशीष।

जैनं जयतु शासनम्

पं. लालचन्द्र जैन "राकेश"
36, भाग्य-रेखा, अमृत एन्क्लेव, अयोध्या नगर
बाईपास रोड, भोपाल (म.प्र.) पिन-462041
मो.: 9893072575, 9425372740
10, जनवरी 2014, भ. शान्तिनाथ ज्ञानकल्याणक।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रस्तावना

रमेशचन्द्र मनयां जैन
राष्ट्रीय अध्यक्ष
अ. भा. दिगम्बर जैन विचार मंच

'धर्म दिवाकर' पं. लालचन्द्र जी जैन राकेश के काव्य संकलन पर मैं अपनी कलम चलाऊँ उससे पूर्व मैं अपने मन में फूट रहे लड्डुओं का स्वाद आपको चखा देना चाहता हूँ।

जैन जगत के प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित विद्वान् श्री "राकेश" जी के साथ बैठने, उनके साथ उनका कार्य करने का उल्लास मेरे मन में इन शब्दों में व्यक्त हुआ है–

शितांशु रश्मि संपर्काद् विसर्पतियथाम्बुधिः।
तथासद्वृत्त संसर्गान्नृणां प्रज्ञा पयोधिः।।

जिस प्रकार चन्द्रमा की किरणों के सम्पर्क से समुद्र बढ़ता है ठीक उसी प्रकार सज्जनों (श्री पं. राकेश जी) की संगति से प्रज्ञा रूप समुद्र वृद्धि को प्राप्त होता है।

पं. लालचन्द्रजी "राकेश" सहृदय, सरल, निर्मल, प्रेमल और निष्कपट व्यक्तित्व के स्वामी हैं। इतने गुणों के स्वामी यदि कवि नहीं होते तो आश्चर्य होता। पं. लालचन्द्र जी 'राकेश' ने अपने जीवन के खट्टे–मीठे अनुभवों का सार एकत्रित करके इसे कविता संग्रह का रूप दिया है।

लगभग 10–12 वर्ष पहले की बात है। गंजबासौदा में सन्तशिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के विद्वान् शिष्यरत्न मुनिश्री समता सागर जी एवं प्रमाण सागर जी के मंगल सान्निध्य में शिक्षण शिविर आयोजित था। स्वाभाविक रूप से पं. लालचन्द्र जी राकेश उस शिविर के कुलपति थे। मुनि द्वय के प्रति अगाध श्रद्धा के कारण मैं भी दर्शन करने वहां गया। मुनिश्री द्वारा मेरे प्रति प्रकट किये गये वात्सल्य से पं. जी का ध्यान मुझ पर गया। पंडित जी की ज्ञान गुण गरिमा और प्रबन्धकीय क्षमता ने सभी के साथ मुझे भी प्रभावित किया और सच कहूं तो उनकी सरलता, सहजता, सहिष्णुता और सौमनस्य ने मुझे उनका मुरीद बना दिया। तब से अब तक पच्चीसों बार विशिष्ट धार्मिक आयोजनों तथा विद्वत् संगोष्ठियों की मुलाकातों में मेरे प्रति उनका स्नेह पर्त–दर–पर्त बढ़ता गया। सेवा निवृत्ति के बाद भोपाल के अयोध्या नगर आने पर उनसे मुलाकातें बढ़ती गई। कई प्रसंग ऐसे भी आये जिनके कारण आत्मीयता बढ़ती गई।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पूरा जीवन शिक्षक के रूप में बिताने के बाद किससे क्या काम लेना है उनकी पारखी नजर जानती है। मेरे लेखकीय जीवन की यह महान् उपलब्धि है कि मुझे इस बहाने उनकी निकटता प्राप्त हुई है।

श्री पं. लालचन्द्र जी 'राकेश' का जन्म मेरे ललितपुर जिले के ग्राम सिलगन में 1 जुलाई 1934 को हुआ। सिलगन की पवित्र भूमि को ही जैन जगत के देश भर में विख्यात विद्वान् श्री पं. फूलचन्द्र जी जैन सिद्धान्त शास्त्री को जन्म देने का गौरव प्राप्त है। मेरे ललितपुर की स्थापना सम्भवतः देव गुरु बृहस्पति के निवास की पवित्र भूमि से हुई है तभी तो वहां देश भर में शिक्षा की अलख जगाने वाले धर्म गुरु, श्री गणेश प्रसाद जी वर्णी, सराकोद्धारक विद्वान् श्री बाबूलाल जी जैन "जमादार", कवि श्री हरिप्रसाद जी "हरि", डॉ. जयकुमार जी "जलज", डॉ. परशुराम जी "विरही" जैसे उद्‌भट विद्वानों, कवियों, और अनेक धीर, वीर, ज्ञानी, दानी महानुभावों ने जन्म लिया।

कहते हैं लक्ष्मी जी की सरस्वती जी से स्वाभाविक अनबन होती है इसलिये सरस्वती के इस पुत्र श्री 'राकेश' पर लक्ष्मी जी की कृपा दृष्टि तो दूर तिर्यक् दृष्टि ही रही। जन्म स्थान में स्कूल और गांठ में धन नहीं था सो बचपन से ही अध्ययन जीविका तथा आजीविका के लिये जीवन की कठिन "अनुभव यात्रा" आरम्भ हुई।

श्री "राकेश" जी ने केवल आजीविका कमाने के लिये शिक्षक धर्म स्वीकार नहीं किया। वे स्वभावतः पुरुषार्थी एवं परोपकारी हैं। लोगों की जड़ता और अज्ञानता दूर करने उन्हें स्वर्ग से धरती पर उतारा गया और सारी कठिनाईयों, अभावों और मुसीबतों को उनके घर का पता दे दिया। सही कहा है सोने को ही तो हर बार कसौटी पर परखा जाता है।

स्वयं उन्हीं की "आत्मवृत्तम्" कविता की यह पंक्तियां–

कोई नहीं रोक पाया है होकर रहा सबेरा।
दिनकर से डर कर भागा है काला सघन अंधेरा।।

और वह पुरुषार्थी पथिक अनवरत अनथक लक्ष्य की ओर बढ़ता गया–

जब से सफर में हूँ मंजिल पै है मेरी निगाह।
मैने रुक कर कभी भी मील का पत्थर नहीं देखा।।

पढ़ने और बढ़ने की ललक खाली नहीं जाती। विश्वविद्यालीन एम.ए. (संस्कृत और हिन्दी) तथा बी.एड. की परीक्षाएं और जैन दर्शन न्याय, साहित्य तथा धार्मिक शिक्षण के अन्तर्गत शास्त्री, साहित्यरत्न एम.जे.पी.एच की परीक्षाएं उत्तीर्ण कीं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मां सरस्वती के वरद् पुत्र श्री राकेश जी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी हैं। वे हिन्दी संस्कृत और जैन दर्शन के निष्णात विद्वान् सफल सभा संचालक, प्रभावी वक्ता, आगम निष्ठ प्रवचनकार और नैसर्गिक कवि हैं। इस सब के बावजूद परिस्थितियां कभी भी उनके अनुकूल होकर नहीं आई और वे हंस कर कहते–

"आ जायें जो भी मुश्किलें आना हों राह में।
कि मंजिल तक पहुंचने का इरादा कर लिया मैने।"

इस प्रकार वे अपनी इच्छित मंजिल पर पहुंचे और ससम्मान पहुंचे। आपको अनेक राष्ट्र स्तरीय पुरस्कार प्राप्त हुये। दि. जैन समाज ललितपुर ने भी "इस आन गांव के सिद्ध और घर के जोगी जोगिया" का अत्यन्त उदारता पूर्वक मान, सम्मान धन और आत्मीयता से अभिनन्दन किया। अपने ही गांव में और अपनों के बीच अपनों द्वारा जो सम्मान मिलता है उसका आनन्द ही कुछ और है। उन्हें विभिन्न धार्मिक सामाजिक संगठनों तथा विद्वत् सम्मेलनों में "धर्म दिवाकार" तथा "सुधांशु" जैसी उल्लेखनीय उपाधियों अलंकरणों से भी अलंकृत करके स्वयं को धन्य माना। लगता है उनकी ओर से किसी शायर ने कहा है–

"हालात ने सुरमे की तरह हर जगह पीसा हमको।
तब कहीं जाके जमाने की निगाहों में चढ़े हैं।।"

जैसा कि मैने पहले निवेदन किया है कि "श्री राकेश जी" नैसर्गिक कवि हैं। भारत के प्रतिनिधि महाकाव्य "रामचरित मानस" के रचयिता महाकवि तुलसीदास जी की भांति विनम्रता से "स्वान्तः सुखाय रघुवीर गाथा" "के ही अनुरूप" काव्य शास्त्र विनोदेन" कह कर अपनी उत्कृष्ट काव्य प्रतिभा को सामान्य मनोविनोद कह कर टालने का प्रयास करते हैं। विभिन्न विषयों पर लगभग 60 प्रकाशित पुस्तकों के रचयिता राकेश जी ने अनेक जैन तथा साहित्यिक पत्र–पत्रिकाओं का सम्पादन किया और अपनी यशस्विनी लेखनी से 500 से अधिक धार्मिक साहित्यिक समसामयिक कविताओं का सृजन किया है। आपको मुनि जीवन पर महाकाव्य लिखने वाले देश के प्रथम कवि का गौरव प्राप्त है।

इस प्रकार पं. राकेश जी ने सरस्वती देवी के निष्ठावान आराधक की भांति स्वर–संगीत और कविता की त्रिवेणी के पुण्य जल से उनकी मंजुल मूर्ति के सौम्य–श्रंगार अर्चना आराधना पूजन प्रक्षाल भजन आरती और प्रसाद वितरण जैसे अष्ट कर्मो के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वहन किया है और अभी भी कर रहे हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कांटों में रहकर भी फूलों की भांति सदा मुस्कुराते रहने वाले श्री पं. लालचन्द्र जी "राकेश" के हँसमुख व्यक्तित्व की तरह राकेश जी का कृतित्व भी दिल को छू ने वाला है और प्रशंसा करने को बाध्य करता है।

कवि श्री लालचन्द्र जी राकेश अपने संग्रह का प्रारम्भ "भक्ति निर्झर" से करते है। एक धर्म निष्ठ आचार निष्ठ विद्वान् और कवि स्वाभाविक रूप से चाहे वह अपनी जीवन यात्रा हो, दिनचर्या हो या साहित्य यात्रा सभी कार्यो का मंगलाचरण अपने इष्ट, पंच परमेष्ठी और बुद्धि प्रदाता शारदा मां की पूजा–अर्चना से ही प्रारम्भ करेंगे। श्री राकेश इसके अपवाद नही हैं। जैसे उत्तम श्रावक अपनी "शक्तितः" स्वर्ण थाल भर कर उत्तमोत्तम अष्टद्रव्य से आराधना करता है। कवि भी अपनी स्तुति में नवरस, छन्द अलंकार भाव भाषा के साथ उनंचास पवन युक्त संगीत साधना से काव्य सृजन करता है। शब्द प्रसूनों से महामंत्र णमोकार मंत्र की आराधना हृदय को शान्त रस की फुहार से प्रफुल्लित कर देती है। अज्ञान अंधकार का हरण करने वाले अन्तः प्रकाशी सुहावने दीपक लेकर मां शारदा से सम्यक् ज्ञान का उपहार लेने के लिये कवि उनके चरणो में नत होकर पूज्य जिनवाणी मां की शिक्षाओं की ओर पाठक का ध्यान आकृष्ट करता है। आपने आराध्य तीर्थकर भगवान आदिनाथ, भगवान शीतलनाथ, भगवान पार्श्वनाथ, भगवान महावीर, और तीन पदवियों के धारी भगवान शान्तिनाथ के साथ जिनवाणी और उसके प्रभावक प्रकाशक आचार्य श्री विद्या सागर जी और श्री अभय सागर जी आदि मुनिराजों की स्तुति भावसमन्वित अत्यन्त प्रांजल परिष्कृत एवं श्रुति मधुर भाषा में वन्दना की है। शान्त रस में निबद्ध "मंगलाचरण" रचना अध्यात्म और साहित्य रसिकों को एक साथ आनन्दित करने में समर्थ है।

प्राचीन काव्याचार्यों की भाँति अपनी "प्रार्थना" में वे भी मानते हैं कि जिव्हा वही है जो प्रभु गुण गान करे, हाथ वही जो दान करे पैर वही जो प्रभु के द्वार तक ले जाएं। वे छोटे शिशुओं की तरह प्रभु से कहते हैं कि–

"नाव आपकी बड़ी है मेरा है लघुभार
हाथ पकड़ बैठार लो करो भवोदधि पार"

सम्भव है उनकी स्वच्छ बाल मन से कही गई मनुहार को प्रभु मान ही लें। कवि ने जैन आगम के प्रसिद्ध संस्कृत स्तोत्रों, अष्टको और स्तुतियों के कई रचित हिन्दी अनुवाद भी अपने सग्रंह में सम्मिलित किये हैं। जो कविता लिखना पढ़ना जानते हैं वे यह भी जानते हैं कि अपनी कविता हो तो कोई भी छन्द कोई भी लय कितनी ही मात्राएं लगाने की स्वतंत्रता होती है लेकिन एक जग प्रसिद्ध स्तुति या स्तोत्र में, जिसकी भाषा भाव अर्थ और अन्तर्निहित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गूढ़ार्थ सब जाने पहचाने होते हैं ऐसे दो छोरों पर बंधी रस्सी पर सन्तुलन बना कर चलना कितना कठिन कार्य है एकदम सर्कस के जलते हुए तार के गोले में से छलांग लगाना किन्तु हमारे लालचन्द्र जी ने एक निष्णात कलाकार की तरह छलांग भी लगा ली और प्रंशसा भी बटोरी।

उन्होंने जहां परम्परागत भक्तिरस में डूब कर अपने इष्ट को काव्य सुमन अर्पित किये हैं वहीं नये नये छन्दों वाली प्रयोगवादी कविताओं से नवीनता का सृजन भी किया है। नये नये उपमान व्यर्थ और अनुपयोगी जीवन के लिये "सैमर सुमन" की उपमा देकर सिद्ध कर दिया है कि "लीक छांडि के चलत हैं सायर, सिंह सपूत" भई वाह !

वे जहां रहते हैं जो देखते हैं, जो अनुभव करते हैं उसे भी अपनी कविता में लाकर अलंकृत कर देते हैं। "अयोध्या नगर जैन मन्दिर" एक ऐसा ही प्रयोग हैं। उनकी कविता के लिये शास्त्रीय मान्यता प्राप्त विषय ही नहीं सेरौन जी स्थित भगवान शान्तिनाथ के दर्शनों में स्वनिर्मित काव्याजंलि के चालीस अर्ध्य समर्पित कर देते हैं।

जहां वे नई उपमाएं नये प्रतिमान गढ़ते हैं वहीं यदि पूर्व स्थापित उपमान मिलता है तो उसे भी धो–पोंछ कर काम में लेने में गुरेज नहीं दिखाते। संकटहरण विनती में वे "मै हूँ जहाज का पंछी" में प्रसिद्ध "जैसे उड़ जहाज का पंछी फिर जहाज पर आये "का भाव संसार की व्यर्थ भटकन के बाद अन्ततः प्रभुशरण में आने की बात को बड़ी सरलता और सुन्दरता से व्यक्त कर देते हैं।

अपनी स्वाध्याय कविता में वे स्वाध्याय और अध्ययन का अन्तर बताते हुए कहते हैं कि जिसमें तत्व ज्ञान प्राप्त नहीं वह मात्र अध्ययन ही है और स्वाध्याय वह हैं, जिसमें ज्ञान, बुद्धि के क्षितिज का विस्तार हो, ज्ञान की प्यास बढ़े और आत्मिक क्षमता का विकास हो। वे आत्मा को सुई और ज्ञान को धागा बताते हुए कहते है कि ज्ञान सहित होने पर आत्मा भटक नहीं सकती।

एक अच्छे आध्यात्मिक गुरु की भांति वे समझाते हैं कि उपवास में यदि विषय कषायों और विभावों का विनाश नहीं होता तो वह लंघन हैं। उपवास केवल पाचन तंत्र को ठीक करने के लिये नहीं आत्मा की विभाव परिणति या कर्म तन्त्र को ठीक करने के लिये आत्म जागरण का मन्त्र है।

संस्कार कविता में वे शिशु कौण्डु को आचार्य कुन्द कुन्द बनाने का रहस्य उनकी महान् माता द्वारा पालने में "शुद्धोऽसि बुद्धोऽसि" की लोरी गा कर उनमें उच्च संस्कार आरोपित करना बताते हुए कहते हैं कि संस्कार शून्य

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0 In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जीवन "जैसे पंच तत्व का पुतला या बिना प्राण के मानव तन" के समान रहता है।

उनका धर्म प्रेमी उदारमन नगर में मुनिसंघ के पधारने को मरुस्थल में वर्षा और पतझड़ में बसन्त कहता है। आचार्य परमेष्ठी के सभी कल्याणकारी गुणों और उनके प्रभावों का कोमलकान्त पदावली में वर्णन करते हैं और आचार्य साधु के आने पर उनका उत्फुल्लित हृदय ऐसे अनुभव करता है जैसे स्वयं तीर्थंकर महावीर पधार गये हों। यह कवि की कल्पना मात्र नहीं उनके उदार संवेदनशील एवं गुणग्राही हृदय की तस्वीर है। हृदय दर्पण स्वच्छ निष्कलुष हो तो आकृति भी स्वच्छ दिखाई देती है। आचार्य वन्दना में उनका कवि पूर्णरूप से जागृत हुआ है। और अपनी पूरी कलात्मकता रस छन्द अंलकार भाव भाषा कविता के सभी उपादान लेकर उपस्थित हुआ है। "पीयूष भरी वाणी सुनकर शिव की गलियां मिल जाती है" <u>हे ज्ञान सूर्य, अध्यात्म सिन्धु हे ब्रह्म तेज के मूर्तिमान, हे निर्विकार निर्लेप संत"</u> जैसे कविता ही मूर्तिमन्त होकर खड़ी हो गई हो।

संत के जीवन को उत्तम पाठशाला बताते हुए वे कहते हैं सन्त ने सत्य को ओढ़ा नहीं जिया है, तत्व को पढ़ा नहीं पिया है, हर क्षण स्वानुभव वाला है। ऐसा कहकर वे जीवन के यथार्थ से परिचित कराते हैं कि "सत्य को जियो" दिखावे से उद्धार नहीं होना है। आचार्य श्री विद्यासागर जी, मुनि श्री अभय सागर जी, वर्णी जी, तारण स्वामी की वन्दना करते हैं। वे मुनि श्री की नगर से विदाई जैसे एक अत्यन्त स्वाभाविक और अनिवार्य क्रम में भी संवेदनशील हो उठते हैं और प्राण आखों की राह बह निकलते हैं। न तो कहते बनता है न सहते। असह्य वेदना सहकर चलते फिरते तीर्थ को विदा करते हैं।

चार प्रकार की कषायों के वे एक नितान्त परिचित सूचना बोर्ड "कुत्तों से सावधान" के माध्यम से एक गूढ़ आध्यात्मिक पाठ पढ़ाते हैं। राग–द्वेष, नामक कुत्तों में एक पालतू एक फालतू है और उन कुत्तो के दो–दो पिल्ले है–राग के माया और लोभ तथा द्वेष के मान और क्रोध बताते हैं और शेष इसी का विस्तार है। "पर्वराज पर्यूषण आओ" में कवि श्री राकेश जी धर्म के दस अंगों के अंग–प्रत्यंग विवरण–वर्णन करके राग–द्वेष और पांच पापो के पंक में लिपटे हम सब को "मुनि मन सम निर्मल नीर" से स्नान करा कर स्वच्छ निष्कपंट निष्कलंक बनाने का आध्यात्मिक प्रयास करते हैं।

अन्य कविताओं में क्रान्तिकारी मुनि श्री तरुण सागर जी के जगप्रसिद्ध "कड़वे प्रवचनों" से प्रेरित कुछ सार्थक कविताएं हैं। मुनि श्री द्वारा आठ–आठ पक्तियों के मुक्तछंद में किये गये उपदेशों को कवि श्री ने

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आठ–आठ पक्तियों में ही काव्यात्मक अनुवाद करके अपने काव्य कौशल का अनुपम "जौहर" दिखलाया है। उनकी बुद्धि, प्रज्ञा और पुरुषार्थ की प्रशंसा की जाना चाहिए। अन्य कविताओं में भी कवि का चिन्तन और औदार्य दर्शनीय हैं।

"वृद्धकाल मंगलमय हो कविता में वे "साठ वर्ष की आयु के पश्चात् स्वयं को Retired नही Re-tyred होना समझते हैं और स्वयं के साथ दूसरों को भी "दुख अवसाद निराशा चिन्ता "छोड़ कर" शुभ कार्यो में व्यस्त "रहने की सलाह दे रहे हैं। जीवन का कितना बड़ा सच वे बातों बातों में कह जाते है। "जब तक रुचि रहती जीवन में" व्यक्ति परास्त नहीं होता" इसे ही जिजीविषा कहते हैं जो व्यक्ति को कभी हारने नहीं देती।

वृद्धकाल की अधिकांश कविताएं कवि ने स्वयं को सम्बोधित करके लिखी हैं और जैसा कि आप जानते है" सारे जहाँ का दर्द "कवि के जिगर में होता है अतः नितान्त स्वयं को सम्बोधित करते हुए भी उनकी झनकार में सभी के दर्द का स्वर होता है।

अपनी एक कविता "उड़ गई चिड़िया चुग गई खेत" में वे इस शरीर की तुलना "नौ नौ छेद" वाले मटके से करके हमें छहढाला की वे पंक्तियां याद दिला देते है "नव द्वार बहें धिन कारी"। ऐसी ही एक स्व–सम्बोधित कविता में वे अध्यात्म का शाश्वत तथ्य सामने रख देते है" कर्ता–भोक्ता स्वयं जीव है" अतः साक्षी भाव से जीने की सलाह देते हैं।

कविता संग्रह के अन्तिम पड़ाव तक भी हम कवि को समझ नहीं पाये। उसको हंसते खिल खिलाते चेहरे के पीछे कितना दर्द छिपा है "उतै की राख सिरान न पाई होन लगे बंटबारे" या"जब तक हंसा तब तक रिश्ते नाते"।

मेरे मन में अपने शायर मित्र 'नूर'लखनवी सा. की ये पक्तियां बिंजली सी कौंध जाती हैं–

देखी होठों की हंसी जख्म न देखे दिल के
तुम भी औरों की तरह खा गये धोखा कैसे ?

ये दर्द, ये जख्म पं. लालचन्द्र जी के स्वयं के हैं या कवि के नाते उन्होंने जमाने के दर्द लिये हैं इसकी परख तो पाठक ही करेंगे मैं तो सिर्फ और सिर्फ प्रशंसा कर सकता हूँ बधाई दे सकता हूँ, इतने सुन्दर सफल और पुरअसर संकलन के लिये जिसमें आप भी मेरा साथ देंगे.

"राकेश जी" अपने जीवन के आठ दशक पूर्ण करने जा रहे हैं। अतः तन का निर्बल होना स्वाभाविक है। वे कविता में संकेत देते हैं कि अब शरीर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंदिर जाने एवं श्री जी के दर्शन – अर्चन करने में आना – कानी करने लगा है। ऐसी स्थिति में वे तन को सम्बोधित करते हुए कहते है कि "चल मेरे घोड़े चल रे चल। मुझुको मंदिर जी ले चल।" जिस देह की हम रात–दिन सेवा करते हैं जब वही धार्मिक कार्यो में बहानेबाजी करने लगे तो फिर उसे डाटना, फटकारना आवश्यक हो जाता हैं। वे कहते हैं "छप्पन भोग न करने दूँगा, दलिया रोज पिलाऊँगा"। और अन्त में "पाँव नहीं चढ़ते पहाड़ को, चढ़ता हैं "संकल्प महान्" कहकर मन को प्रमुखता देते हैं। यही कारण हैं 'राकेश जी' आज भी प्रतिदिन मंदिर जी जाते हैं और जिनेन्द्र देव का पूजन, प्रवचन कर मानव जीवन को सार्थक कर रहे हैं।

इन कविताओ में मूल रूप से संस्कृत निष्ठ हिन्दीं की प्रमुखता है किन्तु उर्दू और अंग्रेजी शब्दों से भी परहेज नहीं हैं जहाँ जो शब्द इच्छित भाव प्रभाव को संप्रेषित कर दे वही ठीक है उसकी जाति धर्म देश उद्भव पता लगाने की कवायद नहीं की गई हैं। इसीलिये संकलन की भाषा सरल और सहज हैं। किसी एक भाषा के बन्धन में बंधी नहीं होने से प्रभावक हैं। दरअसल भाषा का काम केवल भावों को अभिव्यक्त करना हैं। लेखक/कवि जो कहना चाहता हैं वह पाठक तक संप्रेषित हो जाय उसका काम समाप्त हो जाता हैं, जैसे फूल होता हैं सुन्दर सुगन्धित मोहक रंगों वाला लेकिन कितने समय के लिये ?फल आया कि फूल का कर्तव्य समाप्त। अर्थ की गहराई, शब्दों की सुघड़ता और उद्देश्य की व्यापकता लेखन के प्राण हैं। विषय के प्रति एकनिष्ठता उसी के अनुकूल शैली लेखन के प्रभाव को अमरत्व प्रदान करती हैं।

अन्त में यही कहूँगा कि पुस्तक न केवल पठनीय और संग्रहणीय हैं बल्कि एक संवेदनशील शिक्षक के अनुभवों का निचोड़ हैं अतः जब जीवन दूभर लगने लगे, बुद्धि विवेक साथ छोड़ने लगे तो घिरते आ रहे अंधेरे में इस दीपक के प्रकाश में मार्ग भी खोजा जा सकता हैं।

इत्यलम्

कल्पतरू हाउस
18 इतवारा भोपाल (म.प्र.)

रमेशचन्द्र मनयां जैन
मो. 09301174614

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मंगलाचरण-1

(१)

अष्ट कर्म रिपु दलकर जिनने, पायी सिद्धशिला की गोद।
जिनके दर्शन कर लेने से, मन में आता अतिशय मोद।।
क्रोध – लोभ – मद– मत्सर जीते, जीता त्रिभुवन जेता काम।
तीर्थंकर श्री पार्श्वनाथ को, अर्पित मेरे कोटि प्रणाम।।

(२)

जिनमें दोषों का लेश नहीं, जो सकल गुणों के आगर हैं।
करते हैं किसी पर क्रोध नहीं, जो परमशांति के सागर हैं।
जिनके चरणों में आकर के, प्राणी सब पा जाते हैं।
उन तीर्थंकर महावीर को, हम सब शीस झुकाते हैं।।

(३)

पूर्णचन्द्र को शर्माता है, जिनका मनहर चन्द्रवदन ।
पद– रज से लज्जित होता है, घिसा गया मलयज चंदन।
स्याद्वाद वाणी जिनवर की, कर देती मिथ्यातम क्षार।
उन तीर्थंकर चन्द्रप्रभ को , नमन हमारा बारम्बार।।

(४)

कामदेव – चक्री तीर्थंकर त्रय पद शोभित श्री जिनराज।
जिनकी कृपाकोर बन जाती , भवदधितारणतरण जहाज।।
शरणागत रक्षक, प्रतिपालक, सब जिनका गुणगान करें।
शांतिप्रदाता शांतिनाथ जी, हम को शांति प्रदान करें।।

(५)

मोह महातम हरण दिवाकर, भवातापहर चन्द्रसमान।
सप्ततत्त्व– षड्द्रव्य – कालत्रय, नवपदार्थ– निक्षेप – प्रमाण।।
ज्ञान दिया जिनवाणी माता , जग पर किया महत् उपकार।
तीर्थंकर मुखकमल निसृते, नमन हमारा हो स्वीकार।।

(६)

बाह्याभ्यंतर सकल परिग्रह, जिनने छोड़ दिया है।
भव–तन–भोग विरागी मन में, निजको जोड़ लिया है।।
चलते – फिरते तीर्थंकर सा दिव्य दिगम्बर तन है ।
आचार्य श्री विद्यासागर को, बारम्बार नमन है।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(७)

जिनका तपस्तेज तन लखकर, सूरज भी शर्माता है।
जिनका शान्त – सौम्य मुखमंडल धर्मामृत बरसाता है।।
सम्यग्दर्शन – ज्ञान चरित को प्राप्त जहाँ पर आलम्बन।
श्री मुनिराज सुधासागर को, सादर बारम्बार नमन।।

(८)

जिनने तन को, साध किया है, मन को बाँध लिया है।
विषय कषायों का विषतज, संयम पीयूष पियां है।
अमृतघुले वचन हैं जिनके, ज्ञान–ध्यान तप –धारे।
श्री मुनिराज अभयसागर को, सौ– सौ नमन हमारे।।

(९)

कलियुग में अरिहंत नहीं हैं, जिनवाणी माता हैं मौन।
जगज्जनों को भवसागर से, अधुना पार उतारे कौन।।
करुणा सागर श्री गुरुवर ही, देते जग को आलम्वन।
उनके चरणों में त्रियोग से करता हूँ शत– शत वन्दन।।

(१०)

श्री भगवन अरिहंत देव तो, मोक्ष पधारे दे उपदेश।
मुखकमलोद्भव माँ जिनवाणी, देतीं सदा मौन संदेश।।
मन–वच–काया करें प्रेरणा, गुरु बतलाते मोक्षसदन।
देव –शास्त्र– गुरु के चरणों में, सादर बारम्बार नमन।।

जय हो णमोकार, जय हो तुम्हारी-2

(1)

जय हो णमोकार, जय हो तुम्हारी
जय हो महामंत्र, जय हो तुम्हारी।
सकल मंगलों में तुम हो सुमंगल,
तुम हो सकल दुःख –सन्ताप हारी।। जय हो।।1।।

(2)

प्रथमदेव भगवन्त अरिहन्त ध्याऊँ,
युगल जोड़कर मैं तुम्हे शीस नाऊँ।
महामोह – मिथ्यात्व हर्ता तुम्हीं हो,
तुम्हीं ज्ञान केवल प्रभा–पुंज–धारी।। जय हो।।2।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(3)
विरागी विमल शान्त ज्ञानस्वरूपी,
नमूं सिद्ध कतकृत्य– अक्षय – अरूपी।
लोकाग्रवासी शुभंकर– निरामय,
सकलसिद्धिदाता, त्रिविध कर्म जारी।। जय हो।।3।।

(4)
इन्द्रियजयी, पंच आचार पालें,
समिति –गुप्ति आदिक गुणों को सम्हालें।
सुगुण– संघनायक, निपुण, धीरधारी,
आचार्यश्री को नमन है हमारी।।जय हो।।4।।

(5)
षट् द्रव्य, नवतत्त्व, दश धर्मज्ञाता,
स्याद्वादवाणी के उपदेश दाता।।
सुज्ञान– दीपक ले हरते अंधेरा,
उपाध्याय श्री हैं, सर्वोपकारी।।जय हो।।5।।

(6)
न विषयों की आशा, न हिंसा – परिग्रह,
न आरम्भ कुछ भी, नहीं राग–विग्रह।
सदा ज्ञान –तप– ध्यान में लीन रहते,
सकल साधु चरणों, नमोऽस्तु हमारी।। जय हो।।6।।

शारदा - स्तुति-3

हे शारदे माँ ! हे शारदे माँ!
अज्ञानता से मुझे तार दे माँ!!

(१)
तुझे नित्य ध्याऊँ, हृदय में विठाऊँ।
युगल जोड़कर मैं, तुम्हें शीस नाऊँ।।
मिथ्या तमस् को हटादे अचिर ही।
मुझे ज्ञान सम्यक् उपहार दे माँ।। हे शारदे......

(२)
संसार ज्वर को महौषधि हो माता।
जो आता शरण ज्ञान कैवल्य पाता।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संसार अटवी में भटका हूँ कबसे।
अब तो भ्रमण से निरवार दे माँ।। हे शारदे.........

(३)

गंगा से ज्यादा हो शीतल – सुपावन।
अन्तः प्रकाशी हो, दीपक सुहावन।।
होता सफल पूर्ण जीवन उन्हीं का ।
बना कर्ण कुण्डल तुझे धारते माँ।। हे शारदे.........

(४)

अगर तुम न होतीं, न देतीं सहारा।
न संसार सागर से, मिलता किनारा।।
कर दो कृपा मात, चरणों पड़ा हूँ।।
सद्ज्ञान दीपक उजयार दो माँ।।
हे शारदे माँ! हे शारदे माँ ।
अज्ञानता से मुझे तार दे माँ।।

शिक्षा दे रही है हम को माता परम पूज्य जिनवाणी - 4

(१)

प्रतिदिन जिनवर दर्शन करना,
पियो छानकर पानी।
रात्रि का भोजन कभी न करना,
तीनों जैन निशानी ।। शिक्षा दे रही ....

(२)

जल में जीव असंख्यों होते,
कहती माँ जिनवाणी।
जहाँ से पानी छाना तुमने,
वहीं करो बिलछानी।। शिक्षा दे रही ......

(३)

तीन मकार, उदम्बर पाँचों,
इनमें रहते प्राणी।
इनको त्यागो, अगर नहीं तो,
होत मूलगुण हानी ।। शिक्षा दे ....

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४)

ज़ग समुद्र पार करने को,
व्रत जहाज है नामी।
भविजन सम्यक् यात्रा करके,
पाते शिव़ रजधानी ।। शिक्षा दे ....

जिनालय वंदना : दृष्टाष्टक स्तोत्रम् - 5

(हिन्दी पद्यानुवाद)

(१)

देखा आज जिनालय मैंने, भवाताप हरने वाला।
लोकत्रय का अतुलित वैभव, भव्यों को देने वाला।।
दुग्धोज्ज्बल हैं शिखर – कँगूरे, सबके मन को भाते हैं।
उनके ऊपर ध्वजा – पताका के समूह लहराते हैं।।

(२)

देखा आज जिनालय मैंने, तीन लोक ल़क्ष्मी का घर।
परम ऋद्धिधारी मुनिगण से, संतत सेव्यमान सादर।।
यहाँ स्वर्ग से उतर देवगण, भक्तिभाव प्रकटाते हैं।
कल्पवृक्ष की दिव्य – मनोहर, पुष्पाञ्जलि चढ़ाते हैं।।

(३)

देखा आज जिनालय मैंने, हैं ग़वाक्ष मणिजड़ित अनेक।
मोहित होता दर्शक का मन, किरणजाल से शोभित देख।।
भवनवासिनी आदि देवियाँ, करती हैं प्रभु का गुणगान।
लगता मानों पुण्य प्रवाहित, हुआ आज भू–पर अम्लान।।

(४)

देखा आज जिनालय मैंने, गूँज रहे हैं जय – जयकार।
अमर –सिद्ध–गंधर्व –यक्ष, किन्नर करते मिल बारम्बार।।
कर से वीणा वादन करते, करते नमन जिनेश्वर को।
भक्ति –गीत– संगीत समर्पित, सहज सभी परमेश्वर को।।

(५)

देखा आज जिनालय मैंने, सुमन– सुहारों से शोभन।
चंचल – आकुल – मधुप गणों से, धारें अलकें मनमोहन।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मधुर वाद्यलय युक्त समन्वय, भक्ति नृत्य में लीन यहाँ।
सुन्दरियों के वलय, नुपूरों की ध्वनि अति रमणीय यहाँ।।

(६)

देखा आज जिनालय मैंने, शोभित मंगल द्रव्यों से।
स्वर्ण–रत्न–मणियों से निर्मित, कलश–चमर–दर्पण–ध्वज से।।
निर्मल मौक्तिक मालाओं से, बना जिनालय है छविधाम।
मुक्तिमार्ग के संदर्शक को, सादर बारम्बार प्रणाम।।

(७)

देखा आज जिनालय मैंने, परकोटा उत्तुंग महान्।
देवदारु – चन्दन– कपूर – बहुधूप धूम्र से शोभावान।।
धूप धुँआ है मानों नभ में, मेघावलियाँ मँडरातीं।
पवन झकोरों से शिखरों पर, ध्वज पंगतियाँ लहरातीं।।

(८)

देखा आज जिनालय मैंने, ढुरते शुभ्र चमर छविधाम।
श्वेतछत्र छाया निमग्न तनु, यक्षकुमारों का है काम ।।
भामण्डल द्युतियुक्त सुशोभित प्रतिमाओं के दर्शन कर।
खिल जाते हैं भव्यजनों के हर्षित हृदय कमल सत्वर।।

(९)

देखा आज जिनालय मैंने, जिसकी रत्नभूमि रमणीय,
नानाविध पुष्पोपहार से, आकर्षक अतिशय कमनीय।
ऋतु बसंत में तिलकवृक्ष सम, श्री को धारण करें सदा।
सर्वोत्तम मंगल स्वरूप हैं, मुनिगण वंदन करें मुदा।।

(१०)

देखा आज जिनालय मैंने बहु जिनबिम्ब विराजित हैं।
मणि–कांचन चित्रित सिंहासन, आदि विभव से राजित हैं।
अतुलनीय कीर्ति है जिसकी, सबको मंगलकारी है।
वंदनीय मुनिगण के द्वारा, उसको धोक हमारी है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रार्थना : देव दर्शन - 6

(१)
भगवन् ! तुम सा जगत् में, देव न कोई अन्य
तुमको पाकर हो गया, मेरा जीवन धन्य ।।१।।

(२)
चरण युगल पावन हुये, चल आये तुम द्वार।
अब तक भटका व्यर्थ ही, सही दुखों की मार।।२।।

(३)
प्रभो ! नयन पावन हुये, पाकर पारस दर्श ।
हस्त युगल पावन हुये, कर प्रभु चरण स्पर्श।।३।।

(४)
मस्तक मम पावन हुआ, सविनय किया प्रणाम।
रसना पावन हो गयी, कर प्रभु का गुणगान।।४।।

(५)
भगवन्! तारे आपने, पापी– अधम– अजान।
मुझको भी तारो प्रभो! अपना सेवक जान।।५।।

(६)
नाव आपकी बड़ी है, मेरा है लघु भार।
हाथ पकड़ बैठारलो , करो भवोदधि पार।।६।।

(७)
भगवन का मम हृदय हो, सदाकाल विश्राम।
पाप– कषायें – मोह – मद, होवें नष्ट तमाम।।७।।

सन्–2008

प्रार्थना - 7

(1)
हे नाथ! तुमने हमको, बिन माँगे सब दिया है।
भूलेंगे न कभी हम, उपकार जो किया है।

(2)
हे नाथ! फिर भी तुम से कुछ और माँगते हैं।
ऐसी कृपा तुम्हारी आगे भी चाहते हैं।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३)

होवें सदा निरोगी, जीवन सुदीर्घ पावें।
अनुकूलताएँ पाकर, तुमको न भूल जायें।।

(४)

हे नाथ! प्रात उठकर, दर्शन करें तुम्हारे।
दिनभर तुम्हीं को सुमरें शुभभाव हों हमारे।।

(५)

प्रभु! याद कर तुम्हारी रात्रि – शयन को जावें।
भटके न मन कहीं भी, सपने में तुमसे पावें।।

(६)

हो प्रेम हम सभी में मिलकर कदम बढ़ाएँ।
ऐसी सुबुद्धि देना जीवन सफल बनायें।।

प्रार्थना

तेरे घर के सामने मेरा घर बनाऊँगा - 8

(१)

तेरे घर के सामने मेरा घर बनाऊँगा।
और सुबह – शाम तेरे दर्शन को आऊँगा।।

(२)

प्रातकाल उठकर के तुझ को ही ध्याउँगा।
देख तेरी सूरत को हो निहाल जाऊँगा।।

(३)

रत्नजड़ित स्वर्णकलश गंग नीर लाऊँगा।
पाप मैल घोने को तुझको नहलाऊँगा।।

(४)

अष्टद्रव्य थाल सजा पूजन रचाऊँगा।
भव –भव के कठिन कर्म तुझ से कटाऊँगा।।

(५)

स्वर्ण थाल, रत्नजड़ित शुद्ध घृत भराऊँगा।
आरती उतार मोह ध्वान्त को नशाऊँगा।।

(६)

नाचूँगा – गाऊँगा तालियाँ बजाऊँगा।
जैसे भी हो सके, तुझको रिझाऊँगा।।

सन्–2009

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दुःख / संकट हरण स्तुति / चालीसा-9

हे दीनबन्धु भगवन् ! मेरी दशा निहारो।
संकट जो आ पड़ा है, उससे मुझे उबारो।।

(1)

संसार दुख जलधि में, डूबा, दुखी, डरा हूँ।
उद्धार हो किसी विध, इस सोच में पड़ा हूँ।।
जाऊँ कहाँ, करूँ क्या, कुछ भी समझ न आता।
हर पल तुम्हीं को स्वामिन् मन टेर है लगाता।। हे दीनबन्धु...

(2)

क्या–क्या हैं कष्ट मुझको, लम्बी मेरी कहानी।
सब जानते हैं भगवन्! प्रभु आप महाज्ञानी।।
प्रभु! देर न लगाओ, दो हाथ का सहारा।
मिल जाय नाथ मुझको, दुख सिन्धु से किनारा।। हे दीनबन्धु...

(3)

हैं रोम–रोम पुलकित, तुमको पुकारते हैं।
अपलक नयन तृषातुर, पथ को निहारते हैं।।
दिल कह रहा हैं, भगवन्! आकर यहीं बिराजैं।
पाकर तुम्हें, हमारे सब रोग –शोक भाजैं।।हे दीनबन्धु....

(4)

मैं हूँ जहाज पंछी, तुम हो जहाज नायक।
कातर–दुखी जनों के, प्रभु आप ही सहायक।।
तुमने अनेक तारे, अबकी है मेरी बारी।
मुझको भी तार दो प्रभु, तुम नाम दुःखहारी।। हे दीनबन्धु...

(5)

श्री वादिराज मुनि को, था कुष्ट से बचाया।
श्रीपाल की हुई थी, कंचन समान काया।।
सीता के अग्निकुंड़ में, तुमने कमल खिलाये।
द्रोपदि की लाज राखी, संकट सभी मिटाये।। हे दीनबन्धु...

(6)

हे कृपासिन्धु ! देखो, धीरज न टूट जाये।
आशा की डोर बाँधी, असमय न छूट जाये।।
हे नाथ ! आओ, आओ, अपना विरद निभाओ।
संकट की इस घड़ी में, धीरज हमें बंधाओ।। हे दीनबन्धु.....

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(7)

प्रभु ! नाम सुन तुम्हारा, मैं आश ले के आया।
अतिपुण्य के उदय से, दर्शन तुम्हारा, पाया।
शांति हृदय समायी, ज्यों गंग में नहाया।
सब सुख प्रदायिनी है, भगवच्चरण की छाया।। हे दीनबन्धु...

(8)

हे नाथ! आपका हम, उपकार मानते हैं।
हम हैं कृतज्ञ स्वामिन्! आभार मानते हैं।।
भगवन्! चरण तुम्हारे, पतवार हैं हमारे।
पा जायेंगे इन्हीं से, भवसिन्धु के किनारे।।हे दीनबन्धु....

(9)

तुम कल्पवृक्ष भगवन्, चिन्तामणि रतन हो।
तुम ही हो कामधेनु, कल्याण के सदन हो।।
जिसने तुम्हें पुकारा उसके बने सहारा।
फिर नाथ आपने क्यों, मुझ दास को बिसारा।। हे दीनबन्धु...

(10)

प्रभु नाम रूप अमृत, का पान हम करेंगे।
भगवान् के गुणों का, नित गान हम करेंगे।।
प्रभु वीतराग छवि का, उर ध्यान हम धरेंगे।
निश्चित ही ''लाभ'' होगा, सुख–शान्ति को वरेंगे।। हे दीनबन्धु...

13–04–2011

आलोचना - प्रतिक्रमण-10

(1)

दुःख हरण जिनदेव को, मन मंदिर में धार।
करूँ आत्म–आलोचना, करने निज उद्धार।।

(2)

हे नाथ! मैं तुम्हारे चरणों में शिर नमाता।
फिर पाप जो किये हैं, क्रमशः उन्हें सुनाता।।
कारण, मैं चाहता हूँ, सब पाप मेरे क्षय हों।
आलोचना के जल से, धुलकर विनष्ट – लय हों।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(3)

मैं था अबोध बालक, मूरख उलूक जैसा।
मैं जानता नहीं था, होता है पाप कैसा।।
हिंसा–असत्य–चोरी, अब्रह्म औ परिग्रह।
अज्ञान की दशा में, करता रहा सभी यह।। हे नाथ .....।

(4)

बालक से बड़ा होकर, पापों के नाम जाने।
करता रहा मैं फिर भी, "प्रमाद" के बहाने।।
हे नाथ मैं स्वयं को, मन से धिक्कारता हूँ।
कर जोड़ नाथ! तुमसे माफी मैं मॉगता हूँ।। हे नाथ .....।

(5)

क्रोधादि सब कषायें रहती हैं, मुझ पै हावी।
मैं हूँ उन्हीं के वश में मुझको है सब पता भी।।
मैं हूँ दुःखी उन्हीं से, मेरा हुआ पतन है।
हे नाथ! दें सुबुद्धि, बस आपकी शरण है।। हे नाथ .....।

(6)

ईर्ष्या– पराईनिन्दा, मुझको बहुत है भाती।
गिरि–से स्वयं के 'दोषों' पर दृष्टि नहीं जाती।।
मैं दास इन्द्रियों का, मन है न वश में मेरे।
हे नाथ। इनके कारण, रहता विमुख हूँ तेरे।। हे नाथ .....।

(7)

शुभ में मेरी प्रवृत्ति, होती नहीं कदापि।
अशुभ से मेरी निवृत्ति, होने नहीं हैं पाती।।
ऐसे में नाथ मेरा, कैसे उद्धार होगा।
बिन आपकी कृपा के, बेड़ा न पार होगा। हे नाथ .....।

(8)

है जिन्दगी की मेरी, पूरी किताब काली।
अब है न शेष उसमें, कोई भी पृष्ठ खाली।।
है जीर्ण–शीर्ण इतनी, संभव न जिल्द चढ़ना।
अप्रिय–कटुक–घिनौनी, कोई न चाहे पढ़ना।।हे नाथ .....।

(9)

हे नाथ ! मैं पतित हूँ, अति ग्लानि से भरा हूँ।
धिक्कारता स्वयं को, चरणों में आ पड़ा हूँ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सब पाप मेरे क्षय हों, अपराध मेरे लय हों।
आलोचना की आग में, जलकर सभी विलय हों।। हे नाथ ..... ।

(10)

मैं नीच, दुष्ट, पापी, अति ही कुबुद्धि वाला।
मैं राग – द्वेष पीड़ित, मन में कषाय काला।।
हो वशीभूत उनके, मैंने किये जो पाप।
उनके लिए है भगवन् ! अत्यंत पश्चाताप।। हे नाथ ..... ।

(11)

हे नाथ प्रार्थना है, दुःखों का मेरे क्षय हो।
हों कर्म नष्ट मेरे, सब पाप मेरे लय हों।।
हो अन्त में समाधि, उत्तम गति गमन हो।
हो बोधिलाभ मुझको,! प्रभु आपकी शरण हो।। हे नाथ ..... ।

(12)

तीन लोक के नाथ तुम, मैं अनाथ हूँ बाल।
हे भगवन् मुझ "लाल" के करो पाप प्रक्षाल।।

चतुर्विंशति तीर्थंकर स्तवन-11

(1)

नाभिराय – मरुदेवी नन्दन, नगर अयोध्या जन्म लिया।
भव – तन-- भोग अनित्य जान सब त्यागे, आत्मध्यान किया।
घाति – अघातिकर्म विनाशे, सिद्धशिला पाया अधिकार।
आदिनाथ जिनके चरणों में, नमन हमारा बारम्बार।।

(2)

जित शत्रु – विजया के नन्दन, नगर अयोध्या जन्म लिया।
उल्कापात देख जग त्यागा, दीक्षाधर तप विपिन किया।।
घाति–अघाति कर्मनष्ट कर, मुक्ति गये सम्मेद पहार।
अजितनाथ जिनके चरणों में, नमन हमारा बारम्बर।।

(3)

दृढ़रथ पिता, सुषेणा माता, श्रावस्ती जन्में भगवान।
मेघपटलविभ्रम लख प्रभु को, प्राप्त हो गया आत्मज्ञान।।
कर्म विनाशे, केवल पाया, जग उपदेश दिया शिवकार।
संभव जिनके चरण कमल में, नमन हमारा बारम्बार।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(4)

पिता स्वयंवर, मां सिद्धार्था, जन्मे प्रभु साकेत नगर।
नशते मेघमहल को देखा, पकड़ी स्वामी मुक्ति डगर।।
दिया जगत् को आनन्दकारी, धर्मदेशना का उपहार।
अभिनन्दन जिनके चरणों में, नमन हमारा बारम्बार।।

(5)

पिता मेघरथ, माँ सुमंगला, नगर अयोध्या जन्मे नाथ।
जग विरक्त हो, तपश्चरण कर, केवलज्ञान मुकुट धर माथ।
धर्मदेशना के अंजन से जगत् नयन उन्मीलन हार।
सुमतिनाथ जिनके चरणों में, नमन हमारा बारम्बार।।

(6)

श्रीधर पिता सुसीमा माता, लिया कौशाम्बी में अवतार।
छोड़ा वैभव राजपाट सब; है अनित्य जाना संसार।।
घाति–अघाति कर्म नष्टकर, सिद्धशिला पाई सुखकार।
पद्मप्रभ जिनके चरणों में नमन हमारा बारम्बार।।

(7)

पृथ्वीसेना नाम सुमाता, सुप्रतिष्ठ जनक शुभ नाम।
नगर बनारस जन्म लिया प्रभु, हो विरक्त छोड़ा धन–धाम।
तपकर आठों कर्म नशाये, हुये सिद्ध, पहुँचे भव–पार।
नाथ सुपारस के चरणों में, नमन हमारा बारम्बार।।

(8)

दुग्धचन्द्रसम कान्तिमान तन, चन्द्रचरण शोभा पाता।
चन्द्राननप्रभ दर्शमात्र से, भवाताप सब मिट जाता।।
उज्जवल यशश्चाँदनी करती, लोकत्रय आनन्द प्रसार।
चन्द्रप्रभ जिनके चरणों में, नमन हमारा बारम्बार।।

(9)

कामद, काम विनाशक प्रभुवर, दंत कुन्द के पुष्प समान।
मिथ्यामोहतमसहर दिनकर, भव्य कुमुदवन चन्द्र प्रमाण।।
भक्ति शुल्क में पाते भविजन, स्वर्ग – मोक्ष लक्ष्मी का हार।
पुष्पदन्त जिनके चरणों में, नमन हमारा बारम्बार।।

(10)

जन्म –जरा– मृतु रुप दाह से, भव– भव गया सताया हूँ।
उससे छुटकारा पाने मैं, शरण आपकी आया हूँ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाप–ताप–संताप मिटाने, प्रभु के दर्शन मेघमल्हार।
शीतल जिनवर के चरणों में, नमन हमारा बारम्बार।।

(11)

श्रेयनाथ जिनके दर्शन से, सकल जगत् पाता कल्याण।
सकल दोष से रहित जिनेश्वर, अनन्तानन्त गुणों की खान।
दिव्यध्वनि प्रकटाया भगवन्, रत्नत्रयी धर्म का सार।
श्रेयांसनाथ जिनके चरणों में, नमन हमारा बारम्बर।।

(12)

जयावती–वसुपूज्य लाड़ले, चम्पापुर जन्में गुणधाम।
रागद्वेष से रहित सर्वथा, करते हैं शत इन्द्र प्रणाम।।
समवशरण भविजन सम्बोधे, मुक्ति गये मंदार पहार।
वासुपूज्य जिनके चरणों में, नमन हमारा बारम्बार।।

(13)

अष्टकर्ममल धोया जिनने, हुई आत्मा पूर्ण विमल।
जिनकी सदा वन्दना करते, गणधरादिजगवंद्यसकल।।
जिनके निर्मल गुण गायन से, होते भक्त भवोदधि पार।
विमलनाथ जिनके चरणों में, नमन हमारा बारम्बार।।

(14)

मोह–कषाय–काम तृष्णादिक, दोषानंत विजेता हो।
वीतराग–सर्वज्ञ–हितैषी, गुण अनंत, शिवनेता हो।।
सत्यभक्त तुमसे पा जाते, सौख्य–सुधामंगल उपहार।
अनन्तनाथ जिनके चरणों में, नमन हमारा बारम्बार।।

(15)

धर्मरूपतीर्थ प्रतिपादक, 'शंकर' जगशमकारी हो।
धर्म धुरंधर, धर्मप्रदाता, कर्मशत्रु संहारी हो।।
धर्म मित्र ही मुक्ति दिलाता, जन्म–जरा–मृतु कारागार।।
धर्मनाथ जिनके चरणों में, नमन हमारा बारम्बार।।

(16)

सकल स्वदोष शांतिकर भगवन्, पायाआत्मशान्तिसाम्राज्य।
शरणागत को शांतिप्रदाता, अष्टकर्मजेता जिनराज।
लोकोत्तर ऐश्वर्यसहित जिन, करें पाप मम् वज्र प्रहार।
शांतिनाथ जिनके चरणों में, नमन हमारा बारम्बार।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(17)

कुन्थु आदि से पूर्ण जगत् यह, उन पर दया धर्म का मूल।
वह व्यवहार करो ना पर से, जो लगता तुमको प्रतिकूल।।
परम अहिंसा धर्म बताकर, भगवन् किया महत् उपकार।
कुन्थुनाथ जिनके चरणों में, नमन हमारा बारम्बार।

(18)

रत्नत्रयात्मक रूप अस्त्र से किया मोह रिपु का संहार।
सम्यग्ज्ञानरूप तरणी से, हुये नदी तृष्णा के पार।
पाप–कर्म–अरि क्षार–क्षार हों, मिले फलश्रुति वर उपहार।
अर (ह) नाथ जिनके चरणों में नमन हमारा बारम्बार।।

(19)

अष्टकर्मरूप मल्लों के, परमविजेता मल्लिजिनेश।
जिनश्रेष्ठ–जिनसिंह–बालयति, दिया जगत् को हित उपदेश।।
तन–धन–यौवन सब क्षणभंगुर, सकल दृश्य बिजली उनहार।
मल्लिनाथ जिनके चरणों में, नमन हमारा बारम्बार।।

(20)

महाव्रतों के सम्यक्रीत्या, पालनकर्ता श्रीमुनिराज।
ध्यान–हुताशन–कर्म–भस्मकर, पाया सिद्धशिला का राज।।
तद्गुणलब्ध आत्मा भगवन्, पायें सम्यज्ञान प्रसार।
मुनिसुव्रत जिनके चरणों में, नमन हमारा बारम्बार।।

(21)

काम–क्रोध–लोभ–मद–वर्जित, परमशांतिघर भगवन् आप।
धर्मरूप अमृत बरसाकर, मेटा सकल जगत् संताप।।
जिनवर की अघहर स्तुति कर, हम पहुँचें भवदधि के पार।
नमिनाथ जिनके चरणों में, नमन हमारा बारम्बार।।

(22)

शील जलधि, इन्द्रियगज केसरि, कामद, काम जयी जिननाथ।
स्वार्थनियतमन–सुधी–मुनीश्वर, भगवच्चरण नमाते माथ।
ध्यान–अनल–कर्मारि जलाने, तप धारा जाकर गिरनार।
नेमिनाथ जिनके चरणों में, नमन हमारा बारम्बार।।

(23)

भव–भव बैरी दुष्ट कमठ ने, प्रभु पर किये घोर उत्पात।
किन्तु मेरुवत् डिगे न भगवन् ध्यानारूढ़ आत्मयोगात्।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इधर आपने केवल पाया, उधर कमठ ने मानी हार।
पार्श्वनाथ जिनके चरणों में, नमन हमारा बारम्बार।।

(24)

आत्मारूप सम्पति के दाता, मद– मायावर्जित–गुणधाम।
भव्यजीव भवभ्रमण विनाशक, इन्द्र–सुरासुर करें प्रणाम।
सम्यक्दर्शन–ज्ञान–चरित–मत, करता सकल जग्त उपकार।
महावीर जिनके चरणों में, नमन हमारा बारम्बार।।

सन्–2007

श्री 1008 चिन्तामणि पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर अयोध्यानगर में विराजित भगवान आदिनाथ-स्तवन-12

–::दोहा::–

(1)

आदिनाथ भगवान को, मन मंदिर में धार।
दत्तचित स्तुति करूँ, करने निज उद्धार।।1।।

(2)

भोपाल में इक उपनगर, जिसका अयोध्या नाम है।
सेक्टर 'डी' में वहाँ, त्रय मंजिला जिनधाम है।।
भव्य, मनहर है जिनालय, शिखर घण्टा, ध्वज लसैं।
दर्शकर जिनवर–जिनालय, पाप–ताप सबै नशैं।।2।।

(3)

मध्य मंजिल नाभिनन्दन, हैं विराजे वेदिका।
ध्यान में आरूढ़ हैं प्रभु, दृष्टि नासा पर टिका।।
चतुरस्र–सम–संस्थान स्वामी, देह अति सौन्दर्य घर।
वीतरागी छवि, दिगंबर, मोहती मन पूज्यवर ।। 3।।

(4)

वर्ण प्रभु सौवर्ण्य–सम, सब विधि मनोहरता घुली।
दर्श करते चन्द्रिकाधिक, शान्ति–शीतलता मिली।।
अनुपम–अलौकिक–दिव्य छवि, वर्णन न कर सकती गिरा।
व्यर्थ ही अबतक भटकता, मैं जगत्रय में फिरा ।।4।।

(5)

वृषभ लांछन चरण शोभित, आदि जिन ज्ञापित करें।
मैत्री–अहिंसा धर्म ही, जगजीव का संकट हरे।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आप हैं, कृतकृत्य भगवन्, प्राप्तव्य भी सब पा लिया।
इसलिये कर–पद–युगल, विश्राम पद्मासन दिया।। 5।।

(6)

शुण्ड–सम भुजदण्ड लम्बे, बल अनंतानन्त है।
अत्यंत विस्तृत वक्ष पर, शोभता श्रीवत्स है।।
पुष्ट अति स्कन्ध दोनों, धर्म की धुरि धारते।
कंठ में अमृत बसे, ध्वनि दिव्य अंग उचारते।। 6।।

(7)

चिबुक–ओष्ठ–सुकर्ण प्रभु के, उपमेय खुद उपमान हैं।
चम्पक नुकीली नासिका, सौन्दर्य–सुगुण निधान हैं।।
धनुष जैसी बनीं भौहें, नयन निश्चल मीन हैं।
अर्द्धोन्मीलित दृष्टि भगवन्, आत्मदर्शन लीन हैं।। 7।।

(8)

उन्नत, विशाल ललाट आभा, भव्यजन मन मोहती।
कृष्ण कुन्तल से बनी उष्णीश, सिर पर शोभती।।
ऐसे ऋषभ जिनराज को मैं, हृदय में धारण करूँ।
पाप–कल्मष क्षालने को, भक्तियुत् स्तुति करूँ।। 8।।

(9)

युग आदि में प्रभु आपने, प्रजा का पालन किया।
षट्कर्म का उपदेश देकर, जगज्जन जीवन दिया।।
आप ब्रह्मा, आप विष्णु, आप ही शिवरूप हैं।
आप ही हैं बुद्ध, ईश्वर, सर्व मंगल रूप हैं।। 9।।

(10)

आप में अतिशय, अनेकों गुण अनन्तानंत हैं।
भक्त बांछा पूर्ण करते, आप श्रीभगवन्त हैं।।
ज्यों उषा के आगमन से, ध्वान्त होता नष्ट है।
त्यों प्रभु के ध्यान से, मिटता जगत्रय कष्ट है।। 10।।

(11)

हे प्रभो! मैं हूँ ग्रसित, जन्म मृत्यु रोग से।
दंशित हुआ अति तीव्रता से, इन्द्रियों के भोग से।।
इसलिये हे नाथ आया, आप चरणों की शरण।
विघ्न– बाधायें विलय हों, हे प्रभो! तारणतरण ।।11।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(12)

अत्यंत पुण्य प्रसाद से, प्रभु आपके दर्शन मिले।
हर्ष मन में यों हुआ, ज्यों कल्पवृक्ष सहस फले।।
भव–भोग–देह विरक्त मुझ पर, कृपा इतनी कीजिए।
जैसे भी हो भगवान मेरे, दुःख सब हर लीजिए।। 12।।

–::दोहा::–

तीन लोक के नाथ तुम मैं अनाथ हूँ बाल।
भगवन् "विजय–सरोज" के, करो पाप प्रक्षाल।। 13।।

सन्–2013

कुण्डलपुर के आदिनाथ को, कवि करता सादर वंदन-13

(१)

जिनने धर्म धनुष धारण कर, मोहमल्ल संहार किया।
जिनने दिव्य देशना द्वारा, मैत्री का उपहार दिया।।
जिनके चरणों मे रहता है, सकल सिद्धि का अक्षय वास।
जिनके नाम मात्र सुमरन से, हो जाता कर्मों का नाश।।
जिनकी कृपा कोर से कटते, जगज्जनों के भव–बंधन।
कुण्डलपुर के आदिनाथ को, कवि करता सादर वंदन।।

(२)

जिनके पद प्रक्षालन करता, वर्द्धमान सागर का जल।
जिनकी स्तुति में रत रहते, तोता–मैना–पिक अविरल।।
सूरज–चांद अर्चना करते, ताराओं के पुंज चढ़ा।
कुण्डल नग करते प्रणाम हैं, शाखाओं के हाथ बढ़ा।।
प्रकृति नटी के रोम–रोम में, आज हो रहा स्पंदन।
कुण्डलपुर के आदिनाथ को, कवि करता सादर वंदन।।

(३)

तुमने उनकी झोली भरदी, जिसने हाथ पसारे हैं।
छत्रसाल पन्ना नरेश से, प्रभुवर भक्त तुम्हारे हैं।।
भक्तों पर जब भीर पड़ी, तब भगवन हुये सहाई हैं।
औरंगजेब से दुश्मन हारे, भारी मुँहकी खाई है।।
बर्रों का आक्रमण हुआ जब, खूब मचाया था क्रंदन।
कुण्डलपुर के आदिनाथ को कवि करता सादर वंदन।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री 1008 दि. जैन अतिशय क्षेत्र साँची में विराजमान
भगवान शीतलनाथ चालीसा – 14

(1)
ध्यान लगाकर श्री जिनवर को, शुचिमन में पधराता हूँ।
भगवन् के पावन चरणों में, सादर शीश झुकाता हूँ।।
अपलक निरख मनोहर छवि को, करता हूँ प्रभु के गुणगान।
सकल पाप–संताप मिटाओ, मंगलमय शीतल भगवान ।।1।।

(2)
दृढ़रथ पिता, सुनन्दा माता, भद्दिलपुर में जन्म लिया।
भव–तन–भोग–अनित्य जानकर, दीक्षा ले कल्याण किया।।
साँची–उदयगिरि–लोहांगी, तप से हैं पावन स्थान।
सकल पाप–संताप मिटाओ, मंगलमय शीतल भगवान।।2।।

(3)
आरण स्वर्ग पधारे भू–पर, हुई स्वर्णमय धरा तमाम।
जिसने ध्याया, उसने पाया, संकटमोचक प्रभु का नाम।।
स्वामिन् ! तन–मन कर दो कंचन, आत्मलब्धि का दो वरदान।
सकल पाप–संताप मिटाओ, मंगलमय शीतल भगवान।।3।।

(4)
जैसा प्रभु का नाम है शीतल, वैसा ही अतिशयकारी।
जन्म–जरा–मृतु–दैहिक–दैविक, भौतिक रोग–शोक हारी।।
गंगाजल–चंदन–शशि–मोती, हो नहीं सकते उपमान।
सकल पाप–संताप मिटाओ, मंगलमय शीतल भगवान।।4।।

(5)
तप कर कर्म घातिया नाशे, केवल ज्ञान उपाया है।
जग हितकर सम्मेद शिखर से, अन्तमोक्ष पद पाया है।।
कल्पवृक्ष हैं चरण आपके, अनुपम हैं प्रभु के वरदान।
सकल पाप–संताप मिटाओ, मंगलमय शीतल भगवान।।5।।

(6)
पंचकल्याणक–गजरथ उत्सव, साँची में पधराये हैं।
गर्भकल्याणक मध्यनिशा में देव स्वर्ग से आये हैं।।
यह अतिशय देखा जन–जन ने, नहीं चाहिए कोई प्रमाण।
सकल पाप–संताप मिटाओ, मंगलमय शीतल भगवान।।6।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(7)

प्रभु के अतिशय कहें कहाँ तक, शक्ति है, देती साथ नहीं।
देख जहाँ साँची भक्ति है, आन विराजे प्रभु वहीं।।
कम समाज में महामहोत्सव, नभचुम्बी मंदिर निर्माण।
सकल पाप–संताप मिटाओ, मंगलमय शीतल भगवान।।7।।

(8)

ग्रीष्म ऋतु में महामहोत्सव, आग बरसती चारों ओर।
किन्तु रही साँची के अंचल, शीतलता अतिशय के जोर।।
प्रभु के नाम मंत्र के बल से, शांत हुये आँधी–तूफान।
सकल पाप–संताप मिटाओ, मंगलमय शीतल भगवान।।8।।

(9)

उपसर्ग हुआ सौधर्म इन्द्र पर, ऐरावत आरोहण काल।
सब विस्मय से रहे देखते, संकट शमन हुआ तत्काल।।
प्रभु की मूरत पुष्प बन गई, चेहरों पर खेली मुस्कान।
सकल पाप–संताप मिटाओ, मंगलमय शीतल भगवान ।।9।।

(10)

हे भवतारी ! सब सुखकारी, संकटहारी, करुणाधाम।
चरण कमल में नत मस्तक हूँ, शीघ्र सुधारो सारे काम।।
रहो विराजे मन–मन्दिर में, सदाकाल हे कृपा निधान।
सकल पाप–संताप मिटाओ, मंगलमय शीतल भगवान।।10।।

फलश्रुति

(11)

भगवान शीतलनाथ के, दर्शन करें जो चाव से ।
भगवान शीतलनाथ का, अर्चन करें जो भाव से ।।
आरति उतारें नाथ की, स्तवन पढ़ें मन से सदा।
नाशें सकल संताप उनके, प्राप्त हो सुख सम्पदा।।11।।

सन्–2000

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री 1008 दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र सेरौन (ललितपुर) में विराजमान

भगवान शांतिनाथ चालीसा - 15

(1)

भारत के उत्तरप्रदेश में, अतिशय क्षेत्र श्री सेरौन।
सोलहफुट खड्गासन शोभित, शांतिनाथ प्रतिमाजी मौन।।
जिला ललितपुर मुख्यालय से, नाति दूर अमराई है।
देवपत–खेवपत पाणाशाह ने, धर्मध्वजा फहराई है।।

(2)

विश्वसेन पितु, माता एरा, गजपुर जन्मे जगत्राता।
कामदेव–चक्री–तीर्थंकर, हरिण चरण शोभा पाता।।
जातिस्मरण का निमित्त पा, भव–भोगादि तजे प्रभुवर।
किया कठिन तप, केवल पाया मोक्ष गये सम्मेद शिखर।।

(3)

हाथजोड़ श्री शांतिनाथ को, सविनय शीश झुकाता हूँ।
फिर प्रभु को अपने मनमंदिर में सादर पधराता हूँ।।
मन–वच–काय सम्हाल भक्तिवश, करता हूँ जिनवर गुणगान।
सकल पात–संताप मिटाओ, मेरे शांतिनाथ भगवान।।

(4)

मोहमल्ल वश विषय चाह की, दृढ़बेड़ी जकड़ाया हूँ।
राग–द्वेष की हथकड़ियों से, परवश हो पकड़ाया हूँ।।
कालशिकारी दौड़ रहा है, लेकर पीछे तीर कमान।
सकल पाप संताप मिटाओ, मेरे शांतिनाथ भगवान।।

(5)

अनादिकाल से भटक रहा हूँ, पंच परावर्तन भवजाल।
चतुर्गति के दुःख समूह से, मुझे बचालो दीनदयाल।।
ऊब चुका हूँ भव भटकन से, प्रभु इसका कर दो अवसान।
सकल पाप–संताप मिटाओ, मेरे शांतिनाथ भगवान।।

(6)

सबजग छाना, मिला न कोई, मुझे बचाने वाला है।
तीनलोक के नाथ शांति जिन, बस तू ही रखवाला है।।
नहीं जानता किसी देव को, केवल है तुझसे पहचान।
सकल पाप–संताप मिटाओ, मेरे शांतिनाथ भगवान।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(7)
सर्वविदित हैं अतिशय तेरे, वर्तन निकलें वापी से।
भाव सहित जो तुमको ध्याता, पाप निकलते पापी से।।
रोग–शोक–दुख–दर्द–गरीबी, से दुखिया पाता है त्राण।
सकल पाप–संताप मिटाओ, मेरे शांतिनाथ भगवान।।

(8)
जो आया तेरे दरवाजे, झोली रही न खाली है।
भक्तों की भगवान ने हरदम, सकल आपदा टाली है।।
अनायास ही पा जाते हैं, स्वर्ग संपदा का वरदान।
सकल पाप–संताप मिटाओ, मेरे शांतिनाथ भगवान।।

(9)
जिनके पास नहीं थे दाने, खाने को रहते मोहताज।
उनने पाया तव प्रसाद से, उत्तम धन कुबेर का राज।।
संभव हुआ उन्हीं के द्वारा, सात भौयरों का निर्माण।
सकल पाप–संताप मिटाओ, मेरे शांतिनाथ भगवान।।

(10)
हे भगवन् ! मैं नहीं चाहता, स्वर्गों के सुख का साम्राज्य।
धन–समाज–गज–राज–वाजि से, नही है मुझको कोई काज।।
भक्ति तुम्हारी भव–भव पाऊं अंत समय पाऊ निर्वाण।
सकल पाप–संताप मिटाओ, मेरे शांतिनाथ भगवान।।

(11)
दोषों का प्रक्षय कर तुमने, पायी आत्मिक अक्षय शांति।
शरणागत की रक्षा करके, जगत भ्रमण से दी विश्रांति।।
मुझको भी भव–भय क्लेशों से शाश्वत् मुक्ति करो प्रदान।
सकल पाप–संताप मिटाओ मेरे शांतिनाथ भगवान।।

सन्–1992

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री 1008 भगवान् पार्श्वनाथ स्तवन-16

(01)

अश्वसेन – वामा के नन्दन, तीर्थंकर कल्याण सदन।
उग्रवंश–नभ–विमल–चन्द्रमा, जेता त्रिभुवनजयी मदन।।
गणधरादि मुनिराज आपका, सुमरन करते आठों याम।
विश्ववंद्य पारस प्रभु तुमको, सविनय बारम्बार प्रणाम।।

(02)

अनन्त चतुष्टय लक्ष्मी मंडित, जगत् पूज्य देवों के देव।
वीतराग छबि निरख आपकी, मन विराग भरता स्वयमेव।।
शुद्ध स्वरूप आपका स्वामिन्, चित्त पटल पर लिखूँ ललाम।
विश्ववंद्य पारस प्रभु तुमको, सविनय बारम्बार प्रणाम।।

(03)

विघ्न हरन मंगल सुखकारी, सूरत प्यारी – प्यारी है।
अनन्तानन्त गुणों की भीतर, महक रही फुलवारी है।।
कल्पवृक्ष चिन्तामणि भगवन्, चरण आपके मंगलधाम।
विश्ववंद्य पारस प्रभु तुमको, सविनय बारम्बार प्रणाम।।

(04)

रूप आपका अद्भुत् सुन्दर, जैसे श्यामल मेघ घटा।
उसको अतिशय शोभित करती, अक्षय केवल ज्ञान छटा।।
धर्मसभा की महिमा न्यारी, तरु अशोक आभा अभिराम।
विश्ववंद्य पारस प्रभु तुमको, सविनय बारम्बार प्रणाम।।

(05)

हे भगवन् तुम समताधारी, क्षमासिन्धु करुणा अवतार।
भवों–भवों तक डिगा न पाये, दुष्ट कमठ के अत्याचार ।।
नाग – नागिनी जरत उबारे, देकर तुमने मंत्र महान्।
विश्ववंद्य पारस प्रभु तुमको, सविनय बारम्बार प्रणाम।।

(06)

ज्यों मयूर के आते वन में, ढीले पड़ते विषम व्याल।
वैसे ध्यान आपका करते, कट जाते कर्मों के जाल।।
दत्त चित्त करते अवगाहन, गुणपयोधि जो प्रातः–शाम।
विश्ववंद्य पारस प्रभु तुमको, सविनय बारम्बार प्रणाम।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(07)

प्रभो ! आपका अनल स्तवन, करता भव अटवी का नाश।
पूज्यश्री का सुमरन करते, सकल सिद्धियाँ आतीं पास।।
भव – भव स्वामी रहें आप ही , सेवक मन में हो विश्राम।
विश्ववंद्य पारस प्रभु तुमको, सविनय बारम्बार प्रणाम।।

(08)

वीतराग सर्वज्ञ हितंकर, सुर – शतेन्द्र संसेव्य प्रधान।
सकल पाप संताप मेटती, प्रभु पूजा करती कल्याण।।
पुण्य प्रदायक सब सुख दायक, चरण कमल वन्दों अविराम।
विश्ववंद्य पारस प्रभु तुमको, सविनय बारम्बार प्रणाम।।

(09)

क्रोध–लोभ–मोह–मद–मत्सर, किए आप आत्यंतिक क्षय।
घातिचतुष्क दुष्ट कर्मारि, सकल दोषहन किए विलय।।
मैं भी रत्नत्रय धारण कर, पाऊँ अविचल पद निर्वाण।
विश्ववंद्य पारस प्रभु तुमको, सविनय बारम्बार प्रणाम।।

(10)

राग – द्वेष से रहित सर्वथा, वीतरागता परम स्थान।
तदपि भक्त तुमसे पा जाते, बिन मॉगे उत्तम वरदान।।
शक्ति अचिन्त्य आपकी स्वामिन्, हरती भवाताप दुखधाम।
विश्ववंद्य पारस प्रभु तुमको, सविनय बारम्बार प्रणाम।।

(11)

दुखी जनों के नाथ आपही, एक मात्र हैं शरण स्थान।
भक्ति–प्रणत मुझ शरणागत पर, कृपा कीजिए कृपा निधान।।
दुख विनाश कर सुखी कीजिए, शीघ्र दीजिए शिवपुर धाम।
विश्ववंद्य पारस प्रभु तुमको, सविनय बारम्बार प्रणाम।।

सन्–2000

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महाकवि श्री भागचन्द्र जी ''भागेन्दु'' विरचित- श्री महावीराष्टक स्तोत्रम् का हिन्दी पद्यानुवाद-17

(१)

जिनके केवल ज्ञान मुकुर में, व्यय–ध्रौव्य–उत्पाद सहित।
एक साथ प्रतिभासित होते, सकल चराचर अंतरहित।।
रवि–सम किया प्रकाशित जिनने, मोक्षमहापथ जग सुखकार।
वे स्वामी महावीर हमारे करें नयन–पथ सदा विहार।।

(२)

जिनके नयन कमल दोनों ही, रहित लालिमा, निश्चल हैं।
अंतरंग भी क्षमाभाव को, करें जनों को प्रकटित हैं।।
जिनकी मूर्ति प्रशान्तमयी है, है अतिशयी विमल आकार।
वे स्वामी महावीर हमारे, करें नयन–पथ सदा विहार।।

(३)

जगमगात मणि–मुकुट–इन्द्रगण, सविनय शीस झुकाते हैं।
उनसे भगवच्चरण कमल द्वय, अतिशय शोभा पाते हैं।।
जिनका सुमरन भवाताप–हर, प्राणि जगत ज्यों जल बौछार।
वे स्वामी महावीर हमारे, करें नयन–पथ सदा विहार।।

(४)

जिनकी एक मुदित–मन–मेंढक, भावसहित पूजा करने।
चला, मरा, स्वर्ग में पहुँचा, हुआ गुणी–सुखी क्षण में।।
क्या अचरज सद्भक्त अगर, पा जाते हैं शिव–सुख–सार।
वे स्वामी महावीर हमारे, करें नयन–पथ सदा विहार।।

(५)

कनक वर्ण आभा के धारी, तदपि अमूर्तिक ज्ञाननिवह।
नैक स्वभावी मात्र एक हैं, जन्म रहित सिद्धार्थ तनय।।
श्रीमान् होकर भी जो हैं वीतरांग, गति अद्भुत धार।
वे स्वामी महावीर हमारे, करें नयन–पथ सदा विहार।।

(६)

विविध नयों की कल्लोलों से, पावन जिन वच गंगनदी।
बृहद् ज्ञान–जल की धारा से, जगज्जनों को नहलाती।।
इदानीम् अपि बुध–हंसों से, सेवित जो अतिशय मनहार।
वे स्वामी महावीर हमारे, करें नयन–पथ सदा निहार।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(७)

दुर्निवार वेग है जिसका, तीन लोक हारा जिससे।
कामसुमट को जिनने जीता, कुमारकाल ही निजबल से।।
ज्ञान प्रकाशी–नित्यानन्दी, पाया मोक्षपुरी अधिकार।
वे स्वामी महावीर हमारे, करें नयन–पथ सदा विहार।।

(८)

महामोह–रोग–प्रशमन को, जो आकस्मिक, वैद्यप्रवर।
स्वार्थ रहित भ्राता हैं जगके, महिमाशाली, मंगलकर।।
भव–भयभीत सज्जनों के जो, हैं शरण्य, सुगुण भंडार।
वे स्वामी महावीर हमारे, करें नयन–पथ सदा विहार।।

फलश्रुति

भक्ति सहित "भागेन्दु" रचित यह, महावीर अष्टक स्तोत्र।
जो भी पढ़ता ,या सुनता है, पाता परम्परा से मोक्ष।।

प्रशस्ति

स्वाध्यायी–जिज्ञासु जनोंहित, पाठ रचाया बारम्बार।
फल स्वरूप "राकेश" को मिला, अनुवादन उत्तम उपहार।।
27–04–2010

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महाकवि "श्रीभागेन्दु" विरचित

श्री महावीराष्टक स्तोत्रम् का भावानुवाद-18

(१)

हे महावीर स्वामी!
आपके केवल ज्ञान में
दर्पण के समान
उत्पाद–व्यय–ध्रौव्य सहित
अनन्त चेतन–अचेतन पदार्थ
एक साथ प्रतिभासित होते हैं।
आप संसार को
सूर्य की तरह
कल्याण का मार्ग बतलाने वाले हैं
आप सदा
मेरे नयनों में निवास करें।

(२)

हे भगवन् !
लालिमा रहित, निश्चल –
आपके नयन–युगल
आपकी अंतरंग की भी
क्षमा को प्रकट करते हैं।
आपके शरीर की आकृति
प्रकट रूप में
अत्यन्त शान्त और स्वच्छ है।
आप सदा
मेरे नयनों में निवास करें।

(३)

हे प्रभो !
आपके चरण युगल
इन्द्रों की मुकुटमणि आभा से
सुशोभित हैं।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हे भगवन्!
आपके चरणों का स्मरण मात्र
संसार के प्राणियों का भवाताप
जल की तरह
शान्त कर देता है।
आप सदा
मेरे नयनों में निवास करें।

(४)

हे भगवन् !
आपकी पूजा के भाव से
प्रसन्न मन मेंढक
क्षण मात्र में
गुणवान, सुखी देव हुआ
तो फिर यदि सद्भक्त
शिवसुख को प्राप्त कर लें
तो इसमें आश्चर्य क्या?
आप सदा
मेरे नयनों में निवास करें।

(५)

हे नाथ !
आप कंचन वर्ण होकर भी
अमूर्तिक–ज्ञान के पुञ्ज हैं।
अनेक स्वभावी होकर भी
एक हैं।
सिद्धार्थ के पुत्र होकर भी
अजन्मा हैं।
श्रीमान् होकर भी
वीतरागी हैं।
अद्भुत अवस्था के धारक –
आप सदा
मेरे नयनों में निवास करें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(६)

हे वीर प्रभो !
आपकी वचन–गंगा
विविध नय–तरंगों से
पवित्र/निर्मल है।
वह, बृहद ज्ञान–जल से
जगज्जनों को
स्नान कराती है।
उसमें अभी भी
विद्वत् हंस क्रीड़ा करते हैं।
आप सदा
मेरे नयनों में निवास करें।

(७)

हे जिनेन्द्र!
आपने आत्मबल से
दुर्निवार, त्रिभुवन जयी
काम सुभटको
कुमार अवस्था में ही
जीत लिया है।
आपके ध्यान से
मुझे भी
मोक्ष की प्राप्ति हो।
हे भगवन् !
आप सदा
मेरे नयनों में निवास करें।

(८)

हे भगवन् !
आप महान् मोह रूपी रोग को
शान्त करने के लिए
प्रवर एवं आकस्मिक वैद्य हैं।
निरपेक्षबन्धु हैं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रसिद्ध महिमाशाली हैं
महा मंगल कारी हैं
भव–भय–दुखहारी हैं
सज्जनों के शरण्य हैं
श्रेष्ठ गुणों के पुंज हैं
आप सदा
मेरे नयनों में निवास करें।

फलश्रुति:

इस महावीराष्टक स्तोत्र को
भक्तिपूर्वक
"भागेन्दु" ने किया है।
इसको जिसने पढ़ा
या कर्णाञ्जलि से पिया है।
उसने निश्चय ही
मोक्षसुख को
लिया है।

24–04–2010

जब महावीर भू पर उतरने लगे-19

मातम मनाने लगा स्वर्ग था,
धरा पर बधाये थे बजने लगे।
जब महावीर भू पर उतरने लगे।।

(1)

जब महावीर का जी (व) चला स्वर्ग से,
तब लगा कोसने स्वर्ग दुर्भाग्यको।
माता त्रिशलाके स्वप्नों का सुनकर सुफल,
भू ने सराहा निज सौभाग्यको।।
मनुष – पशु, खगोंकी कहें क्या खुशी,
लता, वृक्ष भी खिलके हंसने लगे।
मातम .... उतरने लगे ।।1।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(2)

चलने लगा गन्धवाही पवन,
मधुप गीत खुशियों के गाने लगे।
सूरज के स्वर्णिम सुखद कर सहस,
कलियों के आंसू सुखाने लगे।।
लता–वृक्ष पुष्पित फलित हो उठे,
नगर द्वार तोरण थे सजने लगे।
मातम .... उतरने लगे ।।२।।

(3)

कलियों ने आपस में की गुफ्त गू
अब दुक्ख दुनियां का नश जायगा।
हिंसा पिशाचिनका नामों–निशां,
सुनिश्चित ही भूतलसे मिट जायगा।।
सुमंगल जलद तब इकट्ठे हुए,
हामी भरने गगन में गरजने लगे।
मातम .... उतरने लगे ।।३।।

(4)

वृक्षों के ऊपर थे बैठे विहग,
कहने लगे अपनी अनुभूति यों।
'अमृत घुला लग रहा सब जगत'
बोलो ये कैसे हुआ और क्यों?
आ रहे हैं हमारे सही रहनुमा,
सभी एक स्वर में ये कहने लगे।
मातम .... उतरने लगे ।।४।।

(5)

वे चलेंगे जहां, जग चलेगा वहीं,
वे रुकेंगे जहां, जग रुकेगा वहीं।
उनकी थकेगी भले देह नश्वर,
पर उनके सन्देशे थकेंगे नहीं।।
उनकी चरण रज लगाने स्वयं,
सरवर में सरसिज निकलने लगे।
मातम .... उतरने लगे ।।५।।

सन्–1975

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय महावीर - 20

(1)

वह कौन कि जिसने हिंसा को, दे दिया धर्म से निर्वासन।
किसने दिया अहिंसा देवी को, ऊंचा पावन आसन।।
सुन पशुओं की चीत्कार, बन गया कौन उनका रक्षक।
कौन विलखती मानवता का, हुआ प्रमाणित संरक्षक।।
किसने सशस्त्र हिंसक जन को, होकर निशस्त्र भी जीत लिया।
किसने औरों को बांट सुधा, खुद ने हालाहल जहर पिया।।
किसने सुधर्म की तरणी से, जग को पहुँचाया जगत्तीर।
हैं वर्धमान, अतिवीर, वीर, है सन्मति जय–जय महावीर।।

(2)

जो कुण्डग्राम में था जन्मा, पर था त्रैलोक्य हुआ हर्षित।
होकर त्रिशला का नंदन भी, जिस पर हर माता थी गर्वित।।
होकर सिद्धार्थ दुलारा जो, हर उर–पुर का वासी था।
प्रासादों में रहकर भी, जो सदा रहा संन्यासी था।।
जो था बचपन में ज्ञान वृद्ध, यौवन में विषयों से विरक्त।
कोई भी राजकुमारी तो, कर सकी न जिसका मनःसक्त।।
जो आया था, इस भूतल पर, हर ने दुखियों की दुखद पीर।
हैं वर्धमान, अति वीर, वीर, है सन्मति जय जय महावीर।।

(3)

थी जिसकी काली केश राशि, ज्यों सावन के घन छाये हों।
भौहों में था वह बांकापन, मानों धनुबाण सजाये हों।।
दैदीप्यमान, उन्नत ललाट, था नेत्रों में कारुण्य भरा।
जिसके अरुण चरण पद्मों से, परम धन्य हो गई धरा।।
जिसके मुख के तेज पुञ्ज से, हत–प्रभ हुआ दिवाकर था।
जिसकी अमृतमय वाणी से, लज्जित हुआ सुधाकर था।।
पावनता नित्य सुतप करती, आबैठी जिसके चरण तीर।
हैं वर्धमान, अतिवीर, वीर, हैं सन्मति जय जय महावीर

(4)

भर यौवन में राजपाट तज, किसने कानन घर माना।
द्वादश तप, द्वादश वर्षो तक, तप कर आतम को जाना।।
पाकर केवल ज्ञान जगत को, हितकारी उपदेश दिया।
निष्कारण बंधुत्व था जिसमें, राग द्वेष का लेश न था।।
कहा कि जो व्यवहार आपको, लगता आतम के प्रतिकूल।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उसे अन्य के संग बंधुवर, अपनाने की तुम करो न भूल।।
साम्यभाव नित लाओ मन में, चाहे सुख हो अथवा पीर।
हैं वर्धमान, अतिवीर, वीर, है सन्मति जय जय महावीर।।

(५)

घृणा पाप से सुकरणीय है, पापी का करना उद्धार।
तिल तिल पंथ गढ़ो जीवन का, कभी न जाना हिम्मतहार।।
वैर विरोध, क्रोध मद मत्सर, ये हैं जीवन पथ के शूल।
इन्हें त्याग कर, प्रेम अहिंसा के, वर्षाओ मंगल फूल।।
सम्यग् दर्शन, ज्ञान, चरित, ये जीवन की त्रिवेणी हैं।
भव सागर के सेतु यही हैं, मोक्ष महल की श्रेणी है।।
जब असह्य सुई चुभन तुम्हें, तो क्यों दो ओरों को शमशीर।

हैं वर्धमान अतिवीर, वीर, है सन्मति जय जय महावीर।

सन्–1975

महावीर का जीवन जग के जीवों को वरदान बन गया-21

(१)

जब हिंसा पशुता का होता, ताण्डव नर्तन, अर्चन, वंदन।
उसके मस्तक पर नित लगता, नूतन रोली, अक्षत, चंदन।।
मंदिर–वेदी की हर सीढ़ी; शोणित से रंजित होती थी।
नर तो क्या हर पशु–पक्षी की आँख, विवश झर–झर रोती थी।।
यज्ञों की जलती ज्वाला में, पशुओं की होती थी स्वाहा।
हर आकुल मन से ध्वनि उठती, त्राहि त्राहि मां हा हा।।
अन्याय, अधर्म, पाखंड, दंभ जब जीवन का सम्मान बन गया।
तब महावीर का जीवन जग के जीवों को वरदान बन गया।।

(२)

ग्रीष्म तपन में ज्यों प्यासे को, जल पीने की हो अभिलाषा।
अथवा जैसे दीन–भिखारी, रखे हृदय में धन की आशा।।
नर जैसे तट चाह रहा हो, जिसकी नाव फँसी मझधारा।
ज्यों आकुल हो तोड़ फेंकने, बन्दी युगों युगों की कारा।।
ज्यों अकाल पड़ने पर दुनिया, ललचाती है पानी को।
उसी भाँति उत्सुक था भूतल, महावीर की अगवानी को।।
ज्यों चातक को स्वाति बूंद का पाना जीवन दान बन गया।
त्यों महावीर का जीवन, जग के जीवों को वरदान बन गया।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३)

जब प्राची की शून्य गोदने, नव दिनकर से शोभा पाई।
तब खगकुल ने कलरव के मिस, छेड़ी दिव्य मधुर शहनाई।।
मंगल तिलक किया ऊषा ने, संध्या लगी आरती करने।
निर्भय होकर खग–मृग सब ही, लगे नित्य स्वच्छंद विचरने।।
सघन मेघ ने नभ में आकर, ताना परम अलौकिक छत्र।
सहज बैर तज गौ–सिंहादिक, जल पीने होते एकत्र।।
चैत्र शुक्ल तेरस का शुभ दिन, सबको पर्व महान बन गया।
महावीर का जीवन जग की जीवों को वरदान बन गया।।

(४)

मातात्रिसला धन्य हो गई, सिद्धार्थ पिता कृतकृत्य हो गये।
हिंसक, पाप–अधर्म त्याग कर, प्रभु के चेरे भृत्य हो गये।।
लगा कि जैसे एक बार फिर, पतझड़ में आया बसन्त हो।
या कि अमावस की रजनी में, पूर्ण चन्द्रमा शोभवन्त हो।।
तोड़ रही दम मानवता को, मिला वैद्य संजीवन दाता।
या कि डूबते धर्म पोत को, मिला सुदक्ष प्रतीक्षित त्राता।।
पशुबध का स्थान, अहिंसा का पावन उद्यान बन गया।
महावीर का जीवन, जग के जीवों को वरदान बन गया।।

(५)

नाम कर्म ने वीर प्रभु का, सबसे सुन्दर रूप बनाया।
तत्पश्चात् न फिर उन जैसा, मोहनरूप किसी ने पाया।।
परमोन्नत विस्तृत ललाट पर, अनुपम दिव्य तेज का भासन।
चितवन में वैराग्य–दया का, मानों मूर्तिमान प्रतिभासन।।
मुखमंडल पर अमित सौम्यता, अतुल शांति का अद्भुत दर्शन।
अंग–अंग से अतिमनोज्ञता, सत्य–शिवं का प्रतिपल वर्षण।।
उनका रूप अलोकिक खुद ही उपमेयरु उपमान बन गया।
महावीर का जीवन जग के जीवों को वरदान वन गया।।

(६)

सतखंडे प्रासाद प्रभु को, अधिक समय तक रोक न पाये।
जैसे निर्झर के प्रवाह को, गिरिवर–गहवर रोक न पाये।।
मां का भीगा आँचल उनके मनको तनिक न दहला पाया।
यौवन का श्रृंगार न उनके मन को किंचित् बहला पाया।।
कोई भी तो राजकुमारी, उन्हें नहीं आकर्षित कर पायी।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तब लौकांतिक देवों ने आ, भाग्य सराहा स्तुति गाई।।
प्रभु का वन प्रस्थान, त्याग का इक आदर्श महान बन गया।
महावीर का जीवन जग के जीवों को वरदान बन गया।।

(७)

सघन व्रिपिन की गहन गुफा को, राजभवन से सुन्दर माना।
केहरि–करि के भीषण रव को, वीणा का मनहर स्वर जाना।।
जेष्ठमास की तप्त शिलायें, सिंहासन सी उन्हें सुहाईं।
स्वागत हेतु बजे वाद्यों से सावन की घन गर्जन भाई।।
बधिक और वंदक दोनों ही साम्य भाव से उनने जीते।
उन ढिंग आ मृग खाज खुजाते, सिंह बैठते आंखें मींचे।।
पाकर केवल ज्ञान अंत में, आतम ही भगवान बन गया।
महावीर का जीवन जग के जीवों को वरदान बन गया।।

(८)

महावीर ने कहा – "जियो खुद, और अन्य को भी जीने दो।"
जीवन –सुधा पियो तुम प्रियवर, और अन्य को भी पीने दो।।
धर्म वही जो सब जीवों को भवसागर से पार लगाये।
नीच–ऊँच का भेद मिटाकर, समता से जीना सिखलाये।।
सत्य, अचौर्य, ब्रह्म, अपरिग्रह यथाशक्ति लाओ जीवन में।
कलह, द्वेष, अभिमान, शत्रुता,, कभी न लाओ अपने मन में।।
प्रभु का दिन निर्वाण, ज्योति का पावनतम त्योहार बन गया।
महावीर का जीवन जग के जीवों का वरदान बन गया।।

सन्–1975

आज के संत्रासमय संसार में महावीर का सन्देश ही ऊषा किरण है – 22

(१)

आज का मानव पिपासाकुल, मगर पानी नहीं वह खून पीना चाहता है।
ओढ़ कर इंसानियत की खाल, जिन्दगी शैतान की उन्मुक्त जीना चाहता है।।
बो रहा है फूल हर मग में, चाहता है फूल हो "मेरे चमन में।
कर रहा नर पाप का संचय, किन्तु रखता पुण्य–फल की चाह मन में।।
व्यस्त सुख की खोज में नर, पर पा रहा सर्वत्र वह तम ही सघन है।
आज के संत्रासमय संसार में महावीर का सन्देश ही ऊषा किरण है।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२)

आज नर की जिन्दगी क्या ?, इन्द्रियों की दासता की है कहानी।
कनक वर्णी कामिनी की आग में, फूंक दी बन कर शलभ स्वर्णिम जवानी।।
और कंचन चाह मन में, द्रोपदी के चीर जैसी बढ़ रही दिन–रात दूनी।
कादम्बरी बिन जिन्दगानी, सेमर सुमन ज्यों लग रही है व्यर्थ सूनी।।
छोड़ इनको सर्वथा रे, अन्यथा तेरा सु–संभावी पतन है।
आज के संत्रासमय संसार में, महावीर का सन्देश की ऊषा किरण है।।

(३)

जन्म क्या है ? मरण की भूमिका है, ले चुका इसको अनन्ती बार प्राणी।
मृत्यु का बन ग्रास क्या जाने, कब कफन ले ओढ़ अस्थिर जिन्दगानी।।
इसलिये भयभीत सब हैं, लड़खड़ाते भार अपना ढो रहे हैं।
कर रहे हैं पंचपरिवर्तन, अनादिकाल से दुख–दग्ध होकर रो रहे हैं।
रोक सकता चार गतियों का भ्रमण, ध्यान द्वारा कर्म रिपुओं का दहन है।
आज के संत्रासमय संसार में, महावीर का सन्देश ही ऊषा किरण है।।

(४)

जीव–हिंसा, झूठ, चोरी का, जहाँ देखो वहीं वातावरण है।
चारित्र का रथ गिर रहा है, दिखता सुरक्षा का नहीं कोई यतन है।।
और फिर ये ग्रह परिग्रह का, मनुज की खोपड़ी पर चढ़ उसे ललकारता है।
इसलिये नर कर रहा संचय, दीन–दुखियों को सदा धुत्कारता है।।
कहा ये पाप हैं, छोड़ो इन्हें, बन गया इस भांति जो तारण–तरण है।
आज के संत्रासमय संसार में, महावीर का सन्देश ही ऊषा किरण है।।

(५)

बन रहे अणुबम, बड़े हम, कह रहे हैं चीन–रसिया और अमरीका।
विस्तारवादी नीति पर चलकर, परस्पर कर रहे आलोचना–टीका।।
आज का मानव दुखी–पीड़ित–प्रकंपित–पी–रहा है अश्रुजल खारा।
बारूद का ईंधन बनेगा एक दिन निश्चित लड़ाकू विश्व ये सारा।।
"जियो खुद और जीने दो", अगर माना नहीं इसने कथन है।
आज के संत्रासमय संसार में, महावीर का सन्देश ही ऊषा किरण है।।

(६)

कौन देखो जा रहा वह, दीन–नंगा–कोई भिखमंगा।
धरा ही सेज है उसकी, औ चादरा आकाश की गंगा।।
इक नजर इस ओर भी डालो, प्रासाद में वैभव किलोलें कर रहा है।
एक को मिलता नहीं खाने, दूसरा खाने के कारण मर रहा है।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पाट सकता वीर का आदर्श ही, अर्थ के वैषम्य की खाई गहन है।
आज के संत्रासमय संसार में, महावीर का सन्देश ही ऊषा किरण है।।

(७)

जन्म से कोई नहीं छोटा –बड़ा, कर्म ही नर–श्रेष्ठता की है कसौटी।
एक जैसी आत्मा सब प्राणियों में, हो किसी की देह लम्बी या कि छोटी।।
प्यार तुम बांटो सभी को, बाहु फैलाकर गले सबको लगाओ।
तुम किसी के प्राणमत घातों, विश्व कल्याणी अहिंसा की सुखद लोरी सुनाओ।।
सर्वोदयी–सिद्धान्त कहता, आइये छोटे–बड़े सब को शरण है।
आज के संत्रासमय संसार में, महावीर का सन्देश ही ऊषा किरण है।।

सन्–1975

श्री बाहुबली स्तवन – 23

देह देवालय, मनोवेदिका, में सादर पधराऊँ।
बाहुबली के श्रीचरणों में, बार–बार शिर नाऊँ।।

(१)

नूतन–अरुण–कमल–सम कोमल, प्रभु पद–पद्म तुम्हारे।
दर्शन–वंदन–अर्चन कर हम, कठिन कर्ममल जारे।।
इन चरणों में मस्तक धर कर, रोम–रोम हर्षाऊँ।
बाहुबली के श्रीचरणों में, बार–बार शिर नाऊँ।।

(२)

तुम जैसा आदर्श न भू–पर, अन्य दूसरा देखा।
सब कुछ पाकर, सब कुछ त्यागा, अतिआश्चर्य अनोखा।।
लगन लगी है मेरे मन में, यह अवसर कब पाऊँ।
बाहुबली के श्रीचरणों में, बार–बार शिर नाऊँ।।

(३)

विनयवन्त–सह, स्वाभिमान का, पाठ पढ़ाने वाले।
पराधीनता छोड़, आत्मस्वातन्त्रय जगाने वाले।।
गिरि–सुमेरु–सम अचल तपी की, सम्यक् स्तुति गाऊँ।
बाहुबली के श्रीचरणों में, बार–बार शिर नाऊँ

(४)

नख–शिख–रूप अप्रतिम अद्भुत, गूंगे कौ गुड़भावै।
वचनातीत रहे, अनुभूति, पुलक प्रतीति बतावै।।
अंतःकरण उतारूँ छवि को, नयन कपाट लगाऊँ।
बाहुबली के श्रीचरणों में, बार–बार शिर नाऊँ।।

सन्–2000

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रभु चरणों पर चल न सके तो ..... – 24

(1)

कूप–नदी–सागर–तड़ाग में, नित मलमल कर खूब नहाया।
शुद्ध, स्वच्छ पट धारण करके, प्रभु पूजक का रूप सजाया।।
किन्तु वासना रही जागरित, मन–विकार नहिं हटने पाया।
भग न पाए पाप – कषायें राग–द्वेष–मद–मत्सर माया।।
मन कल्मष यदि धो न सके तो पुण्य–तीर्थ–स्नान वृथा है।
प्रभु चरणों पर चल न सके तो, प्रभु का सब गुणगान वृथा है।।१।।

(2)

वेदी पर चढ़ गए परन्तु, भावों में उत्थान न आया।
प्रभु–प्रक्षाल किया घिस–घिस कर, पर मन को न चमका पाया।।
मंगलपाठ पढ़ लिए सस्वर, पर निज हित का भाव न जागा।
गन्धोदक ले लिया, न फिर भी प्रभु चरणों में चित अनुरागा।।
निर्विवेक की गई क्रिया से, आतम हित अभिमान वृथा है।
प्रभु चरणों पर चल न सके तो, प्रभु का सब गुणगान वृथा है।।२।।

(3)

अष्टद्रव्य का थाल सजाना, कोई मुश्किल काम नहीं है।
घिस चन्दन का तिलक लगाना, कष्टसाध्य व्यायाम नहीं है।।
पुष्पांजलि क्षेपण कर देना, भक्ति भाव पहचान नहीं हैं।
करताल बजा, ऊँचे स्वर गाना, भी प्रभु का गुणगान नहीं हैं।
भाव–शून्य यदि हुई क्रियायें, तो सब पूजा–ध्यान वृथा है।
प्रभु चरणों पर चल न सके तो, प्रभु का सब गुणगान वृथा है।।३।।

(4)

शांतिपाठ पढ़ लिया परन्तु मनः शान्ति अप्राप्त रही।
पाठ विसर्जन किया न फिर भी कर्मशान्ति की प्राप्ति हुई।।
सामायिक कर चुके, किन्तु न हुआ समय का किंचित् ज्ञान।
ग्रन्थराज पढ़ लिए अनेकों, किन्तु न प्रगटा आतम–भान।।
मन–निग्रह के बिना, आतमहित किया गया हरकाम वृथा है।
प्रभु चरणों पर चल न सके तो, प्रभु का सब गुणगान वृथा है।।४।।

(5)

यद्यपि षट्रस त्याग कर दिए, छोड़ दिया चौविध आहार।
विषय–कषाय–आहार न त्यागा, तो उपवास हुआ बेकार।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चार संघ को दान दे लिया, खर्चे लक्ष–कोटि दीनार।
किन्तु मान–यश रहा मूल में, तो सब दान हुआ निस्सार।।
मर्म बिना समझे विधान का पालन, तो श्रमदान वृथा है।
प्रभु चरणों पर चल न सके तो, प्रभु का सब गुणगान वृथा है।।५।।

सन्–1967

स्वागत है अभिनंदन है – 25

(१)

स्वागत है
अभिनन्दन है।
मुनिसंघ को वन्दन है।
पलक पांवड़े बिछे हुये हैं
बिखरा रोली चंदन है। स्वागत है...............

(२)

धन्य हुये हैं भाग्य हमारे।
आज पुण्य फलवन्त हुआ।।
आज हुई मरुथल में वर्षा–
पतझड़ गया, बसंत हुआ।।
आज हमारे घर – आंगन में
फूला कानन नन्दन है – स्वागत है.......।।

गुरु -वंदना - 26

आचार्य श्री के चरणों में, हम सुमन चढ़ाने आये हैं।
पावन चरणों में शीस नमा, शुभ आशिष पाने आये हैं।।

(१)

आचार्य श्री के दर्शन से, मन की कलियाँ खिल जाती हैं।
पीयूषमयी वाणी सुनकर, शिव की गलियाँ मिल जाती हैं।
देख आपकी जिनमुद्रा, मन में ये भाव समाये हैं।
मानों धरती पावन करने, कोई तीर्थंकर आये हैं।।
गुरु के चरणों की चंदनरज, हम माथ चढ़ाने आये हैं।
आचार्य श्री के चरणों में, हम सुमन चढ़ाने आये हैं।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२)

जीवन की पुस्तक खुली हुई, अतिशय सुन्दर हैं पृष्ठ सकल।
प्रवचन की धारा बहती हैं, जैसे गंगा बहती कल–कल।।
भावों में इतनी पावनता, ज्यों घिसा गया मलयज चंदन।
हम सबका इनके चरणों में, सविनय, सादर, शत–शत वंदन।।
चलते–फिरते तीर्थंकर के, हम दर्शन करने आये हैं।।
आचार्य श्री के चरणों में, हम सुमन चढ़ाने आये हैं।।

(३)

हे श्रेष्ठ श्रमण, हे महाव्रती, हे रत्नमयी के भागीरथ।
तुमने जगती को दर्शाया, शिवपुर जाने का सच्चा पथ।।
हे ज्ञानसूर्य, अध्यात्मसिन्धु, हे ब्रह्मतेज के मूर्तिमान।
हे निर्विकार–निर्लेप संत, चरणों अर्पित शत–शत–प्रणाम।।
हम 'वात्सल्य' की गंगा में, आकण्ठ डूबने आये हैं।
आचार्य श्री के चरणों में, हम सुमन चढ़ाने आये है।।

(४)

हे जिनवाणी माँ के सपूत, हे विद्वानों के धर्मपिता।
तुमने मिथ्यात्व नशाया है, बनकर के स्याद्वादसविता।।
हे कुन्द कुन्द के कुल–दीपक , हे महावीर के लघुनन्दन।
हे सरलमति हे बालयति, हे गुण सुमनों में नंदन वन।।
रूप तुम्हारे जैसा हो, वरदान माँगने आये हैं।
आचार्य श्री के चरणों में, हम सुमन चढ़ाने हैं।।

गुरुणांगुरु प. पूज्य
आचार्य श्री ज्ञान सागर स्तवन् - 27

(१)

पंचमहाव्रत धारण करके, हुए मोक्षपथ अनुगामी।
सतताभ्यास प्रेरणा पाकर, हुए ज्ञाननिधि के स्वामी।।
भाग्य छोड़ पुरुषार्थ सम्हालो, जिनके जीवन का सन्देश।
आचार्य श्रीज्ञान सागर को, वंदन करता कवि "राकेश"।।

(२)

राजस्थानी "राणोली" में, उपजे मानव रत्न अनेक।
भूरामल – (ज्ञानसागर जी), श्रेष्ठरत्न उनमें से एक।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुख के दिन कुछ देख न पाये, कर न सके अधिक अध्ययन।
भूरामल दशवर्ष के हुए, पिता स्वर्ग कर गये गमन।।

(३)

गये बनारस अध्ययन करने, शब्द–शब्द कण्ठस्थ किया।
अल्प समय में सब शास्त्रों का, स्वयं बना – रस चूस लिया।।
नहीं जैन विद्वान् उन दिनों, मात्र ब्राह्मणों का अधिकार।
नहीं पढ़ाते जैन छात्र को, उल्टा देते थे दुत्कार।।

(४)

तभी किया संकल्प आपने, ज्ञान का दीप जलाना है।
ब्रह्मचर्यव्रत धारण करके, जीवन सफल बनाना है।।
शुभ विचार थे भूरामल के, इनको लेकर खड़े हुए।
गमछे बैंचे गली–गली में, स्वाभिमान से पढ़े– बढ़े।।

(५)

विद्वद्वर भूरामल शास्त्री, किया ज्ञान का आराधन।
नहीं बनाया कभी ज्ञान को, किन्तु जीविका का साधन।।
मात सरस्वती के चरणों में, किए समर्पित पुष्प अनेक।
प्राप्त हुए पच्चीस अभी तक, मौलिकग्रंथ रहे प्रत्येक।।

(६)

मणियाँ नौ कृतियां संस्कृत की,षोड़ष हैं हिन्दी के द्वार।
गद्य–पद्य–चम्पू–सब पर है, लेखक का समान अधिकार।।
निस्पृह थे कविराज पूर्णतः, नहीं प्रकाशन से था काम।
सत्साहित्य देना समाज को, लेते नहीं लेश विश्राम।।

(७)

वर्ष इक्यावन होने आये, आतमहित का आया ज्वार।
बाल ब्रह्मचारी होकर भी, सप्तम प्रतिमा की स्वीकार।।
सन् पचपन में वीर निधि जी, गुरुवर की सन्निधि पाकर।
सफल किया मानव तन अपना, क्षुल्लक दीक्षा धारण कर।।

(८)

सन् उनसठ में जिनवर दीक्षा, शिवनिधि से सम्पन्न हुयी।।
मुनिवर श्री ज्ञानसागर की, नामांकित जयघोष हुयी।।
धीरे–धीरे ज्ञान आपका, बढ़कर सागर हुआ विशाल।
उपाध्याय बन साधु–संघ को, श्री मुनिवर ने किया निहाल।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(९)

ज्ञाननिधि के सब शिष्यों में, सर्वोत्तम विद्यासागर।
ज्ञान–ध्यान–तप–त्याग– साधना, सकल गुणों के हैं आगर।।
माह नवम्बर तिथि द्वाविंशति, सन् बहत्तर शुभ है जान।
मुनिवर श्री विद्यासागर को, दिया स्वपद श्री गुरुवर ज्ञान।।

(१०)

मरण समाधि आदर्श रहे हैं, शांति–धैर्य–समता आधार।
मृत्यु रही आनन्द दायिनी, हँस उड़ गया पँख पसार।।
कृष्णा ज्येष्ठ अमावस्या तिथि, संवत दो हजार इक्कत्तीस।
ज्ञान सूर्य तो अस्त हो गया, देकर विद्यालोक निशीश।।

सन्–2004

श्री विद्यासागराष्टकम् - 28

[श्री 108 आचार्य विद्यासागर जी महाराज की स्तुति]
[श्री डॉ. पन्नालाल जी साहित्याचार्य सागर के संस्कृत विद्यासागराष्टकम् का 'हिन्दी पद्यानुवाद]

(१)

सिद्धान्त–उदधि गंभीर महा, था अप्रवेश्य जो अन्यों से।
मति–सुमेरु से मथा गया वह, निपुणतया मुनि धन्यों से।।
अमृत–सम–चारित्र–रत्न पा, सफल किया जिनने नर–तन।
आचार्य श्री विद्यासागर ऋषिवर का हम करते स्तवन।।

(२)

जिनके मुख से निसृतवाणी, में अद्भुत आकर्षण है।
युवा मनों में भी आता, विषयों से पूर्ण विकर्षण है।।
वे हो जाते शीघ्र विरत हैं, छिन्न– भिन्न कर गृह–बंधन।
आचार्य श्री विद्यासागर, ऋषिवर का हम करते स्तवन।।

(३)

जिनके तन के कांति कणों का, है अद्भुत अतिशयी प्रभाव।
प्रबल शत्रु भी तज देते हैं, परम पुरातन वैरी भाव।।
शांतियुक्त हैं, गुणिजन संस्तुत, बुधजन करते जिन्हें नमन।
आचार्य श्री विद्यासागर, ऋषिवर का हम करते स्तवन।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४)

जिनकी भव्य देशना सुनकर, भविजन होते भव भयभीत।
है संसार असार वस्तुतः, होता वस्तु तत्व प्रतीत।।
सतत रूप से जगज्जनों का, करते रहते हित साधन।
आचार्य श्री विद्यासागर, ऋषिवर का हम करते स्तवन।।

(५)

जिनकी तीव्र तपस्या को लख, सब विस्मित रह जाते हैं।
अति गर्वीले मनुजों के सिर, चरणों में झुक जाते हैं।।
सत्य धर्म उपदेशक हैं जो, सकल गुणों के पुण्य सदन।
आचार्य श्री विद्यासागर, ऋषिवर का हम करते स्तवन।।

(६)

भव सागर में पड़े हुये जो, मनुजों का करने उद्धार।
बाहु पकड़ कर सदा दिखाते, सब पर करुणा भाव अपार।।
जिनका हृदय दया का सागर समता के आधार सघन।
आचार्य श्री विद्यासागर, ऋषिवर का हम करते स्तवन।।

(७)

जिनके मुख से झरे सदा, वैराग्यमयी अमृतवाणी।
चंचल युवतिमनों में भरती, ब्रह्म भावना कल्याणी।।
विरति भाव को धारण करके, करतीं स्वतः केश लुंचन।
आचार्य श्री विद्यासागर, ऋषिवर का हम करते स्तवन।।

(८)

काव्यकला में पूर्ण पटु हैं, प्रत्युत्तर में परम प्रवीण।
समाधान जिज्ञासु पाते, विषय नया हो या प्राचीन।।
उपदेशामृत विधि विधान में, महादक्ष, पीयूष वचन।
आचार्य श्री विद्यासागर, ऋषिवर का हम करते स्तवन।।

(क)

आचार्य श्री विद्यासागर जी, आचारांग के हैं विद्वान।
तद्गुण गृहणेच्छा हम करते, पुनःपुनः उनके गुणगान।।

(ख)

आचार्य श्री विद्यासागर जी, हैं करुणा परिपूरित मन।
मोक्ष महल तक पहुंचाने हित, करें हमारा दिग्दर्शन।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गजरथ महोत्सव गंजबासौदा–2008

संत शिरोमणी आचार्य श्री विद्यासागर वन्दना–29

शतबार श्रीगुरू को वंदन, शतशः गुरूवर का अभिनन्दन।

(१)

हे ज्ञानसिन्धु, हे विद्यानिधि, हे रत्नत्रयी के भागीरथ।
तुमने जगती को दर्शाया, शिवपुर जाने का सच्चा पथ।।
हे श्रेष्ठ श्रमण, हे महाव्रती, हे महावीर के लघुनन्दन।
शतबार श्रीगुरु को वंदन, शतशः गुरुवर का अभिनन्दन

(२)

इस जग उपवन के सुमन सभी, चुन लेता यमरूपी माली।
यह सत्य पा लिया बचपन में, इक दिन झड़ना जीवन डाली।।
तब कालबली से लड़ने को, आरूढ़ हुए संयम स्यंदन।
शतबार श्रीगुरु को वंदन, शतशः गुरुवर का अभिनन्दन

(३)

वारिधि की गहराई सँग में, मुश्किल हिमगिरि की ऊँचाई।
लेकिन गुरूवर में रहते हैं, दोनों मिलकर भगिनी–भाई।।
पूज्य हो गया दोनों का, गुरूवर में आकर गठबंधन।
शतबार श्रीगुरु को वंदन, शतशः गुरुवर का अभिनन्दन

(४)

हे जिनवाणी माँ के सपूत, हे विद्वानों के धर्मपिता।
आशीष आपका पा करके, हो रहे उदित नूतन सविता।।
भालभारती के ऊपर, तुम लगा रहे अक्षत–चंदन।
शतबार श्रीगुरु को वंदन, शतशः गुरुवर का अभिनन्दन

(५)

हे वात्सल्य के रत्नाकर, हे करूणाधन, अनुपम ज्ञानी।
निरपेक्षबन्धु, जग जीवों के, हे मंगलमय अमृतवाणी।।
हे गुणसुमनो के नंदनवन, तुमको प्रणाम, शत–शत वंदन।
शतबार श्रीगुरु को वंदन, शतशः गुरुवर का अभिनन्दन

(६)

हे संघश्रमण आचार्यप्रवर, हे लोकोत्तर महासन्त।
हे महाकवि, लेखक चिन्तक, साहित्यजगत् के चिरबसन्त।।
साहित्य मंजरी गुरूवर की, सुरभित जैसे मलयज चंदन
शतबार श्रीगुरू को वंदन, शतशः गुरूवर का अभिनन्दन।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(७)

कैसे होवें जगजीव सुखी, मन में शुभभाव समाये हैं।
लगता है फिर से एक बार, महावीर धरा पर आये है।।
ये केन्द्र 'दयोदय गोशाला; खोते हैं पशुओं का क्रंदन।
शतबार श्रीगुरु को वंदन, शतशः गुरुवर का अभिनन्दन

(८)

ये सभा हमें ऐसी लगती, जैसे तीर्थंकर समवशरण।
संघ चतुर्विध राजित है, औ श्रवण कर रहा है प्रवचन।।
यहाँ आन कर बैठे हैं, ये इन्द्र-देवता छोड़ गगन।
शतबार श्रीगुरु को वंदन, शतशः गुरुवर का अभिनन्दन

सन्–2008

गुरु वंदना : आचार्य श्री विशुद्धसागर जी-30

आचार्य श्री के चरणों में शत–शत वंदन, शत–शत वंदन

(१)

हे सरल हृदय, हे सरल मूर्ति, हे जिनेश के लघुनंदन।
आचार्य श्री के चरणों में शत–शत वंदन, शत–शत वंदन।।

(2)

हे 'रुर' ग्राम 'राजेन्द्रकुँवर', हे भिण्ड जिले के तिलक भाल।
श्री रत्तीबाई – रामनारायण, पितरौ के अनमोल लाल।।
रहे कमल बनकर घर में, रुचे नहीं जग के बंधनं।
आचार्य श्री के चरणों में शत–शत वंदन, शत–शत वंदन ।।

(३)

क्रमशः संयम सोपान चढ़े, "श्रेयांसगिरि" मुनि–पद धारा।
बढ़ चले विरागी चरणों पर, करने विनष्ठ जग की कारा।।
ज्ञान–ध्यान–तप के द्वारा, किया शुद्ध आतम कुंदन।
आचार्य श्री के चरणों में शत–शत वंदन, शत–शत वंदन ।।

(४)

'विरागनिधि' आचार्य प्रवर, ने उत्तम उपहार दिया।
मुनिराज श्री को आप सदृश, आचार्य सु–पद श्रृंगार किया।।
विंशति वर्षों से करें आप सातत्य ज्ञान सागर मंथन।
आचार्य श्री के चरणों में शत–शत वंदन, शत–शत वंदन ।।

सन्–2009

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गजरथ महोत्सव अयोध्या नगर, भोपाल
पंच कल्याणक गजरथ उत्सव सबको मंगलमय हो-31

(१)

मंदिर मूलजिनेश्वर भगवन पार्श्वनाथ की जय हो।
नाभिराय–मरूदेवी नन्दन, आदिनाथ की जय हो।।
आचार्य श्री विशुद्धसागर की जय हो, सदा विजय हो।
पंच कल्याणक गजरथ उत्सव सबको मंगलमय हो।।

(२)

आतम से परमातम बनना, इसका प्रमुख प्रयोजन।
इसलिये यह किंया गया है, गरिमामय आयोजन।।
इसे देखकर सकल जगत को पुण्य प्राप्त अक्षय हो।
पंच कल्याणक गजरथ उत्सव सबको मंगलमय हो।।

(३)

आचार्य श्री विशुद्धसागर जी, संघ सहित पधराये।
लख 'मनोज्ञ' मुनिवर मुखमुद्रा, रोम–रोम हर्षाये।।
पूज्यश्री के शुभाशीष से, सफल कार्य "निश्चय" हो।
पंच कल्याणक गजरथ उत्सव सबको मंगलमय हो।।

(४)

अनादिकाल से यह चेतनमृग, भव–वन भटक रहा है।
जन्म–मरण के मकड़जाल में भ्रमवश अटक रहा है।।
पंचकल्याणक उत्सव द्वारा, सम्यक्ज्ञान उदय हो।
पंच कल्याणक गजरथ उत्सव सबको मंगलमय हो।।

सन्–2009

श्री 108 उपाध्यायरत्न ज्ञानसागर-स्तवन-32

(१)

अरहंत, सिद्धाचार्य को, मैं भाव से वन्दन करुँ।
लोक के सब साधुओं की, चरण रज मस्तक धरुँ।।
उपाध्याय वर श्री ज्ञानसागर, का करुँ मैं स्तवन।
भाव शुद्धि प्राप्त कर, मेटूँ सकल भव का भ्रमण।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२)

उत्तम बहुत से संत हैं, पर आप सर्वोत्तम गुणी।
सराक बिछुड़े बन्धुओं की, टेर बस तुमने सुनी।।
बरसों विहार–प्रवास तुमने, किया उनके क्षेत्र में।
तस्वीर "श्रावक" झलकती, गुरुवर तुम्हारे नेत्र में।।

(३)

मेरा अटल विश्वास मुनिवर, आप मंगलधाम हैं।
पाते सकल कल्याण जो भी ध्यान करते नाम हैं।।
निर्ग्रंथ अन्तः– बाह्य से, पर "ग्रन्थ" रहता पास है।
ज्ञानोपयोगी रहें हर क्षण वैशिष्ट्य गुरुवर खास है।।

(४)

शब्द मुनि मुखचन्द्र से, झरते हैं अमृत से सने।
खेलती मुस्कान मुख, उपमा सुकवि से नहिं बने।।
कर उठा आशीष देते, हृदय से पुचकारते।
भव्य भक्तों की नमोऽस्तु, शिर हिला स्वीकारते।।

(५)

गुण कहाँ तक हम गिनायें, गुरु गुणों की खान हैं।
हो बड़े, पर लेश भी, तुम में नहीं अभिमान हैं।
एक या दो–तीन साधुसंघ, मिल सब से रहें।।
धन्य है साधुत्व गुरुवर, मित्रता सब से रखें।।

(६)

णमो गुरुवर आपको है, "व्यसन–मुक्ति" के लिये।
स्वस्थ जीवन के अनेकों, सूत्र हैं तुमने दिये।।
आचार शाकाहार का, गुरुवर तुम्हारी देन हैं।
"व्रत अहिंसा पालते, पाते सदा सुख–चैन हैं।।"

(७)

ज्ञानी जनों के प्रति हृदय, वात्सल्य अपरम्पार है।
कार्यशाला, गोष्ठियाँ, करती सुज्ञान प्रचार हैं।।
सामर्थ्यलख विद्वज्जनों की, करते उचित उपयोग हैं।
पुरस्कार–सह आशीष देते, उत्साहवर्द्धन योग हैं।।

(८)

नग्न मुद्रा आपकी लख, जागता वैराग्य है।
विषय लगते विष कषैले, भाग जाता राग है।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दर्श करके भव्यजन की, दूर होती पीर हैं।
तुम मिले क्या, मिल गये, हमको स्वयं महावीर हैं।।

(९)

"साथ में क्या लाया जग में, साथ क्या ले जायेगा।
इस धरा का, इस धरा पर, सब धरा रह जायेगा।।"
जानकर यह सत्य गुरुवर, स्वर्ण–पथ पर चल पड़े।
'सुमति' का आशीष पा, संयम–शिखर क्रमशः चढ़े।।

(१०)

गर न होते संत तुमसे, काल चौथे की ,तरह।
जैनेन्द्रवाणी का प्रकाशन, हो न पाता इस तरह।।
लीन रहते ध्यान में, उपसर्ग–परिषह जय करें।
आत्मज्ञानी देहनिस्पृह, समभाव रह, संवर करें।।

(११)

रंच नहि व्यामोह मन में, शिष्य परिकर हो बड़ा।
रहते विवादों से परे, तप–दंभ चरणों में पड़ा।।
शुचिता–सरलता–साधुता का, ज्ञानसागर नाम हैं।
जीवन्त–तीर्थ, महा मंगल, गुरु आपको प्रणाम हैं।।

(१२)

प्रणमामि गुरुवर आपको, आप हैं प्रतिभाधनी।
आप तो हैं सूर्य मुनिवर, कमल हैं विद्वत् गुणी।।
दर्शकर गुरुवर तुम्हारे, मुदित होते हम सभी।
उपकार ऋषिवर आपके, नहीं भूलेगें कभी।।

फलश्रुतिः

शांतमन, अच्छी तरह, जो मोह तज स्तवन करें।
वे पाप – कर्म – कषाय कल्मष, मुक्त हो सब सुख वरें।।

सन्–2010

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री सुधासागराष्टकम् - 33

(श्री १०८ मुनिराज सुधासागर जी की स्तुति)

(१)

जिनका तपस्तेज तन लख कर, सूरज भी शर्माता है।
जिनका शांत–सौम्य मुखमंडल धर्मामृत बरसाता है।।
सम्यक् दर्शन–ज्ञान–चरित को प्राप्त जहां पर संजीवन।
श्री मुनिराज सुधासागर ज़ी, के चरणों में कोटि नमन।।

(२)

वीर–हिमालय से गंगा, मिलती है विद्यासागर में।
जग–जन दौड़ पड़े भरने, बस अपनी–अपनी गागर में।।
गागर में लिये सुधा–सागर, कहते हैं अनमोल कथन।
श्री मुनिराज सुधासागर जी, के चरणों में कोटि नमन।।

(३)

विषयों की आशा को त्यागा, समता को अपनाया है।
आरंभ–परिग्रह लेश नहीं, ज्ञान–ध्यान मन भाया है।।
तपः लीन रहते हैं मुनिवर, करते निज–पर हित साधन।
श्री मुनिराज सुधासागर जी, के चरणों में कोटि नमन।।

(४)

जिनका दर्शन यथाजात का, जग को बोध कराता है।
जिनका प्रवचन मानव मन में, अमित तोष उपजाता है।।
जिनका सत्याचरण, आचरण का ही है ज़ीवंत कथन।
श्री मुनिराज सुधासागर जी, के चरणों में कोटि नमन।।

(५)

भव–वन में भटके जीवों को, मुनिवर मार्ग दिखाते हैं।
अन्तरतम के मिथ्यातम को, सम्यक् दूर भगाते हैं।।
हैं शिवपुर के पथिक, जगत को करें मुक्ति का दिग्दर्शन।
श्री मुनिराज सुधासागर ज़ी, के चरणों में कोटि नमन।।

(६)

वाणी में जिनवाणी का, सब मर्म प्रकट कर देते हैं।
सरल–सरस शब्दावलि में, जन हृदयंगम कर लेते हैं।।
स्याद्वाद कथनों में अर्चित, जिनवाणी के युगल नयन।
श्री मुनिराज सुधासागर जी, के चरणों में कोटि नमन।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(७)

जंगल में मंगल बरसाते, अंधकार में सूर्य प्रकाश।
जिनकी चरण धूलि से होता, व्यवधानों का सत्यानाश।।
हो जाता है तीर्थ वहीं पर, कर देते हैं जहां गमन।
श्री मुनिराज सुधासागर जी, के चरणों में कोटि नमन।।

(८)

निरतिचार पालन करते हैं, पंच समिति व्रत पंच प्रकार।
काव्य–न्याय–व्याकरण आदि पर, रखते हैं समुचित अधिकार।।
अध्ययन–अध्यापनरत रहकर, करें ज्ञान का परिमार्जन।
श्री मुनिराज सुधासागर जी, के चरणों में कोटि नमन।।

सन्–1989

विरासत के संरक्षक मुनि पुंगव

प.पू. मुनिश्री सुधासागर जी महाराज – 34

(1)

तीर्थंकर श्री अभिनन्दन को, सादर शीस झुकाता हूँ।
उनके पावन श्री चरणों में, श्रद्धासुमन चढ़ाता हूँ।।
मुनि पुंगव श्री सुधासिन्धु के, विशुद्धतरं चरणं प्रणामि।
क्षुल्लक श्रीगंभीर–धैर्य को, अर्पित हैं सादर उच्छामि।।

(2)

नगर ललितपुर क्षेत्रपालजी, अतिशय क्षेत्र निराला है।
श्री तीर्थंकर अभिनन्दन का, फैला यहाँ उजाला है।।
मुख्य द्वार करते प्रवेश ही, दर्शन होते मानस्तम्भ।
झुक जाता मस्तक दर्शक का, मान सभी का होता भंग।।

(3)

चारों ओर दृष्टि फैलाते, लगता क्षेत्र पुराना है।
कई शताब्दियाँ बीत गयी हैं, सब का जाना–माना है।।
जीर्ण–शीर्णता कहती सबसे, करो हमारा जीर्णोद्धार।
"देखो, इसे सम्हालो भैया, करो न गिरने का इंतजार।।

(4)

प्रतिध्वनि पहुँची समाज मन, सबने मिल कर कसी कमर।
क्षेत्रपाल को नया रूप दें, अब न देर करें पल भर।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

क्षेत्र कमेटी चाह रही थी, आचार्यश्री का शुभ आंशीष।
श्री विद्यासागर के चरणों में जाकर हुये सभी नतशीस।।

(5)

तीर्थक्षेत्र की जीर्णदशा का, प्रतिनिधि मंडल किया बखान।
"चाह रहे हम, क्षेत्र हमारा, अब पहने नूतन परिधान।।
अतः पूज्यवर शुभशीष–सह, सन्निधान दें हे गुरुदेव।"
"सुधाशीष हम देते तुमको, सफल कार्य होंगे स्वयमेव।।"

(6)

सिद्धऋषि श्री सुधासिन्धु के यदा क्षेत्र थे पड़े चरण।
चारों ओर जीर्णता बिखरी, यत्र–तत्र–सर्वत्र क्षरण।।
क्षेत्र वंदना की मुनिवर ने, एक दृष्टि सब समझ लिया।
फिर भी ऋषिवर मौन ही रहे, शब्दोच्चारण नहीं किया।।

(7)

क्षेत्र कमेटी सब जन आये, कृत निर्णय मंतव्य कहा।
सिद्धवाक् श्री मुनि पुंगवजी, शुभ मंगल आशीष दिया।।
जैन दिगम्बर परम्परा में, मुनिवर करें न कोई काम।
वे तो नित आवश्यक पालें, रात्रि–दिवस नित प्रातः–शाम।।

(8)

करते नहीं कराते कोई, तीर्थक्षेत्र का नव अवतार।
या कि पुरातन तीर्थक्षेत्र का, नहीं कराते जीर्णोद्धार।।
अगर कमेटी के जन मिलकर, आते कोई लें शुभ काम।
आशीर्वाद तुरंत देते है, महामुनीश्वर मंगलधाम।।

(9)

अगर कोई आशीर्वाद को, कहे प्रेरणा निपट अजान।
उन निन्दक–आलोचक जन को, देवें सद्बुद्धि भगवान।।
श्रीमुनिवर के शुभाशीष से, जहाँ हुये हैं जीर्णोद्धार।
मंत्रमुग्ध हो आप कहेंगे, मुनिवर किया महत उपकार।।

(10)

वर्षों पहले 'सांगानेर' में, प्रायः रहते बंद किवार।
लेकिन अब दर्शक आते हैं, समय–समय पर कई हजार।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अगर देखलें निन्दक बन्धु, वहीं ठिठक रह जायेंगे।
घण्टों बैठे रहें जिनालय, नहीं लौट कर आयेंगे।।

(11)

इसी तरह से दिव्य देवगढ़, या कि चाँदखेड़ी–बैनाड़।
पुरातत्व के संरक्षण सह, हुआ क्षेत्र का जीर्णोद्धार।।
इसको अनुचित अगर कहो तुम, बुद्धि की बलिहारी है।
हमने तो मुनिराजश्री की, जय–जयकार उचारी है।।

(12)

अभिनन्दन जिन के दर्शन से, बनती दर्शक की तकदीर।
श्री मुनिवर के शुभाशीष से, बनती क्षेत्रों की तस्वीर।।
भैया ! वह दिन दूर नहीं है, नव क्षेत्रपाल बन जायेगा।
पहले से सौ–गुना चाँद–सा, सबका चित्त लुभायेगा।।

सन्–2010

प. पू. 108 मुनि श्री अभय सागर जी महाराज

प्रणामाञ्जलि – 35

(१)

तुम चन्द्र हो, मैं चकोर मुनिवर, सतत मुख दर्शन करूँ।
तुम नीर हो, मैं मीन प्यासा, पा–पुलक हर्षण करूँ।।
तुम जलज हो, मधुकर बना मैं, रहूँ तव चरणों सदा।
दे दो अभय "राकेश" को दुख राहु न ग्रसवे कदा।।

(२)

तुम सूर्य हो, मैं कमल विकसित, मकरन्द भी तुमसे मिला।
हिम गिरि–शिखर से ही चला, मम ज्ञान सरि का सिलसिला।।
तुम सुधाकर, मम निशा हर, मन कुमुद विकसित किया।
दी आपने ही कलम–वीणा, और उसको स्वर दिया।।

(३)

तुम विज्ञ और वहुज्ञ यतिवर, भाव–भाषा के धनी।
वैयाकरण की दक्षता में, आप ऋषिवर अग्रणी।।
विज्ञान के मस्तिष्क से वर, पूर्ण हो श्रुतज्ञान से।
जयवन्त हो गुरुवर हमारे, प्रार्थना भगवान से।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४)

तुम विनय–वत्सल पयोधि, सम्यक् दर्श–चारितवान हो।
तुम सरलता–साधनादिक, सब गुणों की खान हो।।
मन्दस्मिति में तुम्हारे, बसे सब वरदान हैं।
आप होंगे और के गुरू, मेरे तो भगवान्न हैं।।

——— नेमावर –1998

तुम आये तो लगा कि जैसे महावीर आये हैं – 36

(१)

तुम में उनमें क्या अंतर, कवि समझ नहीं पाया है।
तुम आये तो लगा कि जैसे, चतुर्थकाल आया है।।
पंचमकाल, हीन संहनन, कठिन तपस्या ऐसी।
जैसी हमनें पढ़ी शास्त्र में, बस वैसी की वैसी।।
दोष खोजने आये बहुत से, पर न खोज पाये हैं।
तुम आये तो लगा कि जैसे महावीर आये हैं।।

(२)

हिंसा–झूठ–परिग्रह–चोरी, दुराचार फैला था।
राजा–रंक–धनी–निर्धन का, हर पहलू मैला था।।
अरे ! यज्ञ की बलिवेदी पर पशु थे होमे जाते।
चीत्कार सुन महावीर के आँसू थे आ जाते।।
कुछ वैसे ही दृष्य धरा पर आज यहाँ पाये हैं।
तुम आये तो लगा कि जैसे महावीर आये हैं।।

(३)

भर यौवन में महावीर ने घर–द्वार छोड़ा था।
संसार–शरीर–भोग से उनने, अपना मुख मोड़ा था।।
ऐसी ही करुणा की धारा, बही थी उनके मन में।
तुम ही जैसी कठिन तपस्या, वे करते थे वन में।।
वैसा ही तो वेश दिगम्बर हम तुम में पाये हैं।
तुम आये तो लगा कि जैसे महाबीर आये हैं।।

गजरथ महोत्सव, बासौदा–2008

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुनिवर श्री आर्जव सागर को बारम्बार नमन है-37

(१)

बाहर–भीतर महक रही है, रत्नत्रय फुलवारी।
व्रत–संयम से समलंकृत है मुनि जीवन की क्यारी।।
जहाँ पहुँच जाते हैं गुरुवर, होता वहीं चमन है।
मुनिवर श्री आर्जव सागर को, बारम्बार नमन है।।

(२)

पंचमहाव्रत हस्ति विराजित यद्यपि हैं पदचारी।
शस्त्र अहिंसा पिछी–कमंडलु समिति–गुप्ति के धारी।।
चतुर्थकाल चलता है संग में, करते जहाँ गमन हैं।
मुनिवर श्री आर्जव सागर को, बारम्बार नमन हैं।

(३)

काय छ हों प्रतिपालन करते दया धर्म के धारी
पाँच इन्द्रियों के अश्वों पर मुनिवर करें सवारी।।
मन मतंग को बांध लिया है, इंद्रिय किया दमन हैं।
मुनिवर श्री आर्जव सागर को, बारम्बार नमन हैं।।

(४)

क्रोध–मान–माया–लोभादिक विंशतिपंच कषायें।
प्राणी को अपने वश में कर भव–भव में भटकायें।।
इनका क्षय–उपशम करके गुरु, करते आत्म–रमण हैं।
मुनिवर श्री आर्जव सागर जी को, बारम्बार नमन हैं।।

(५)

लेते कम, देते हैं ज्यादा गुरुवर परमोपकारी।
ऐसे सन्तों के चरणों में धोक त्रिकाल हमारी।।
सभा आपकी शोभित ऐसे, जैसे समोशरण हैं।
मुनिवर श्री आर्जव सागर को बारम्बार नमन हैं।।

(६)

विशंति–चार परिग्रह त्यागे, अन्तर–बाह्य विरागी।
वसन–वासना रहित पूज्य श्री, आतम के अनुरागी।।
करुणाकलित हृदय हैं मुनिवर प्रवचन दिव्यसुमन हैं।
मुनिवर श्री आर्जव सागर को, बारम्बार नमन हैं।।

21. 07. 2013

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जय बोलो मुनिराज की, जय बोलो-38

(१)

चार वर्ण अतिशय पावन हैं, "मनरज" से मन-रज धोलो।
श्री मुनिवर के दर्शन कर के, अपने मन के पट खोलो।।
बड़े पुण्य से प्राप्त हुई है, धन्य घड़ी ये आज की।
जय बोलो मुनिराज की, जय बोलो। ....,,

(२)

सब कुछ पास हमारे देखो, कुछ भी इनके पास नहीं।
लेकिन हम-सा दुखी न कोई, इन-सा कोई सुखी नहीं।।
इन्हें कभी न चिन्ता होती, घर -गृहस्थी मे काज की।
जय बोलो मुनिराज की, जय बोलों ....,,

(३)

पांच इन्द्रियों के घोड़ों पर, मुनिवर करें सवारी है।
पिछी-कमण्डल, वेश दिगम्बर, जिनवर मुद्रा धारी है।।
इन्हें नहीं होती बीमारी, पंचेन्द्रिय के खाज की।
जय बोलो मुनिराज की, जय बोलो ....,,

(४)

परिचय और परिग्रह दोनों, भव-भव में भटकाते हैं।
पाप-कषायें इस प्राणी को, नाना नाच-नचाते हैं।।
इन्हें नहीं अभिलाषा होती, कभी तखत औ ताज की।
जय बोलो मुनिराज की, जय बोलो ....,,

(५)

'म' से राही मोक्ष मार्ग के, 'न' से कर्म नशाते हैं।
'र' से रमते आत्मतत्व में, 'ज' से जपते-ध्याते हैं।।
मुद्रा मन को भाती ऐसी, ट्रयू-कॉपी जिनराज की।
जय बोलो मुनिराज की, जयबोलो ....,,.

भोपाल, सन्-2009

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुनिश्री : धरती पर एक आफताब हैं-39

(१)
धारते न वस्त्र हैं,
रखें न अस्त्र–शस्त्र हैं।
दें नहीं किसी को त्रास,
न राग–द्वेष ग्रस्त हैं।।
दिग् – दिगंत आपके,
वस्त्र लाजबाब हैं।
मुनिश्री धरती पर, एक आफताब हैं।।

(२)
हिंसा से दूर रहें,
मन–वचन–काय से।
कहते न शब्द कभी,
प्रमाद या कषाय से।।
अहिंसा– अनेकान्त के,
महकते गुलाब हैं।
मुनिश्री धरती पर, एक आफताब हैं।।

(३)
मन पै लगाम है,
तन पै सवार हैं।
गुणस्थान मार्ग पर,
ऊर्ध्वमुख रफ्तार हैं।।
आप अपने आपके,
आप ही नवाब हैं।
मुनिश्री धरती पर, एक आफताब हैं।।

(४)
विषयों की आश नहीं,
'ग्रन्थ' कोई पास नहीं।
ज्ञान–ध्यान लीन आप,
खुद महा किताब हैं।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देखें निज आत्मा
देखते न ख्वाब हैं।।
मुनिश्री धरती पर,
एक आफताब हैं।।

सन्–2003

संत का जीवनः एक उत्तम पाठशाला-40

उपदेश से आचरण
अधिक असरवाला है।
संत का जीवन–
एक उत्तम पाठशाला है।।
मन–
निर्मल और पावन है।
वचनों में
चंदनियाँ सुगंध मनभावन है।।
आचरण
झरने की कल–कल निनाद वाला है।
संत का जीवन
एक उत्तम पाठशाला है।।
मन में
मक्खन–सी मृदुता
द्राक्षा–सी मिठास है।
देते हैं सब
न लेने की आस है।।
चिंतन
सर्वान्तः सुखाय वाला है।
संत का जीवन
एक उत्तम पाठशाला है।।
संत का जीवन
एक खुली किताब है।
वह, धरती पर
चलता–फिरता आफताब है।
मुख

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चंद्रमा की सुधाकिरण वाला है।
संत का जीवन
एक उत्तम पाठशाला है।।
संत ने सत्य को
ओढ़ा नहीं, जिया है।
तत्व को
पढ़ा नहीं, पिया है।
हर क्षण, हर वचन
स्वानुभव वाला हैं।
संत का जीवन
एक उत्तम पाठशाला है।।

सन्–2001

हे वर्णीजी! शत शत प्रणाम-41

(1)

अज्ञान अशिक्षाके तममें, सारा समाज जब सोया था।
दारिद्र्य, दीनता, राग द्वेषके, दुस्वप्नों में खोया था।।
भूल चुका था निज गौरवको, आत्मोन्नतिका ध्यान न था।
किं कर्तव्य विमूढ हुआ था, निज सन्मार्गका ज्ञान न था।
तभी 'हंसेरा' में जन्में थे, श्रीमन् गणेश वर्णी सु नाम।
श्रद्धांजलि में अर्पित तुमको, जन–जनके शत शत प्रणाम।।१।।

(2)

सारल्य, सादगीकी प्रतिमा, कारुण्य दयाके मूर्तिमान।
सतत साधना, लगन शीलता, के परमोज्वल कीर्तिमान।।
जाति जागरण हेतुः जन्मभर, अलख जगाने वाले सूर्य।
नगर–नगर से गाँव–गाँव तक, फूंका अथक प्रगतिका तूर्य।।
सम्यगदर्शन, ज्ञान चरितके, पालन कर्ता सदा अकाम।
श्रद्धाँजलि मैं अर्पित तुमको, जन–जनके शत–शत प्रणाम।।२।।

(3)

कोटि–कोटि तव उपकारोंका, विश्व रहेगा सदा ऋणी।
तुम जैसे लालोंके कारण, कहलाया यह देश धनी।।
केवल शाब्दिक श्रद्धांजलि ही; हो सकती पर्याप्त नहीं।
बनवाकर भौतिक स्मारक, होगा कर्तव्य समाप्त नहीं।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सच्चे श्रद्धा सुमन समर्पण, तुम जैसे हम करें सु काम।
श्रद्धांजलि में अर्पित तुमको, जन–जनके शत–शत प्रणाम।।३।।

(4)

समता, क्षमता, पावनताके, चलते फिरते नन्दन वन।
महावीर के उपदेशों से, सौरभमय सुन्दर उपवन।।
हे ज्ञानज्योति के प्रखर सूर्य, हे त्याग, तपस्या के सुधाय।
हे वर्णीजी अर्पित तुमको, जन–जन के शत–शत प्रणाम।।

23.11.1975

पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को सौ-सौ बार नमन है-42

(१)

यू. पी. मंडल बाराबंकी, कस्बा टिकैतनगर है।
श्रावक श्रेष्ठी जिनालयों की, बस्ती अति सुन्दर है।।
सन् चौतीस, माह अक्टूबर, शरद पूर्णिमा आयी।
छोटेलाल–मोहिनी घर में बनजे लगी बधाई।।
आज हुआ धरती पर मां का, मंगलशुभागमन है।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, सौ–सौ बार नमन है।।

(२)

मात –पिता ने लाड़–प्यार से नाम दिया था 'मैना'।
पर, वह तो स्वतंत्रता प्रेमी, बंधन में रहती ना।।
सोलह वर्ष व्यतीत हुये जब, सप्तम प्रतिमा धारी।
आचार्य श्री देश भूषण जी, गुरू बड़े उपकारी।।
उतरा नया सूर्य धरती पर, विस्मित् हुआ गगन है।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, सौ–सौ बार नमन है।।

(३)

बाल योगिनी, ब्रह्मचारिणी, पहली बीस सदी की।
'वीर' क्षेत्र पर हुई क्षुल्लिका, 'मैना' 'वीरमती' जी।।
माधोराजपुरा छप्पन में, और कदम बढ़ जाता।
आचार्य श्री वीरसागर से, हुई आर्यिका माता।।
पुरुषार्थी बढ़ते ही जाते, यह तो सत्य कथन है।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, सौ–सौ बार नमन है।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४)

आचार्य श्री वीर सागर ने, शुभ आशीष दिया है।
'वीरमती' को बना आर्यिका, जग उपकार किया है।।
'ज्ञानमती' सम्बोधन करके, दीक्षा क्रिया की पूरी।
"सार्थक करना नाम स्वयं का, रखना ध्यान जरूरी।।"
तब से नित ज्ञानोपयोग में, बीत रहा क्षण –क्षण है।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, सौ– सौ बार नमन है।।

(५)

नारी होकर नर से गुरुतर, माँ ने कार्य किये हैं।
ज्ञान–ध्यान–तप–त्याग के निशदिन, माँ ने चषक पिये हैं।।
शतक बीस नारी समाज का, नव इतिहास लिखा है।
बहुत खोज करने पर भी, ना कोई दृष्टान्त दिखा है।।
जिनवाणी माँ की बगिया को, जिसने किया चमन है।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, सौ–सौ बार नमन है।।

(६)

गिरि सुमेरु की शिखा पै जिसका, यशः केतु लहराता।
जम्बूद्वीप चतुर्दिक् फैला, जिसकी गाथा गाता।।
लवण समुद्र की लहरें जिसकी कहती हैं कर्मठता।
जिसके विस्तृत परिसर में नित, पवन सुगंधित बहता।।
आबाल वृद्ध–नर–नारी जिसमें, करते मुदित भ्रमण हैं।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, सौ–सौ बार नमन है।।

(७)

हस्तिनागपुर माता जी ने, नया तीर्थ प्रकटाया।
दूर–दूर से आते यात्री, सबके मन को भाया।।
अगर ठान ले कोई मन में, सब कुछ कर सकता है।
नारी होकर भी वह नर से, आगे बढ़ सकता है।।
भू को स्वर्ग बनाने का, कर सकता पूर्ण सपन हैं।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, सौ–सौ बार नमन है।।

(८)

धन्य–धन्य माता जी तुमने, ढाई सौ ग्रंथ रचे हैं।
संस्कृत–हिन्दी–मौलिक– टीका, पूजा– विधान लिखे हैं।।
ऐसी विदुषी–पुरुषार्थी, नारी न दृष्टि में आई।
अष्टसहस्री–षट् खण्डागम, आत्मसात् कर पायी।।
ग्रन्थ–पुष्प से नित ही करती, जिनवाणी अर्चन हैं।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, सौ–सौ बार नमन हैं।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(९)

प्रयाग– अयोध्या–माँगीतुंगी, को अक्षुण्ण बनाया।
ऋषभ देव का अखिल देश में, उत्सव गया मनाया।।
ज्ञान ज्योतिरथ, श्री बिहार रथ, तुम्हीं प्रवर्तनकारी ।
शोध संस्था–शिविर–सम्मेलन, कर्त्री की बलिहारी।।
महावीर के कुण्डलपुर में, अब आना सावन है।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, सौ–सौ बार नमन है।।

(१०)

गणिनी प्रमुख–आर्यिकामाता–वत्सलमूर्ति वन्दामि।
सिद्धान्तरत्नतरू कलिका, तुमको बारम्बार नमामि।।
तीर्थोद्धारक–न्यायप्रभाकर –चारित्रचन्द्रिका माता।
श्रुत का तीर्थ प्रकाशन कर्तृ, सौम्यमूर्ति सुखदाता।
मुख मयंक है, हस्तकल्पतरु, माँ पद–रज चंदन हैं।।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, सौ–सौ बार नमन हैं।।

(११)

नारी नर से भारी, यह भी है, उक्ति पुरानी।
किन्तु सत्य है माता जी की, आज नहीं हैं सानी।।
सदा–सदा से नर, नारी का, बना हुआ आभारी।
शिक्षा–दीक्षा–जन्म –नेह से, वह है परमोपकारी।।
बालयोगिनी माँ कृतियों से, भरा शिष्य उपवन हैं।
पूज्य आर्यिका ज्ञानमती को, सौ–सौ बार नमन हैं।।

सन्–2000

महावीर के सन्देशों को लाये तारण स्वामी-43

(१)

मिथ्यातम की घोर निशा में, जब जन भटक रहे थे।
रीति–रूढ़ियों के चक्कर में, जग–जन अटक रहे थे।।
तब तुम चमके सूरज बनकर, राह दिखाई नामी।
महावीर के सन्देशों को, लाये तारण स्वामी।।

(२)

जैन धर्म की ज्योति आपने, जीवन पर्यंत जलाई।
सर्वोदय के सिद्धान्तों की, भागीरथी बहाई।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिसमें कर अवगाहन जनता, बनी आत्मनिधि स्वामी।
महावीर के सन्देशों को, लाये तारण स्वामी।।

(३)

चींटी से लेकर हाथी तक, इक समान सब प्राणी।
जैसी हमको वैसी उनको, प्यारी है जिन्दगानी।।
किसी जीव को नहीं सताओ, महावीर की वाणी।
महावीर के सन्देशों को, लाये तारण स्वामी।।

(४)

मांसाहारी लगे हैं कहनें, अंडा शाकाहारी।
किन्तु नहीं वे पैदा होते, खेत, पेड़ या क्यारी।।
प्राणी खाकर नहीं बनो तुम, बन्धु! नरक–पथ–गामी।
महावीर के सन्देशों को, लाये तारण स्वामी।।

(५)

सप्त व्यसन मानव जीवन का, महानाश कर देते।
विज्ञ नहीं इनको जीवन में, पास फटकने देते।।
मद्य, मांस, मधु मक्कारों का, सेवन पाप निशानी।
महावीर के सन्देशों को, लाये तारण स्वामी।।

(६)

जैन धर्म धर्मवैज्ञानिक, जल में जीव बताता।
जल को व्यर्थ बहाने वाला, भारी पाप कमाता।।
महावीर ने कहा बन्धुओ! पियो छानकर पानी।
महावीर के सन्देशों को, लाये तारण स्वामी।।

(७)

रात्रिकाल में कीट–पतंगे, भोजन में गिर जाते।
बीमारी का कारण बनते, कभी मौत तक लाते।।
रात में खाना–पीना छोड़ो, कहा धर्म–विज्ञानी।
महावीर के सन्देशों को, लाये तारण स्वामी।।

(८)

उनके सिद्धान्तों पर चलकर, हम भी तर सकते हैं।
अगर ठानलें उन जैसी तो, सब कुछ कर सकते हैं।।
मार्ग बताया था जो उनने, बनें उसी के गामी।
महावीर के सन्देशों को, लाये तारण स्वामी।।

(९)

वाणी में अद्‌भुत जादू था, थी काया कर्मठता।
मन में अति धर्मानुराग था, कोई नहीं थी समता।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसीलिए खेड़ी से "गढ़" तक, जा पहुँचे अभिरामी।
महावीर के सन्देशों को, लाये तारण स्वामी।।

(१०)

ऐसे संत श्रेष्ठ गुरुवर का, मिलना बहुत कठिन है।
उनके चरणों में कवि करता, बारम्बार नमन है।।
संत प्रवर ने दृढ़ हाथों में, धर्मध्वजा थी थामी।
महावीर के सन्देशों को, लाये तारण स्वामी।।

श्री भट्टारक चारुकीर्ति को सादर नमन हमारे-44

(१)

तीन मई, सन् उनपचास दिन, गौरव गरिमा वाला।
"वारंगा" की पुण्य धरा पर, उतरा दिव्य उजाला।।
बिखर रही थी प्रभा चतुर्दिक,रत्नों–सी शिशु तन की।
जननी– जनक देख हर्षाये, कली खिल गयी मन की।।
गुण–रत्नों की खान पुत्र लख, "रत्न"की संज्ञा धारे।
श्री भट्टारक चारुकीर्ति को सादर नमन हमारे।।

(२)

दोज मयंक समान शिशु ने, शीघ्र पुष्टता पाकर।
किया सरस्वती माँ का अर्चन, "हुमचा" गुरुकुल जाकर।।
प्रखर बुद्धि–श्रमशील शिष्य ने, विद्याधन बहु पाया।
धर्मग्रन्थ–सह भाषायें पढ़, ज्ञान सुकोष बढ़ाया।।
ज्यों–ज्यों पढ़ते प्यास ज्ञान की, त्यों–त्यों पांव पसारे।
श्री भट्टारक चारुकीर्ति को सादर नमन हमारे।।

(३)

"श्री भट्ट अकलंक"भट्टारक, श्रमण बेल गुल वाले।
खोज रहे थे योग्य पात्र, जो मठ की डोर संभाले।।
"कुल निर्दोष, आचरण उत्तम,स्वस्थ–सुलक्षणधारी।
शिक्षित–सरल स्वभावी–विनयी, मृदुल–बालब्रह्मचारी।।
श्रीरत्न वर्मा" को पाकर, अतुल तोष मन धारे।
श्री भट्टारक चारुकीर्ति को सादर नमन हमारे।।

(४)

माह दिसम्बर, सन् उनहत्तर, रहा वर्ष अतिमंगल।
क्षुल्लक दीक्षा प्राप्त "रत्न" ने धारा पिछी–कमंडल।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कृत दीक्षा संस्कार पालकी, में शोभे अभिरामी।
सन् सत्तर अप्रेल माह में, हुए पीठ पति 'स्वामी'।।
हुए पट्ट अभिषेक अनन्तर, "चारुकीर्ति" जयकारे।
श्री भट्टारक चारुकीर्ति को सादर नमन हमारे।।

(५)

अद्योवस्त्र– उत्तरीय केसरी, केसर पगड़ी सोहै।
पिछी–कमण्डलु, ज्ञान सम्पदा, सौम्याकृति मनमोहै।।
चारित्रनिष्ठ, साधक प्रामाणिक, व्यक्तित्व प्रणम्य धनी हैं।
सादाजीवन–उच्चविचारों, "स्वामी" शिरोमणि हैं।।
मृदुव्यवहार, उदार सहृदय, संकल्प दृढ़ी गुण सारे।
श्री भट्टारक चारुकीर्ति को सादर नमन हमारे।।

(६)

जैनागम विशिष्ट विज्ञाता, विधि–विधान चतुराई।
देश–विदेश प्रवास काल में, धर्मध्वजा फहराई।।
चातुर्मासव्रती बन करके, की प्रभावना भारी।
अक्षर कलश, धर्मसम्मेलन, दृष्टि समन्वयकारी।।
प्रवचन–प्रतिभा–मंडित–दिनकर, श्रोता–कंज प्रसारे।
श्री भट्टारक चारुकीर्ति को सादर नमन हमारे।।

(७)

विद्यामंदिर स्थापित कर, किया सरस्वती पूजन।
पुरस्कार योजनाओं सें, सम्माने विद्वज्जन।।
साहित्य–सपर्या, संस्कृति रक्षा, मन्दिर–मूर्ति बनाये।
भट्टारक गण दीक्षा देकर, मठ पर कलश चढ़ाये।।
जीर्णोद्धारा जिनालयों को अतिशय रूप निखारे।
श्री भट्टारक चारुकीर्ति को सादर नमन हमारे।।

(८)

गोम्मटेश श्री बाहुबली के, परमभक्त बलिहारी।
महामस्तक अभिषेक की, श्रीमन की अद्भुत तैयारी।।
सागर को गागर में भरने का मम यत्न अधूरा।
शक्ति अल्प है भक्ति अपरिमित, हो 'अज्जी', ज्यों पूरा।।
तुमको प्यारे बाहुबली हैं, हमको तुम हो प्यारे।
श्री भट्टारक चारुकीर्ति को सादर नमन हमारे।।

— दक्षिण महासभा, सरस्वती पुत्रों की यात्रा

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उठो, संदीप भैया जी !
तुम्हें माता बुलाती है...... - 45

(1)

आप्त के उपदेश, जो गणधर ने गूँथे हैं।
लिखे मुनियों ने अतिश्रम से, बड़े सिद्धांत ऊँचे हैं।।
सैकड़ों वर्षों से जिसके, नहीं खोले गये हैं पृष्ठ।
दीमक खा रही जिसको, जो होती जा रही है नष्ट।।
सूरज की किरण तक भी, जो न वर्षों देख पाती है।
उठो, संदीप भैया जी, तुम्हें माता बुलाती है।।

(2)

करो रक्षा, सु–संवर्द्धन, प्रकाशन जैन आगम का।
बचालो लोप से इनको, करो उद्धार आगम का।।
निकालो इनको कारा से, चलाओ ज्ञानरथ न्यारा।
प्रजालो ज्ञान का दीपक, मिटे हर मन का अंधियारा।।
बिना सद्ज्ञान का जीवन, बिना स्नेह बाती है।
उठो, संदीप भैया जी, तुम्हें माता बुलाती है।।

(3)

गये हर गाँव भैया जी, शहर के हर जिनालय में।
किया अर्चन उतारी आरती, माँ की हर जिनालय में।।
पूछी कुशलता बैठकर, सब घाव सहलाये।
नूतन वस्त्र पहनाकर, ज्ञान मंदिर में ले आये।।
मरहम पट्टी देखकर, डब–डबा आँख आती है।
उठो, संदीप भैया जी, तुम्हें माता बुलाती है।।

(4)

जहाँ जिनदेव पूजन संग, सजती आरती प्रतिदिन।
जहाँ माँ शारदा की अर्चना होती रही प्रतिदिन।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जहाँ करताल बजते थे, मंगल वाद्य ध्वनि होती।
वहाँ मिलते नहीं पूजक, न जिनवाणी मुखर होती।।
दीपक की प्रभा उन तक, न किंचित् पहुंच पाती है।
उठो, संदीप भैया जी, तुम्हें माता बुलाती है।।

(5)

लघुवर्णी कोई कहता, कोई बीना के तुम गांधी।
कोई कहता तुम्हें पन्ना, चलाई ज्ञान की आंधी।।
सभी संदीप कहते हैं, तुम्हारा सरल कण–कण है।
तुम्हारा ज्ञान मंदिर को, तन–मन–सब समर्पण है।।
दिया जो ज्ञान का उपहार, भाषा कह न पाती है।
उठो, संदीप भैया जी, तुम्हें माता बुलाती है।।

(6)

ये है ज्ञान का दीपक, सरलनिधि ने प्रजाला है।
बने संदीप हैं बाती, उन्ही ने तेल डाला है।।
बीना के सभी मजबूत हाथों ने, संवारा है इसे दिल से।।
आये चक्रवातों से, बचाया बड़ी मुश्किल से।।
बनो "श्रुतकेवली" भैया, हर कंठ से आवाज आती है।
उठो, संदीप भैया जी, तुम्हें माता बुलाती है।।

सन् 1992

दीक्षा - दिवस - 46

दीक्षादिवस तो जन्म दिवस है, साधु–संत जीवन का।
शुभारम्भ आध्यात्मिक युग का सुप्रभात संयम का।।

(१)

पाँच इन्द्रियाँ वश में होतीं, मन समता आती है।
निरतिचार व्रत पालन करना, दीक्षा कहलाती है।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

दीक्षा –सूर्योदय से होता, सुप्रभात जीवन का।
दीक्षादिवस .... संयम का।।

(२)

जब विराग भोगों से आता, मन विशुद्धि आती है।
'विमल' आत्मा गुणस्थान चढ़, सिद्धशिला पाती है।।
दीक्षा के द्वारा ही होता, है विनाश भव वन का।
दीक्षादिवस .... संयम का।।

(३)

भगवन्! किस दिन पाऊँगा मैं, मुनिजीवन की दीक्षा।
उस दिन की आत्मा करता है, जन्मों–जन्म प्रतीक्षा।।
यह सर्वोत्तम सदुपयोग है, प्राप्त हुये नर–तन का।
दीक्षादिवस .... संयम का।।

(४)

कई भवों में की हो जिसने, अपनी कठिन परीक्षा।
वही आत्मा ले सकती है, इस भव में मुनि–दीक्षा।।
देव तरसते ही रहते हैं, रखें भाव संयम का।
दीक्षादिवस .... संयम का।।

(५)

मनोज्ञ और अमनोज्ञ विषय प्रति, राग–द्वेष को त्यागें।
प्रशम भाव धारण कर मन में, संयम को अनुरागें।।
वस्तु प्रमेय–प्रत्यक्ष जानकर, दूर करें भ्रम मन का।
दीक्षादिवस .... संयम का।।

भोपाल, दिसम्बर, 2009

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पिच्छिका परिवर्तन-47

(१)
घर से चला, सड़क पर आया, कोई नहीं था जन–संचार।
पता चला सब गये हुए हैं, जैन तीर्थ महावीर विहार।।
(२)
कारण, आज वहाँ हो रहा, अति विरागमय आयोजन।
सोलह पूज्य आर्यिकाओं का, होना पिच्छिका परिवर्तन।।
(३)
प्रश्न सामने खड़ा हो गया, यह पिच्छी क्या होती है।
"त्यक्त मोरपंखों के द्वारा, इसकी रचना होती है।।"
(४)
परम अहिंसा धर्म जगत् में, जैनी पालन करते हैं।
मुनि–आर्यिका–ऐलक–क्षुल्लक, पिच्छी धारण करते हैं।।
(५)
मोर पिच्छिका साथ में रखना, यह तो है साधु पहचान।
बिना पिच्छि के भेष अकेला, होता नहीं जगत् को मान्य।।
(६)
रुपया–टिकिट–दफ्तरी आर्डर, बिन मुद्रा के मान्य नहीं।
वैसे बिना पिच्छिका के भी–जिन दीक्षित सम्मान्य नहीं।।
(७)
पिच्छी तो साधक के कर में हर क्षण शोभा पाती है।
इसके बिना साधु की चर्या, प्रमाद पूर्ण कहलाती हैं।।
(८)
उठना–बैठना–चलना–फिरना, सोना–वस्तुग्रहण–रखना।
सामायिक–प्रतिक्रमण क्रियाएँ अथवा आवश्यक करना।।
(९)
सबके लिए जरूरी पिच्छी, सखी, साथ में रहती है।
रहो अकेले या कि सभा में, सदा साथ ही चलती है।।
(१०)
होती कोमल–रूपी–सुन्दर, चींटी तक को सह्य वजन।
इसके ऊपर ठहर न सकते, पानी–धूल–तेल के कण।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(११)

दिन में बार सैकड़ों इसको, साधु काम में लाते हैं।
अतः वर्ष में धीरे–धीरे, पंख पिछी झड़ ज़ाते हैं।।

(१२)

चातुर्मास अनन्तर जूनी–त्याग नई ले लेते हैं।
श्रावक निज सौभाग्य मनाते, नइ पिछी दे देते हैं।।

(१३)

सबको यह सौभाग्य न मिलता, मिले जो संयम लेते हैं।
ऐसे दम्पति निज जीवन को, 'आनन्द' से भर लेते हैं।।

(१४)

दम्पति युगल पिच्छि ले जूनी, व्रताशीष भी पाता है।
फलस्वरूप दोंनो का जीवन धन्य–धन्य हो जाता है।।

(१५)

साधु और श्रावक दोनों का, इससे होता है कल्याण।
बात यहीं पर पूरी करके, हम लेते हैं पूर्णविराम।।

बासौदा, सन् 2008

आज बिदा की वेला आई-48

आज बिदा की वेला आई, कैसे कहें, रहें भी कैसे,
है असह्य सब तरह जुदाई, आज बिदा की वेला आई।।

(१)

रमता जोगी, बहता पानी, इनका मुश्किल है रुक पाना।
हम घर वासी, रागी रोगी, है अशक्य इनके संग जाना
रुके नहीं ये, हम ना जायें, ऐसी विकट समस्या आयी।।
आज बिदा की..।।१।।

(२)

चलते–फिरते तीर्थ हमारे, हम सबसे छत्तीस हुये हैं।
जिन चरणों को दृढ़ पकड़ा था, आज वही गतिशील हुए हैं।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जब गुरुवर ही चले छोड़ कर, होगा जग में कौन सहाई।
आज बिदा की.. ।।

(३)

किसके रोके रुका है सूरज, अपने व्रत पर बढ़ता जाता।
किसके रोके रुका चन्द्रमा, है सब पर अमृत बरसाता।।
ये तीरथ सबके तीरथ हैं, सब जग को होवें सुखदायी।
आज बिदा की.. ।।

(४)

दया के सागर! हे जगत्राता,जाओ आज नहीं रोकेंगे।
जो सत्पथ तुमने दिखलाया, उससे रंच न मुख मोड़ेंगे।।
निश्चय समता आदि गुणों के, धारण हेतु कसम है खाई।
आज बिदा की.. ।।

(५)

पलक हमारे, चरण तुम्हारे, मंगलमय हो पंय तुम्हारा।
शीष हमारे, हस्त तुम्हारे, धर्मवृद्धि पाथेय हमारा।।
पुनः–पुनः दर्शन दें गुरुवर, हो सुयोग मंगल सुखदायी।
आज बिदा की.. ।।

(६)

उमड़ पड़े आँखों से आँसू अर्घ्य हमारा लेते जाना।
हम अज्ञान, अल्पज्ञ शिष्य हैं, गुरुवर हमें न तुम ठुकराना।।
तुम पहुँचो हम भी आते है, सबके मन में यही समायी।
आज बिदा की.. ।।

बासौदा, सन्–1998

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चलो पाठशाला चलें - 49

(१)

चलो पाठशाला चलें, इससे ,लाभ अनेक।
संस्कार की निधि मिले, लाभ है नम्बर एक।।

(२)

चलो, पाठशाला चलें, हटे तिमिर अज्ञान।
सुन्दर जीवन महल का, ज्ञान प्रथम सोपान।।

(३)

चलो, पाठशाला चलें कल्पवृक्ष अनुरूप।
नहीं सता पाये कभी, जगत दुखों की धूप।।

(४)

चलो पाठशाला चलें, समय का सद्‌उपयोग।
गल्पवाद से दूर रह, मिले पुण्य का योग।।

(५)

चलो पाठशाला चलें, बनता यहाँ चरित्र।
यह समाज की रीढ है, जीवन बने पवित्र।।

(६)

चलो, पाठशाला चलें, सीखें शिष्टाचार।
देव–शास्त्र–गुरु की विनय, विनय मोक्ष का द्वार।।

(७)

चलो पाठशाला चलें, पुण्य–पाप हो ज्ञात।
दर्शन–ज्ञान–चरित्र की, मिलती है सौगात।।

(८)

चलो पाठशाला चलें, गुरुवर कुशल कुम्हार।
जीवन भर मिटते नहीं, बचपन के संस्कार।।

(९)

चलो पाठशाला चलें, मिल सब बालक –वृद्ध।
ज्ञानामृत से होत है, जीवन लता समृद्ध।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१०)

चलो, पाठशाला चलें, मिले धर्म का ज्ञान।
बिना धर्म आचरण के, जीवन पशु समान।।

(११)

चलो पाठशाला चलें, जले ज्ञान का दीप।
आतम मुक्ता ग्रहण कर, तजें देह की सीप।।

(१२)

चलो, पाठशाला चलें, जैन संस्कृति केन्द्र।
हाय–हलो को छोड़कर, बोलो जयति जिनेन्द्र।।

(१३)

चलो, पाठशाला चलें, गुरु को करें प्रणाम।
श्री गुरु के आशीष से, सफल सभी हों काम।।

(१४)

चलो, पाठशाला चलें, करें प्रार्थना ईश।
सरल हृदय की भावना, सुन लेते जगदीश।।

(१५)

चलो, पाठशाला चलें, सुधरें भोजन– पान।
श्रावक के षट् कर्म का, मिलता सम्यग्ज्ञान।।

(१६)

चलो, पाठशाला चलें, गुरुवर का आदेश।
गुरुवर हमको मान्यवर, ब्रह्मा–विष्णु–महेश।।

(१७)

चलो पाठशाला चलें, समझें शाकाहार।
जैसा हम भोजन करें, वैसे बनें विचार।।

बासौदा, सन्–2004

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

गुरु और ज्ञान – 50

ज्ञान महासागर को
सूरज बने गुरु।
उनकी कृपा से होती है
हमारी जिन्दगी शुरु।।

सागर का जल,
हम पी नहीं सकते।
लेकिन बिना उसके
हम जी नहीं सकते।।

गुरु
ज्ञानसागर को
पहले स्वयं पीते हैं।
फिर बना अमृत
देते हैं उन्हें
जो प्यासे, सूखे और रीते हैं।।

रेलयात्रा, सन्–1988

गुरु और हर्ष – 51

पर्यजन्य देख चातक,
पिऊ–पिऊ पुकारता।
चन्द्र को चकोर है
पल–पल निहारता।।
आम्र बौर आये
तो कोयल कुहू बोली।
सूरज की किरण पाकर
कमलों ने आँख खोली।।
गुरुवर यहाँ पधारे
तो, रोम–रोम हर्षा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सूखा जहाँ विकट थी
आज हो रही वर्षा।।

रेलयात्रा, सन्–1988

गुरु पूर्णिमा – 52

ज्ञान के बिना है
जिन्दगी अधूरी।
सान्निध्य हो गुरु का
होती है तभी पूरी।।
इसलिए
जिसने दिया जनम
वह तो है मात्र माँ।
जिसने दिये नयन
वह गुरु है पूर्ण माँ

रेलयात्रा, सन्–1988

पुस्तकें – 53

पुस्तकें हैं ज्ञान की भंडार,
इनमें संचित हैं
महापुरुषों के दिव्य विचार।
जो खुदा, महावीर या बुद्ध ने कहा है
उनका खजाना
इनमें ही तो भरा है।
ये हमारी मित्र हैं सच्ची
निराशा के अन्धेरे मैं
मार्ग दर्शक बहुत अच्छी।
इनके उजाले में हम रास्ता भूलते नहीं।
क्रोध में अन्धे नहीं होते, मान में फूलतें नहीं।।

रेलयात्रा, सन्–1988

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रेरणा-गीत - 54

उठो! जागो! तुम्हें निर्माण की वेला बुलाती है

(१)

समय के पंख होते हैं, झटपट बीत जाता है।
घड़ा है उम्र का फूटा, जल्दी रीत जाता है।।
जिन्होंने समय को जाना, उनको दुनिया जान पाती है।
उठो!जागो!............।।

(२)

खाओ, पढ़ो, खेलो, मगर हो संतुलन पूरा।
साधो इस तरह जीवन, बनो तुम देश के हीरा।।
बँधी जो चंग है गुण से वही ऊँचाई पाती है।
उठो!जागो!............।।

(३)

चाहते हो भवन पक्का, सम्हालो नींव को प्यारे।
अगर बचपन नहीं संम्हला, तो समझो जिन्दगी हारे।।
सैकड़ों चोट खा मिट्टी, सलौना रूप पाती है।
उठो!जागो!............।।

(४)

करो जो कुछ, करो रुचि से, सफलता कदम चूमेगी।
तुम्हारी साधना को देख, दुनिया दिल से झूमेगी।।
घिसाती मेंहदी है जितनी, उतना रंग लाती है।
उठो!जागो!............।।

(५)

मिलें जो बिघ्न–बाधायें, उन्हें अपना सखा जानों।
भरा जो बदन में आलस, बड़ा दुश्मन उसे मानों।।
प्रगति पथ पर बढ़े वे जिन्हें पहचान आती है।
उठो!जागो!............।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(६)

हजारों फूल बगिया में, न समता है गुलाबों की ।
मुसीबत में जियो हँसते, करो मत बात ख्वाबों की।।
सुमन जो खिलते काँटो में सुगन्धी उनमें आती है।
उठो!जागो!............।।

(७)

खड़े जो नग, हमारे मग, निमंत्रण देते चढ़ने का।
मिले जो राह कँकरीली, सु अवसर आगे बढ़ने का।।
जिन्होंने रास्ता छोड़ा, सफलता मिल न पाती।
उठो!जागो!............।।

(८)

पराये आसरे रहते, पनपने भी नहीं पाते।
रहें जो स्वावलम्बन से, पहाड़ों पर भी हरयाते।।
मिलता उन्हें सम्मान, दुनिया गीत गाती है।
उठो! जागो! तुम्हें निर्माण की बेला बुलाती है।।

सन्–2008

प्रेरणा -गीत - 55

(१)

पढ़ते जाओ, पढ़ते जाओ, जब तक पूरा याद न हो।
बढ़ते जाओ, बढ़ते जाओ, जब तक मंजिल पार न हो।।

(२)

तुम्हें भाग्य ने दिया है सब कुछ, अब पुरुषार्थ की बारी।
जीवन–रण में विजयी होने की कर लो तैयारी।।

(३)

अपना नाम सार्थक करना कभी न रुकना पथ में।
श्रेष्ठ लक्ष्य तक पहुँचो निश्चित, बैठ कर्म के रथ में।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४)

नहीं शशकवत् सरपट दौड़ो नहीं मध्य रुक जाना।
लेकिन कछुये जैसे हरदम अनथक बढ़ते जाना।।

(५)

जो क्षण गया, गया, न होता उसका वापस आना।
अतः नहीं अनमोल क्षणों को यों ही व्यर्थ गँवाना।।

(६)

जब प्रमाद–आलस्य–निराशा आगे बढ़ने दे ना।
उस क्षण अपने मात–पिता को आँखों में भर लेना।।

(७)

उनकी ममंता, प्यार, समर्पण तुम्हें प्रेरणा देंगे।
सूरज बनकर तन–मन का सब अँधकार हर लेंगे।।

सन्–2008

स्वाध्याय करो, स्वाध्याय करो, तुम प्रतिदिन, स्वाध्याय करो - 56

(1)

वॉचो –पूछो, सुनो – सुनाओ, दुहराओ मिल गान करो।
शंका – समाधान आदिक से, तुम श्रुत का परिज्ञान करो।।
प्रतिदिन शास्त्र सभा में जाओ, औ घर पर भी पठन करो ।
पुरजन – परिजन मिलकर बैठो, कुछ ऐसा संगठन करो।
रात– दिवस में आधा घण्टे, तो अपने सँग न्याय करो।
स्वाध्याय करो , स्वाध्याय करो । तुम प्रतिदिन, स्वाध्याय करो।।

(2)

जिनवाणी से शोभित है जो , वह मंदिर है, नहीं मकान ।
जिनवाणी से शून्य महल को , मुनिवर कहते हैं श्मशान ।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जिनवाणी भव – रोग महौषध , प्रात : संध्या पान करो।
बिन श्रुत केवल ज्ञान न होता , जिन – वच में श्रद्धान करो।
संशय – विभ्रम– मोह विनाशक, माता का सम्मान करो।
स्वाध्याय करो, स्वाध्याय करो । तुम प्रतिदिन , स्वाध्याय करो।।

(3)

स्वाध्याय निरन्तर करने से, मन विषयों से हटता है।
उदासीनता आती है, संसार हमारा घटता है।।
शुभता की आंधी चलने से, पापों के बादल छटते है।
अविपाक निर्जरा के कारण , कर्मो के बंधन कटते हैं।
स्वाध्याय हमें सिखलाता है, मत पुद्गल से प्यार करो।
स्वाध्याय करो, स्वाध्याय करो। तुम प्रतिदिन, स्वाध्याय करो।।

(4)

स्वाध्याय निरन्तर करने से, अन्तस् की आंखें खुलती हैं।
रत्नत्रय पर चलने से, शिवपुर की राहें मिलती हैं।।
हम अपने से जुड़ते हैं निज में निज – दर्शन करते हैं।
आत्मा का अनुभव होने से आनन्द के झरने झरते हैं।
स्वाध्याय हमें सिखलाता है, निज आतम –स्नान करो।
स्वाध्याय करो , स्वाध्याय करो । तुम प्रतिदिन , स्वाध्याय करो।।

(5)

स्वाध्याय निरंतर करने से , कषाय– मन्दता आती है।
मनमर्कट बँध जाने से , उसकी चंचलता जाती है।।
अभ्यास निरन्तर करने से , ज्ञान का सूरज उगता है।
सम्यक श्रद्धा जग जाने से , मिथ्यात्व अंधेरा भगता है।
स्वाध्याय हमें सिखलाता है, हेयोपादेयक ज्ञान करो ।
स्वाध्याय करो , स्वाध्याय करो। तुम प्रतिदिन , स्वाध्याय करो।।

(6)

स्वाध्याय निरन्तर करने से , अतिशय पुण्यार्जन होता है।
फलस्वरूप धीरे –धीरे शुभ राग विसर्जन होता है।
पन्द्रह प्रमाद गल जाने से, व्रत धारण में रुचि होती है।
शुद्धि चतुर्विध के कारण , बुद्धि विकार को खोती है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्वाध्याय हमें सिखलाता है, देव – शास्त्र – गुरु मान करो।
स्वाध्याय करो , स्वाध्याय करो। तुम प्रतिदिन , स्वाध्याय करो।।

(7)

स्वाध्याय निरन्तर करने से, चिन्तन का रूप निखरता है।
गुण – दोष विवेचन के कारण , जीवन मणियों से भरता है।।
पल – पल पारायण पालन से, पर्याय सफल हो जायेगी ।
मन शांत – सिन्धु हो जायेगा , समता क्षमता आ जाएगी।
स्वाध्याय हमें सिखलाता है, तुम ऊर्ध्वगमन रफ्तार करो।
स्वाध्याय कारो , स्वाध्याय करो। तुम प्रतिदिन , स्वाध्याय करो।।

(8)

स्वाध्याय निरन्तर करने से, जीवन में उन्नति होती है।
दीपक से दीपक जलत्ता है, जलती सुज्ञान की ज्योति है।
सद्ज्ञान – वृक्ष फल देता है, मन में सद्भाव पनपते हैं।
करुणा की धारा बहती है, पग –उच्चादर्श उतरते है।।
स्वाध्याय हमें सिखलाता है कभी नहीं अन्याय करो।
स्वाध्याय करो , स्वाध्याय करो। तुम प्रतिदिन , स्वाध्याय करो।।

सन्–2000

स्वाध्याय : परम तप – 57

(१)

सबसे पहले अर्थ समझलें, किसको कहते हैं स्वाध्याय।
"सद् ग्रन्थों का सम्यक् अध्ययन , आत्मनिरीक्षण हेतु उपाय"।।

(२)

स्वाध्याय मस्तिष्क रसायन , अतिशय पुष्टि प्रदाता है।
निज का, निज में, निजके द्वारा , साक्षात्कार कराता है।

(३)

स्वाध्याय अध्ययन दोनों में, अन्तर बहुत कहें विद्वान्।
वह अध्ययन ही कहलायेगा, अगर प्राप्त न तत्व ज्ञान।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४)

नहीं जरूरी पढें ग्रन्थ सौ, लेकिन एक पढें सौ बार।
खूब चबायें, निगल जुगाली करें पचाने बारम्बार।।

(५)

यथा दवाग्नि प्रकट न होती काष्ठ परस्पर रगड़ बिना।
तथा ज्ञान – दीपक न जलता, सतत सुष्ठु स्वाध्याय बिना ।।

(६)

जिनवाणी संजीवनि औषध , जन्म जरा–मृतु का उपचार।
सम्यक् रीत्या स्वाध्याय से, खुलता मुक्तिपुरी का द्वार।।

(७)

स्वाध्याय से लाभ बहुत हैं, ज्ञान बुद्धि विस्तृत आकाश।
दिन –दिन बढ़ती ज्ञान पिपासा, आत्मिक क्षमता पूर्ण विकास।।

(८)

स्वाध्याय मन की खुराक है, होते हैं परिणाम विमल।
मन में शान्ति , चित्त में शुद्धि, स्वाध्याय के अमृत फल।।

(९)

"गुण वाली सूची न गुमती " कुन्दकुन्द के सुष्ठु विचार।
तथा आत्मा का स्वाध्यायी , नहीं भटकता है संसार।।

(१०)

जैसे तन को पुष्ट बनाने, पौष्टिक भोजन है अनिवार्य।
वैसे मन को स्वस्थ बनाना जिनवाणी मां का उपकार।।

(११)

स्वाध्याय को कहा परं तप , करें तपस्वी पुनः– पुनः।
जिसने यह आभूषण पहना, बढ़ती शोभा सहस गुना।।

(१२)

विचार नहीं बासी होते हैं, नित नूतनता आती है।
परिष्कार – परिमार्जन पाकर, ज्ञान कली खिल जाती है।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१३)

स्वाध्याय में करो न आलस, गुरुकुल का दीक्षान्त विचार।
स्वाध्याय तो महायज्ञ है, कृष्ण रचित गीता का सार।।

(१४)

स्वाध्याय दीपक प्रकाश में, पढ़ते जो निजात्म का ग्रंथ ।
वे होते अक्षयपद स्वामी „ कहते गणधरादि निर्ग्रंथ।।

सन्–2002

उपवास : एक अनुचिंतन - 58

(१)

केवल भोजन – पानी तजना , कहते नहीं इसे उपवास।
विषय कषायों को तज देना, ही महत्व रखता है खास ।।
अगर नहीं, तो यह लंघन है जैसे करते हैं बीमार।
अथवा परवश मिले न भोजन ऊपर से पड़ती है मार ।।

(२)

'उप' का अर्थ निकट होता है, और 'वास ' का अर्थ निवास।
पास आत्मा के ही रहना, कहलाता सच्चा उपवास।।
विभाव विलीन होते हैं इससे, आत्मभाव आते हैं पास ।
होने लगता उपवासी का तन, मन, आत्मा, शक्ति विकास।।

(३)

जैसे मदोन्मत्त हाथी का , बली सिंह कर देता नाश ।
जगत् विजेता 'काम' को वैसे कर देता विनष्ट उपवास।।
अथवा जैसे ग्रीष्म ऋतु मे शोषित होता पृथ्वी आप ।
वैसे ही उपवास के द्वारा , जल जाते सब कल्मष –पाप।।

(४)

अन्तर्मन की निर्मलता का, है उपवास उपाय अनन्य।
क्षमता स्फूर्ति – नीरोगदशा को, पाने का नुक्सा न अन्य।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मनस्तोष – वैचारिक शुद्धि – पुण्यप्राप्ति – तन –मन विश्राम।
भव –वन संचित कर्मेधन को दहन हेतु दावाग्नि समान।।

(५)

पंच पाप से रक्षा करता , आत्मजागरण मंत्र महान्।
निरालसी– उत्कंठीमानव, धर्मामृत कर सकता पान।।
हृदय रोग से रक्षा करता, तथा बुढ़ापा रखता दूर।
सबल बनाता निबल जनों को भूख बढ़ाता है भर पूर।।

सन् – 2004

सैर करें हम जिनवाणी उद्यान की : छहढाला-59

आओ भव्यो ! सैर करें हम, जिनवाणी उद्यान की।
जिसमें रमते जाग्रत होती, रुचि आतम कल्याण की।।

(१)

जैसे_ढाल रोकती अरि के तलवारों के बार को।
कर देती है व्यर्थ शत्रु के असि के तीव्र प्रहार को।
वैसे सुकृति यह छहढाला, हमें बचाती पाप से।
रक्षा करती चतुर्गति के भव–भ्रमण संताप से।।
सम्यक् रीत्या राह बताती रत्नत्रय शिव थान की ।
आओ भव्यो ! सैर करें हम छहढ़ाला उद्यान की।।
कवि श्री दौलत राम जी

(२)

वैसे तो रक्षा करने को, एक ढाल पर्याप्त है।
लेकिन भाग्य सराहो अपना, यह छहढाला प्राप्त है।।
फिर भी यदि कल्याण न अपना, तुम कर पाये जागकर।
तब तो तरस हमें आता है, बन्धु तुम्हारे भाग पर।।
अतः आज ही करो प्रतिज्ञा, करने निज कल्याण की
आओ भव्यो ! सैर करें हम छहढाला उद्यान की।।
कवि श्रीं दौलत राम जी।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३)

छहढाला को हिन्दी का लघु समयसार कह सकते हैं।
उमास्वामि के मोक्षशास्त्र की, पूर्ण झलक पा सकते है।।
समन्तभद्र के रत्नकरण्ड के इसमें अनुपम रत्न भरे।
इसको आत्मसात् जो करले, वह निश्चित भव–सिन्धु तरे।
यह अमृत का स्वर्ण कलश, है मंजूषा आतमज्ञान की।
आओ भव्यो! सैर करें हम, छहढाला उद्यान की।।
कवि श्री दौलत राम जी ।

(४)

यद्यपि यह रचना छोटी – सी किन्तु बड़े है काम की।
यह सुबुद्धि का अमृतफल है, पंडित दौलत राम की ।।
बालक – वृद्ध – अशिक्षित – शिक्षित, ले सकते हैं लाभ सभी।
जितने बार पियोगे अमृत, पाजाओगे तुष्टि तभी ।।
जिनवाणी की अनुपम दौलत, कथा है आतम राम की।
आओ भव्यो ! सैर करें हम छहढाला उद्यान की ।।
कविश्री दौलत राम जी।

(५)

काल अनन्त निगोद बिताकर, स्थावर में आया है।
पुण्ययोग से विकलेन्द्रिय फिर पंचेन्द्रिय बन पाया है।।
पशुगति दुःख सहे बहुतेरे, नरकों कष्ट उठाये हैं।
मनुष – देव गति कुछ ना पूछो, दोनों व्यर्थ गंवाये हैं।।
मिथ्यादर्शन के प्रभाव से, नहिं खुद की पहचान की।
आओ भव्यो ! सैर करे हम, छहढाला उद्यान की।।
कवि श्री दौलत राम जी।।

(६)

मिथ्यादर्शन –ज्ञान चरित वश, जीव स्वयं को भूला है।
चतुर्गति के हिंडोले में, रहे झूलता झूला है।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अग्रहीत गृहीत त्रयों के, भेद जिनेन्द्र बताये हैं।
द्वितीयढाल में पंडित जी ने भली भाँति समझाये है।।
चेतन जागो, इनको त्यागो, सुधि लो आत्म कल्याण की।
आओ भव्यो ! सैर करें हम, छहढाला उद्यान की ।।
कवि हैं दौलत राम जी ।

(७)

तृतीय ढाल में रत्नत्रयात्मक, मोक्षमार्ग को पढ़ते हम।
सम्यग्दर्शन कहा गया है, मोक्षमहल सोपान प्रथम।।
मोक्षमार्ग दो रूप बताया, निश्चय का कारण व्यवहार।
यथारीति जो पालन करते, उनका होता बेड़ा पार।।
सम्यदर्शन को पाकर के, नींव रखो उत्थान की।
आओ भव्यों! सैर करें हम, छहढाला उद्यान की।।
रचना दौलतराम की

(८)

सम्यग्दर्शन युक्त ज्ञान ही, सम्यज्ञान कहाता है।
सम्यज्ञानी जन्म–जरा–मृतु से छुटकारा पाता हैं।।
ज्ञान सहित भव्यो, तुम धारो, सम्यक्चारित रत्न महान्।
निरतिंचार व्रतपाले श्रावक, क्रमशः पाता हैं निर्वाण।
दोष, रहित सन्यास मरण ही, सफल परीक्षा ज्ञान की।।
आओ भव्यो सैर करें हम छहढाला उद्यान की।।
जय हो सम्यज्ञान की।।

(६)

बड़भागी निर्ग्रंथ ही केवल, परम मोक्षपद पाते हैं।
भव–तन–भोग विरक्ति हेतु वे, बारहभावन भाते हैं।।
जैसे माता जनै पुत्र को, अथवा हवा जलाती आग।
तथा भावना पैदा करती, ध्याता के मन अनल विराग।।
आत्मज्ञान बिन प्राप्त न होती, महिमा समरस पान की।
आओ भव्यो ! सैर करें हम जिनवाणी उद्यान की।
जय हो सम्यज्ञान की।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१०)

महाव्रतों को मोक्षप्राप्ति का, साक्षात् साधन गाया।
सकल–स्वरूपाचरण रुप द्वय, श्री जिनवर ने बतलाया।।
स्वरूप आचरण निश्चय जानो, सकल रूप व्यवहार कथन।
ध्यान–योग से कर्मनाश कर मुनिवर पाते शिवपत्तन।।
देखो व्यर्थ बीत न जाये, प्राप्त घड़ी कल्याण की।
आओ भव्यो! सैर करें हम, जिनवाणी उद्यान की।।
जय हो सम्यज्ञान की।।

(११)

ऋषम आदि चौबीस जिनेश्वर, वस्तु स्वरूप बताया है।
गणघर गूंथा द्वादशांग में, अनुयोगों में गाया है।।
आचार्यों ने, विद्वानों ने, लिखा तथा लिपिबद्ध किया।
भक्तों ने आदर अंजलि से अघहारी पीयूष पिया।।
आज उसी अमृत को पीने, चलें शरण भगवान की।
आओ भव्यों! सैर करें हम, जिनवाणी उद्यान की।।
कवि श्री दौलत राम जी

(१२)

अनुयोगों की बनीं क्यारियां, सुग्रन्थों के सुमन खिले।
महापुराणों के तरुवर हैं, बैठें उनकी छाँव तले।।
कुन्द कुन्द के कुन्दन से हम, निज आतम श्रृंगार करें।
समन्तभद्र की 'रयण मंजूषा' से हितकर आचार गढ़ें।।
करती है पापों से रक्षा, 'छहढाला' दौलत राम की।
आओ भव्यो ! सैर करें हम जिनवाणी उद्यान की।।
जय हो सम्यज्ञान की।।

सन्–1999

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मोक्षशास्त्र / तत्त्वार्थसूत्र : जीवन का अमृत-60

(१)

मोक्षशास्त्र है सागर गहरा, लिये गगन जैसा विस्तार।
समन्तभद्र, अकलंक देव से, पा न पाये इसका पार।।
गागर में सागर लहराता, जिनदर्शन का तत्व निचोड़ ।
आधार स्तम्भ वीर–वाणी का, ग्रंथ स्वयं में है बेजोड़।।

(२)

सम्यग्दर्शन ताना इसका, बाना इसका सम्यग्ज्ञान।
चारित्र जुलाहा बुनने वाला, मोक्ष समझ लो वस्त्र समान।।
जो इसका पारायण करते, पाते फल निर्मल उपवास।
विषय कषायों से मन हटता, पाप न आते उनके पास।

(३)

तत्वार्थसूत्र जीवन–अमृत है, जिसने इसका पान किया।
मानों उसने जैनागम के, सकल सार को जान लिया।।
सुख–दुख जीवन–मरण द्वन्द्वमें समता को वह पा लेगा।
राग–द्वेष का वर्जन करके, समता को अपना लेगा।।

(४)

आस्रव–बंध दुःख के कारण, हुए विवेचित भली प्रकार।
इनके वशीभूत हो चेतन, भटका करता है संसार।।
संवर–निर्जर सुख फलदायी, कर्मेन्धन को अग्निसमान।
इनका कर्ता शुक्ल ध्यान से, पाता अंतिम पद निर्वाण।

(५)

मोक्ष रहा प्राप्तव्य सभी का, शाश्वत, अक्षय सुख का राज।
नहीं कभी लौटना होता, मिट जाती विषयों की खाज।
बीतें कल्पकाल कितने ही, विकार नहीं कुछ आता है।
यथा–तथा रहते हैं सुख में, यह ही मोक्ष कहाता है।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(६)

यदा निकल जाता आतम से, विष से भरा वासना बाण।
तदा हि चेतन पा लेता है, अविचल, सुखकारी निर्वाण।।
यदा मोह का क्षय हो जाता, तदा प्रकटती मोक्ष दशा।
मोह, मोक्ष का हत्यारा है, उससे ही संसार बसा।।

तरुण चिन्तामणि - 61

प.पू. 108 मुनि श्री तरुण सागर जी की कृति "क्रांतिकारी-सूत्र" (गद्य) (सिर्फ आठ लाइन) का हिन्दी पद्यानुवाद (सिर्फ आठ लाइन में)

(१)

श्रावक जीवन में धन अर्जन,
तथा विसर्जन हो कैसा।
आय अधिक हो बड़े वदन–सी,
व्यय हो छोटे मुख जैसा।।
इस प्रकार मुनिराज कमंडलु,
हमको देता शिक्षा दो।
आय अधिक हो, व्यय हो थोड़ा,
अर्जन साथ विसर्जन हो।।

(२)

आश्चर्यों में आश्चर्य महा यह,
कलियुग होना मुनि बड़भाग।
दिगम्बरत्त्व कोइ भेष नहीं, पर
प्रकृति प्रदत्त रूप वीतराग।।
सब भेषों में कुछ उतारना,
कुछ ओढ़ना पड़ता है।
लेकिन इसमें ना कुछ वैसा,
सभी छोड़ना पड़ता है।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३)

भेष दिगम्बर धारी मुनि के,
तन पर होती लँगोट नहीं।
क्योंकि वे शिशु सम होते हैं,
उन मन होती खोट नहीं।।
जिनके मन होता विकार है,
उन्हें वस्त्र मजबूरी हैं।
निर्विकार होता जिनका मन,
उनको नहीं जरूरीं हैं।।

(४)

कन्या मंगल, कन्या लक्ष्मी,
मंगल घट, लतयाना, पाप।
मंगलकन्या भ्रूण की हत्या,
करना तो है महत्तम पाप।।
इसको रोकें अनुचित है यह,
"बेटी होती घर का दिल ।
जिसके होती नही है बेटी,
उसके होता नहीं हैं दिल।।"

(५)

सतत् करो वृद्धों की संगति,
हर झुर्री अनुभव की खान।
"जो करना शुभ, करो आज ही,
वृद्ध देह सन्देश महान्।।"
सबसे बड़ा केन्द्र शिक्षा का,
धरती पर बूढ़ा इंसान।
कहता हैं "उगते सूरज का,
होता है कैसा अवसान।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प. पू. मुनि श्री तरुणसागर जी के ''कड़वे-प्रवचनों'' का हिन्दी पद्यानुवाद - 62

(१)
हिन्दु–मुस्लिम भाई–भाई, भारत माँ की आँखें दो।
सदियों से रहते आये हैं, हिलमिल कर पय–पानी हो।।
मुसलमान की "राम" जान हैं, हिन्दु के दिल बसे "अली"।
मुसलमान "रमजान" मनाते, हिन्दु मनाते "दीवाली"।।

(२)
सोमवार को जन्म हुआ था, मंगल को हो गये जवान।
बुधवार को विवाह रचाया , गुरु तक हुई पांच संतान।।
शुक्रवार बीमार हो गये , अस्पताल शनिवार गये।
रवि के दिन एलान फिर गया, अ–ब़–स–द–चले गये।।

(३)
मीठे–सह नमकीन जरूरी,मुँह का स्वाद बदलने को।
सुख के संग दुःख आवश्यक,जीवन का रस चखने को।।
दुःख चीज हैं बड़े काम की, प्रभु की याद दिलाने को।
जब पैरों में फटे बिबाई, खोंजें मलम लगाने को।।

(४)
"पितृ देव भव" सुधा वचन हैं, पिता गगन से उच्च महान्।
पुत्र उठे मुझ से भी ऊँचा, रहते हैं उसके अरमान।।
अतः रुपयों सँग पुत्र जेब में, रखो जनक की भी तस्वीर।
क्योंकि सँवारी बड़े यत्न से, उसने बेटे की तगदीर।।

(५)
मकान –दुकान देखकर ऊँची, कभी नहीं करना अभिमान।,
क्योंकि एक दिन तुम न रहोगे, ये गिरकर होंगे श्मशान।।
उग आयेगी घास वहाँ पर, गधा मजे से खायेगा।
जो इनका अभिमान करेगा, अंत समय पछतायेगा।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रज्ञा रत्नावलि - 63

(प.पू. मुनि श्री प्रज्ञासागर जी की कृति ''मेरे आशीष लेते जाओ'' का पद्यानुवाद)

(१)

संत नहीं जीते सुविधा में, सतत् साधना उनका काम।
भौतिकता से दूर सर्वथा, लेते नित ईश्वर का नाम।।
उनसे नहीं मांगना,क्योंकि होते हैं निःसंग मुनीश।
मन–पवित्र चरणों में जाना, देते हैं अमृत आशीष।।

(२)

सत्संगति केशर की कोठी, संस्कारों की लगती छाप।
सदाचार प्ररेणा देती, मन में बैठ, गुप्त – चुपच्चाप"
संस्कार से रँग देते है, संतश्री होते रँगरेज।
मुहर लगा देते हैं अपनी, हो संत्सग भले क्षण एक।।

(३)

जीवन को आनंदित करने, सर्वोत्तम औषधि है ध्यान।
इसमें ऊर्जा व्यर्थ न जाती, शक्ति लगाओ सार्थक काम।।
धर्म नही मंदिर – मस्जिद् बस, किन्तु चिन्तना आठों याम।
नहीं परम्परा का है पालन, किन्तु सत्य का अनुसंधान।।

(४)

धर्म नहीं मंदिर मस्जिद् में, किन्तु वास करता शुचिमन ।
अतः जरूरी चित्त भी माँजे, धर्म प्राप्ति इच्छुक सज्जन।।
भौतिक सुविधाएं न धर्मफल, बल्कि शांति – उत्साह – उमंग।
वैभव तो मिलता है श्रम से, धर्म से मिलता है आनन्द।।

(५)

जीवन भोग – योग द्रोनो है जैसा जो करले उपयोग।
अगर गुजारा मात्र, भोग है, अगर सुधारा तो है योग ।।
जीवन प्राप्त हुआ है तुमको केवल नहीं गुजारें ही।
किन्तु मृत्यु को जानकर जिएँ, ढोयें नहीं सुधारे भी।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्व-रचित कृतियों के चयनित सुभाषित - 64

(१)

जयजिनेन्द्र की ध्वनि से जबतक, देवालय गूँजेंगे।
घिसचन्दन का तिलक लगा, जन जिनवर को पूजेंगे ।।
जबतक जिनगृह के शिखरों पर, केशरिया फहरेगा।
तबतक नाम तुम्हारा प्रियवर! जग में बना रहेगा।।

सेरौन–सुषमा–1972

(२)

बूंद–बूंद से घट भरता है, कण–कण से भरता भंडार।
एक–एक पग चलते–चलते, आ जाता है पथ का पार।।
अगर सभी मिल हाथ बढ़ाएँ नहीं है कोई मुश्किल काम।
अनायास ही क्षेत्र बनेगा, नव्य–भव्य–सुन्दर–अभिराम।।

कोनी–दर्शन–1975

(3)

तिनके अलग–अलग रहते हैं, उनमें होता जोड़ नहीं।
मिलकर जब रस्सी बन जाते, गज भी सकता तोड़ नहीं।।
लकड़ी एक अकेली अबला, कोई न आदर पाती है।
मिलकर अब गट्ठा बनजाती, शिर ऊपर चढ़ जाती है।।

शास्त्रि परिषद् का सुनहरा सफर–2008

(४)

वह जीवन भी क्या जीवन है, जिसमें होते ना संघर्ष।
सच मानों तो संघर्षो से, जीवन पाता है उत्कर्ष।।
अगर राम बस महलों रहते, तो वे रहते राजा राम।
गये विपिन में, रावण मारा, वे लौटे बनकर भगवान ।।

सहजानन्दशतक–2006

(५)

बिना डोरवाली पतंग तो, कहाँ गिरेगी पता नहीं।
बिन संयम वाले की दुर्गति, कोई सकता बता नहीं।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बिना वाद्य संगीत शून्य है, बिना कसे ना बजे सितार।
बिन बल्गा का अश्व व्यर्थ है, बिना ब्रैक की सुन्दर कारना।।

सदलगा के संत—1998

(६)

विद्या देती विनयशीलता, बनतां है व्यक्तित्व महान्।
पशुता से ऊपर उठ मानव, करता जीवन का निर्माण।।
विद्या से मिलता समाज में, यशः कीर्ति, वैभव सम्मान।
विद्या तो है मर्त्यलोक में, प्राप्त हुआ उत्तम वरदान।।

संस्कृति प्रहरी मुनिसुधासागर—2003

(७)

केवल पास परीक्षा करना, नहीं ज्ञान की है पहचान।
आद्योपान्त हृदय में उतरे, तब हो पाता सच्चा ज्ञान।।
अतः हुए तन्मय पढ़ने में, शब्द—शब्द कण्ठस्थ किया।
अल्प समय में सब शास्त्रों का, स्वयं बना—रस चूसलिया।।

ज्ञानसागर—शतक,—2002

(८)

चिड़िया तिनका चोंच दबाए, करने चली सिन्धु बंधान।
जिसने देखा, उसने टोका, तू पगली, मूरख, नादान।।
लेकिन उसने एक न मानी, बोली करना मेरा काम।
पुरुषार्थी बढ़ते ही रहते, करते नही बीच विश्राम।।

गाणिनीज्ञानमती महाकाव्य—2008

(६)

ज्ञानदान ही महादान है, सभी इसे करते स्वीकार।
कुन्दकुन्द ने कहा ज्ञान ही है, मानव जीवन का सार।।

सिरौज के जैन मंदिर—1989

(१०)

कुछ जन अपनी संतानों को, दे जाते धन अपरम्पार।
किन्तु नहीं वे दे पाते हैं बच्चों को उत्तम संस्कार।।
संस्कार ही सच्ची दौलत, बच्चों को देकर जायें।
उनसे कह दो वे भी इसको, अगली पीढ़ी पहुँचायें।

भोपाल के जैन मंदिर—2009

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(११)

जैसे पक्षी पंख पसारे, सरपट दूर चला जाता।
तथा समय का पता न चलता, पलक झपकते नश जाता।।

कलातीर्थः सांगानेर–2007

संस्कार मानव जीवन में, रखते हैं उत्तम स्थान-65

(१)

'संस्कार' मानव जीवन में, रखते हैं उत्तम स्थान।
सर में कंज, सरित में अम्बु, लता सुमन, तरु में फल जान।।
मणि के बिना न शोभा पाती, स्वर्ण मुद्रिका सुन्दरभी।
निर्गुण मानव सभ्य समामें, आदर पा सकता न कभी।।

(२)

बिन संस्कार न कीमत पाता, 'हीरा' रहता बस पाषाण।
राजमुकुट में शोभा पाता, जब वह चढ़ जाता है शाण।।
संस्कार पालने पाकर, कुन्दकुन्द हो गये महान्।
माता जैसा दूध पिलाती, वैसी बन जाती संतान।।

(३)

अतः जरूरी बाल्यकाल में, ही आरोपित हों संस्कार।
कच्ची मिट्टी को हम चाहें वैसा दे सकते आकार।।
जैसे नये–नये वर्तन में, जो अंकित हो जाता नाम।
जीवन भर पहचाना जाता, वर्तन मिटता, मिटे न नाम।।

(४)

बाल्यकाल के संस्कार से, जीवन पाता सदा प्रकाश।
वृक्ष बड़ा होता है ज्यों–ज्यों, पाता अंकन तथा विकास।।
माली का संसर्ग प्राप्त कर, लता, वृक्ष चढ़ जाती है।
फिर तो वह आगे ही आगे, प्रतिदिन बढ़ती जाती है।।

(५)

माता एक संत से बोली–"स्वामिन् ! बालक दें संस्कार।"
कहा संत ने माते ! तुमने, अब तो कर दी बहुत अवार।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जब हो बालक गर्भ में आया, तब से उसका रखना ध्यान।
अभिमन्यु नें गर्भ में पाया, चक्रव्यूह प्रवेश का ज्ञान।।

(६)

धन–दौलत या महल अटारी, दे जाते जो मात–पिता।
किन्तु बिना संस्कार के जीवन, रहती है अपूर्ण कविता।।
बिन संस्कार नहीं जीवन में, आ पाता है कोई रस।
जैसे बिन सिन्दूर न शोभे, विधवा का जीवन नीरस।।

(७)

संस्कार हो जाने पर ही, भाषा में आता उत्कर्ष।
संस्कारवान पाते हैं सकल जगत् में मोद–विहर्ष।।
संस्कारित्त पीतल का कलशा, शोभा पाता देव–शिखर।
उसके ऊपर ध्वज लहराता, चहुँदिशि जाती कीर्ति बिखर।।

(८)

जैसे पंचतत्व का पुतला, बिना प्राण के मानव–तन।
वैसे ही संस्कार के बिना, अर्थहीन मानव–जीवन।।
अतः चाहिये सभी जनों को, जीवन में लायें संस्कार।
"सुन्दर मन हो, सुन्दर वाणी, सुन्दर हों आचार–विचार।।"

सन्–1996

जीवन की रेल-66

रेल चली भई रेल चली, यह जीवन की रेल चली।

(१)

कभी चीखती औ चिल्लाती, आहें भरती, अश्रु बहाती।
और स्वयं को कभी सजाती, हर्षाती आनन्द मनाती।।
दुःख और सुख की पटरी पर, करती ठेलम–ठेल चली।
रेल चली भई रेल चली ....

(२)

कुछ हैं आते, कुछ हैं जाते, ना सँग आते, ना सँग जाते।
सब झूठे हैं रिश्ते–नाते, आखिर सभी छोड़ हैं जाते।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विरह–मिलन के दुख–दर्दो को, लौह वक्ष पर झेल चली।
रेल चली भई रेल चली ....

(३)

पथ हो सरल या कि लचकीला, नीचा–ऊँचा या पथरीला।
भले विपति का दल–दल भी हो, या सम्पति का विमल सलिल हो
समता और विषमताओं से, करती अपना मेल चली।
रेल चली भई रेल चली ....

(४)

कभी शूल हैं कभी फूल हैं, कभी भँवर हैं कभी कूल हैं।
कभी नही हैं तन पर कपड़े और कभी सौ–सौ दुकूल हैं।।
फूल–शूल–के सब सुख संकट, समय–समय पर झेल चली।
रेल चली भई रेल चली ....

सन्–1966

सुख और दुख - 67

(१)

अस्थिर जग है, अस्थिर जीवन,
सुख–दुख की आँख मिचौनी है।
आने–जाने की धूप–छाँव,
दो दिन की कथा सलौनी है।।

जो आया है, सो जायेगा,
जीवन का क्रम है अटल यही।
सदा न पूनम रही कहीं पर,
सदा अमावस नहीं रही।।

मत सुख में फूलो, मुस्काओं, मत दुख में हा हा कार करो।
जीवन में सुख–दुख दोनों हैं, दोनों का जय–जयकार करो।।

(२)

कष्टों की बाधा को सहकर
मानव पुरुषार्थ चमकता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आगी की ज्वाला में तप कर,
कुन्दन का तेज दमकता है।।

काटों में उग, खिलने वाले,
पुष्पों में होता है सौरभ।
कष्टों से लड़ जीने वाले,
मानव ही पाते हैं गौरव।।

दुख तो परम हितैषी है, उसका स्वागत–सत्कार करो।
जीवन में सुख–दुख दोनों हैं, दोनों का जय–जयकार करो।।

(३)

सुख में मदिरा का पागलपन,
दुख में विवेक जाग्रत होता।
दुख में जो अडिग, सुधीर रहा,
जंग में विशेष आदृत होता।।

सुख है जमुहाता स्वप्न लोक,
दुख कार्य क्षेत्र दिखलाता है।
सुख में साथी–स्वजनों की
दुख पहचान कराता है।।

सुख में मत भूलो अपनो को, दुख में मत मनुहार करो।
जीवन में सुख–दुख दोनों हैं, दोनों का जय–जयकार करो।।

सन्–1966

दुख आया तो बन्धु ! समझ लो, प्रभु सुमरन का मौसम आया - 68

(१)

सुख–दुख आँख मिचौनी जीवन, एक गया तो दूजा आया।
सदा नहीं रुकता है कोई, अस्थिर ज्यों बादल की छाया।। दुख ......

(२)

समय–चक्र चलता ही रहता, सुख–दुखादि हैं उसके आरे।
मार समय की सब पर पड़ती, कोइ न उससे बचने पाया।। दुख ......

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३)

सुख के दिन जब नहीं रहें तो, दुख के दिन भी नहीं रहेंगे।
दुख में भी सुख–अमृत पीते, साम्यभाव जिनके मन भाया।। दुख ....

(४)

चला गया जो उसे बधाई, जो आया उसकी अगुवाई।
दोनों हैं मेहमान हमारे, कृत कर्मों ने उन्हें बुलाया।। दुख.......

(५)

बोलो दुःख अगर न आते, तो ईश्वर को कौन मनाता।
बलिहारी दुखराज तुम्हारी, तुमने ईश्वर याद दिलाया।। दुख.......

(६)

अग्नि परीक्षा देकर पत्थर, पाता है कंचन की काया।
काँटों में खिलते पुष्पों ही, सौन्दर्य–सौरभ धन पाया।। दुख.......

(७)

सुख में सबको भूले रहते, दुख में याद सभी की आती।
दुख में ही परखा जाता है, कौन है अपना कौन पराया।। दुख.......

(८)

हँस–हँस कर जो पाप किये हैं, उनका फल यह दुख का सागर।
स्वीकारो सब साम्यभाव से. जो औ जैसा सामने आया।। दुख......

(९)

सुख में प्रभु की याद् न आती, दुख ने प्रभु की याद दिलाई।
दुख आया तो बन्धु ! समझलो, प्रभु सुमरन का मौसम आया।। दुख.......

(१०)

सुख में गैर, सगे बन जाते, दुख में सगे, गैर हो जाते।
कौन सगा है, कौन गैर है, दुःख कसौटी ने बतलाया।। दुख.......

(११)

जहर और अमृत दोनों से, भरा हुआ जीवन का प्याला।
अपना नाम अमर कर जाता, गर समझदार हो पीने वाला।। दुख......

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१२)

सुख को यदि मिष्ठान्न कहें तो, फिर दुख को नमकीन समझलो।
दोनों में सन्तुलन रखें तो, जीवन–स्वाद अधिकतम पाया।। दुख.......

(१३)

सघन तिमिर वाली रजनी में, दीपक सबके मन को भाया।
दुख की शिला पड़ी जब शिर पै. सुख का मूल्य समझ में आया।। दुख.......

(१४)

सुक्ख और दुक्ख दोनों ही, हैं अपनी ही करनी के फल।
किसी कवि ने ठीक कहा है, जैसा बोया वैसा पाया।। दुख.......

सन्–2010

करुणा भाव जगा जिनके मन, उनको धन्यवाद है मेरा - 69

(१)

मानव हों या पशु–पक्षी हों, सब में होते प्राण समान।
"ये सब ईश्वर की रचना हैं, यही बताते वेद–पुराण।।
एक ब्रह्म ही बसता सबमें, सबमें है उसका ही डेरा।"
करुणा भाव जगा जिनके मन, उनको धन्यवाद है मेरा

(२)

मरी खाल की सांसों द्वारा, भस्म लौह तक हो जाता है।
दीन–दुखी की लगे बद् दुआ, कोई न उससे बच पाता है
इनकी दुआ, दवा से बढ़कर, इसमें है कल्याण बसेरा।
करुणा भाव जगा जिनके मन, उनको धन्यवाद है मेरा।।

(३)

अगर किसी के प्राण हरोगे, तुमरे प्राण हरे जायेंगे।
अगर करोगे किसी की सेवा, तो मीठा मेवा पाओगे।।
हर ले पर पीड़ा को मानव, हो नर जन्म सफल यह तेरा
करुणा भाव जगा जिनके मन, उनको धन्यवाद है मेरा।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४)
कीरी–कुंजर–मानव सब ही, हैं आपस में भाई–भाई।
किन्तु हाय देखो भाई ने, भाई पै तलवार चलाई।।
सुई अगर लगती है तुझको, क्यों सिहर–सिहर जाता तन तेरा
करुणा भाव जगा जिनके मन, उनको धन्यवाद है मेरा

(५)
हिंसा की काली रजनी में, जिसने दीपक प्रेम जलाया।
पीड़ा के गहरे घावों में, कुशल–क्षेम का मलम लगाया।।
मानवता के आँसू पौंछें, दीन–दुखी को गले लगाया।
जियो और जीने दो सब को, का अनुपम सन्देश सुनाया।।
ऐसे पुण्य पुरुष चरणों में, बारम्बार नमन है मेरा।

सन्–1994

किसी जीव को नहीं सताना, सबसे उत्तम धर्म है–70

(१)
जितने भी हैं जीव जगत में, सबको जीवन प्यारा है।
कर्म वशात् चतुर्गति भटके, यथायोग्य तन धारा हैं।।
अच्छी गति वे ही पाते हैं, जो करते सत्कर्म हैं।
किसी जीव को नहीं सताना, सबसे उत्तम धर्म हैं।।

(२)
आज सतायेगा जो जिसको, कल वह उसे सतायेगा।
जो भी जैसा बीज बोयगा, वैसा ही फल पायेगा।।
गीता– वेद–कुरान सभी, ग्रन्थों का एक ही मर्म हैं।
किसी जीव को नहीं सताना, सबसे उत्तम धर्म हैं।।

(३)
सुई की नोंक तुम्हें दुख देती, रोते हो, चिल्लाते हो।
फिर क्यों अरे किसी प्राणी पर, तुम तलवार चलाते हो।।
प्राणिमात्र पर करुणा धारो, सदा करो शुभ कर्म हैं।
किसी जीव को नहीं सताना, सबसे उत्तम धर्म हैं।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४)

पुराण अठाह रचे व्यासने, दो वचनों में सार कहा।
परोपकार ही महापुण्य है, पर पीड़न है पाप महा।।
निजकल्याण वही कर पाता, जो मन–वच–काया–नर्म हैं।
किसी जीव को नहीं सताना, सबसे उत्तम धर्म हैं।।

सन्–1990

अंडा शाकाहार नहीं हैं–71

(१)

पैदा होते नहीं खेत में, जैसे गेहूँ–गन्ना।
नहीं निकलते हैं खदान से, जैसे हीरा–पन्ना।।
नहीं पेड़ पर वे फलते हैं, जैसे केला–आम।
और लता पर नहीं लटकते, जैसे दाख–बादाम।
वे प्राणी से पैदा होते, होते उनमें प्राण भी।
अंडा शाकाहार नहीं है, कहता है विज्ञान भी।।

(२)

जब अंडा पक जाता पूरा, चूजा बन जाता है।
पूरा हाड़–मांस का पक्षी, बाहर आ जाता है।
यत्र–तत्र के मल को खाकर, भरता अपना पेट है।।
उसे कमा कर देने वाला, कोई न होता सेठ है।।
वह है हाड़–मांस का पुतला, फल–मेवा आधार नहीं हैं।
अंडा शाकाहार नही हैं, अंडा शाकाहार नहीं हैं।।

सन्–2000

गाय – 72

(१)

गाय दया की सुन्दर कविता, भोलेपन की रामायण।
मैत्री–प्रेम–धर्म–वत्सलता, रोम–रोम करता गायन।।
सात्विकता–सन्तोष–प्रशमता, मूर्तिमान गीता उपदेश।
मिलता है गौ के जीवन से, सरल–सादगी का संदेश।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२)

राम–कृष्ण–महावीर–बुद्धने, गौ के गुण का गान किया।
करुणामय उपदेशों द्वारा, संरक्षण–सम्मान दियां।।
घर–घर में घी–दूध की नदियाँ, इसी निरीह पशु की हैं दैन।
गौ–पालन जिस घर में होता, उस घर में रहते सुख–चैन।।

(३)

एक अकेली सब घर पालै, खाकर रूखा–सूखा घास।
मावा–रबड़ी, लड्डू–पेड़ा, हमें खिलाती बारह मास।।
निज पुत्रों से खेत जुताती, जगती को उपजाती अन्न।
ऐसी उपकारी–वरदायी, गौ माता सचमुच है धन्य।।

(४)

दूध रहा धरती का अमृत, पीने वाला पाता बल।
स्वर्ग छोड़ भू लोक में आया, तेतीस करोड़ देवता दल।
जब माँ जाती छोड़ शिशु को, उसे कौन दे सुख–साता।
निज बेटे का हिस्सा देकर, उसे पालती गौ–माता।।

(५)

जग जीवों में सर्वश्रेष्ठ यह, इसमें भरा दूध भंडार।
चलता–फिरता बिजली घर है, है जीवित औषध आगार।।
प्रकृतिदत्त कारखाना है, नाशक कीट दवाओं का ।
सदा बना रहता है मौसम, घर में स्वस्थ हवाओं का।।

(६)

भारतीय आर्थिक जीवन की, गाय रीढ़ कहलाती है।
वरदानों को लिखते–लिखते, कलम स्वयं थक जाती है।।
जीवन भर देती ही रहती, मर कर भी दे जाती है।
इन अनमोल गुणों के कारण, गौ, माता कहलाती है।।

(७)

प्रकृति और पशु सम्पूरक बन, देते हैं जीवन को क्रम।
मानव ने जाना रहस्य यह, वैसे ये, जैसे हैं हम।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हो संरक्षण इन दोनों का, आदि काल का नारा है।
आदि–वीर–शिव– श्रीकृष्ण ने, इनको दिया सहारा है।।

(८)

आचार्य श्री विद्यासागर ने, गौ शालायें खुलवा कर।
धर्म अहिंसा परम धर्म है, यह उपदेश दिया हितकर।।
गाय पशु केवल प्रतीक है, प्राणि–प्रकृति पर दया करो।
सब धर्मों का सार दया है, सब की रक्षा किया करो।।

बासौदा गजरथ, 2008

अपना किया भोगता मानव – 73

(१)

ऊँचे– ऊँचे महल–अटारी, उनमें करता कोइ किलोल।
और कोई होता वनवासी, सत्तू को पीता है घोल।।

(२)

कोइ होते भाग्यवंत हैं, यात्रा करते हो असवार।
कोई होते निपट अभागे, ढोंय पालकी बने कहार।।

(३)

तीन बेर मिलते हैं खाने, ऐसे भी होते हैं लोग।
कोई तीन बार खाते हैं, षट्‌रस व्यंजन, छप्पन भोग।।

(४)

जिसने शूल बिछाये मग में, फूल नहीं वह पाता है।
जिसने पेड़ बबूल लगाये, आम नहीं खा पाता है।।

(५)

जिसने बांटा सुख दुनिया को, पा जाता वह सुख की खानि।
जिसने प्यार दिया दुनिया को पाता है आदर –सम्मान।।

(६)

जैसा हम बोते जीवन में, वैसा ही पाते हैं फल।
जैसा आज करेगा मानव, वैसा की मिल जाता कल।।

(७)

सच है सुख–दुख कोइ न देता, नर–पशु–शत्रु–मित्र या दानव।
जैसा जिसने किया पूर्व में, अपना किया भोगता मानव।।

कविता मंदिर, जुलाई –2006

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जब तक मन-घट भरा नहीं - 74

(१)

तरणी हो पुष्कर में, यह जगरीति उचित है।
पर, नौका में जल होना, सभी भाँति अनुचित है।।
तुम भले रहो दुनिया में, ज्यों पंकज अविकारी।
पर, जगत् तुम्हारे मन में, यह असाध्य बीमारी।।
जब तक मन में त्याग न हो, तो वन में रहने से क्या होगा।
जब तक मन–घट भरा नहीं, तो पन–घट भरने से क्या होगा।।

(२)

इच्छायें सुरसा–सी दिन–दूना वदन बढातीं।
तृष्णायें अनल–शिखा बन, रक्तिम यौवन दिखलातीं।।
नभ–चुम्बी कई महल हैं, हैं अरबों के भंडारी।
पर, वशीभूत तृष्णा के, व्याकुल ज्यों दीन–भिखारी।।
जब तक मंशा भरी नहीं, तो बक्सा भरने से क्या होगा।
जब तक मन–घट भरा नहीं, तो पन–घट भरने से क्या होगा।।

(३)

ऊपर से हैं त्यागी, पर भीतर निपट अँधेरा।
पाप–कषायें बैठी हैं, डाले मन में डेरा।।
तन–मन की लंपटता, अमरबेल–सी फैली।
बा–बाजी होकर भी, खाली तृष्णा की थैली।।
जब तक स्वादु मिटे नहीं, तो साधु बनने से क्या होगा।
जब तक मन–घट भरा नहीं, तो पन–घट भरने से क्या होगा।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

निशिभोजन त्याग-छटवां अणुव्रत - 75

(१)

आचार्यों ने कहे जब
गृहस्थों के व्रत,
बताया उन्होंने तब
निशिभोजन त्याग को
छटवां अणुव्रत।
इसलिये
हिंसा का त्याग
असत्य का परित्याग
अचौर्य और ब्रह्म से
आत्मिक अनुराग
परिग्रह से निर्ममत्व
रखता न कुछ महत्व
जब तक कि बैठा है,
अंतस में पैठा है
निशिभोजन का नाग
प्रथम ही जरूरी है
इसका परित्याग

(२)

क्योंकि
जब डूबता है दिनकर
तब उड़ते हैं मच्छर
करते हैं, भोजन को
दूषित, विषाक्त
शीघ्र और सत्वर
जबकि
दिन में दिवाकर की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अल्ट्रावायलेट किरणें
देती हैं भोजन को
न सड़ने, न गलने
करती हैं कीटाणुओं का ह्रास
अनुत्पत्ति, विनाश

अतः
तन–मन की स्वच्छता
यदि चाहते हो पूरी
तो दिन में ही भोजन
है करना जरूरी।

(३)

रजनी के तम में
जो दृष्टि के अयोग्य हैं।
ऐसे अनेक कीटाणु
होते हमारे भोज्य हैं।
फलस्वरूप अस्पताल
हो जाते घर हैं।
सुने गये अनेकशः
मरते नारी–नर हैं।
एक दो के मरने की
नहीं कोई बात है
देखी गई होती साफ
पूरी बारात है।

(४)

विश्राम हित रजनी
औ कर्म को वासर हैं।
रात्रि में खाते बस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पशु और निशाचर हैं।
रात्रि के पहले ही
भोजन करो बन्द
कहते 'योगशास्त्र' में
महाराज 'हेमचन्द्र'।
'मनुस्मृति' 'यजुर्वेद की
कहता हूँ बात मैं
"दैत्य और दानव ही
खाते हैं रात में।"

(५)

रात्रिभुक्त अन्न भी
मांस के बराबर है।
पिया गया जल तो
रुधिर ही सरासर है
वैदिकी ग्रन्थों में भी
इस तत्थ्व का उल्लेख है
मार्कंडेय ऋषि का यह प्रसिद्ध लेख है।
"रात्रि का भोजन सब पापों की खान है"
इस सत्य को बताता 'अरण्यपुराण' है।

(६)

नरक में जाने के
चार हैं रास्ते।
उनमें से एक द्वार
निशिभोजी के वास्ते।
और इसका त्याग तो
स्वर्ग का सोपान है
बताता है इसको
"महाभारत" महान है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रात्रि के आहार को
छोड़ते विचारवान
स्वास्थ्य की संपदा का वे पाते हैं, फल महान्।
वर्ष में छै मास का वे करते है, उपवास
कहते हैं ये वचन 'कार्तिकेय' 'वेदव्यास'

(७)

डॉक्टर बताते हैं
स्वास्थ्य कीं दवा
दिन में करो भोजन
खाओ सुबह,की हवा
उच्च्य रक्त चाप का
दमा और श्वांस का
एक मूल कारण है,
भोजन ही रात का
इसलिये
जियो खुद और को भी जीने दों
जीवन सुधा पियो खुद और को भी पीने दो।
महावीर की वाणी का बस यही सार है
रात्रि में भोजन करना निस्सार है।।

सन्–1989

हित बोलो – 76

(१)

बोलो, जो हितकारी हो, निज–पर मंगल कारी हो।
देखो, मर्मच्छेद नहीं हो आगम का उंच्छेद नहीं हो।।

(२)

हो कठोर ना पाहन जैसा, नहीं कटुक हो तूमड़ जैसा।
काषायिक सम्बन्ध नहीं हो राग–द्वेष की गंध नहीं हो।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३)

बने न चम्मच –कांटा–छुरी,होवे हलुवा–खीर पुरी।
गीली हो ना आँख किसी की फुलझड़ियाँ झड़ जाये हँसी की।।

मित बोलो – 77

(१)

कम बोलो और काम का बोलो, पानी जैसा छान के बोलो।
सोना जैसा तौल के बोलों, मन की खिड़की खोल के बोलों।।

(२)

शब्द सम्पदा निश्चय मानों, शब्द–शब्द की कीमत जानों।
कमी रहे ना, अधिक कहो ना, जैसा है वैसा की होना।

(३)

वैपरीत्य–सन्देह रहित हो, नहीं किसी का कभी अहित हो
करो कभी न झूठा वादा, नहीं बाद में हो पछतावा।।

सन्–1977

प्रिय बोलो – 78

(१)

मीठा बोलो, कोमल बोलो, मक्खन–मिश्री सबमें घोलों।
करो न निन्दा, कहो न झूठ, रहो न अकड़े जैसे ठूंठ।।

(२)

रह जाये न मात्र दिखावा, बन जाये न कही छलावा।
देखो वाणी वाण बने ना, मन में किंचित् घाव करे ना ।।

(३)

शब्द करें मघुमय गुंजार, वीणा के बजते ज्यों तार।
हर दम इतना रखना ध्यान, करता हो सबका कल्याण।।

सन्–1977

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बोलो कम और तौलो ज्यादा - 79

बोलो कम और तौलों
ज्यादा
हो हर वाक्य हर शब्द,
आडम्बर विहीन पूर्णतः सादा
सादा हों पर हो वजनदार
न व्यंगय, न चुटकी,
न प्रहार न वैर न विरोध न अहं
सदा कहो
सत्यं– शिवं– सुन्दरम्

सन्–1977

रक्षाबंधन - 80

(१)

भारत है पर्वों का देश, पर्व हमें देते सन्देश।
हम तो भूल इन्हें, सो जाते, ये खुद आकार हमें जगाते।।
बतलाते जीवन उद्देश, भारत है पर्वों का देश।।

(२)

रक्षाबंधन आया आज, "रखना है बहनों की लाज।
रहे सुरक्षित भारत–माता, रक्षाबंधन याद दिलाता।।
दुश्मन है चालाक विशेष," भारत है पर्वों का देश।।

(३)

इतिहास हमें बतलाता है, बीती याद दिलाता है।
खड़े रोंगटे हो जाते हैं, जब गाथा सुनते – गाते है।।
रोने लगते हृदय अशेष, भारत है पर्वों का देश।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४)

सात शतक मुनियों का संघ, हुआ उपस्थित विपति प्रसंग।
चारों ओर यज्ञ की ज्वाला, बीचों – बीच उन्हें बैठाला।।
रुँधे धूम से गले अशेष, भारत है पर्वों का देश।।

(५)

राजा बलि की थी करतूत, उसे द्वेष का लगा था भूत।
श्रवण नाम का चमका तारा, विष्णुकुमार ने भूत उतारा।।
तब बच गये मुनिराज अशेष, भारत है पर्वों का देश।।

(६)

आज हुई, मुनियों की रक्षा, आज हुई जिनधर्म सुरक्षा।
अगर रहेंगे जग में संत, धरती पर विखरेगा बसंत।।
उन चरणों में नमन हमेश, भारत है पर्वों का देश।।

(७)

तुमसे आज मुझे है कहना, सबको आज शपथ है लेना।
" इनको कष्ट न होने पाये, चाहे जान भले ही जाये।।"
गुरुवर तो होते परमेश, भारत है पर्वों का देश।।

(८)

बंधन है संयम का नाम, यह आता है सबके काम।
संयम बिन जीवन बेकार, चाहे हो काया या कार।।
बिन संयम क्षण जाय न लेश, भारत है पर्वों का देश।।

(९)

जब पतंग में डोर न होती, तो वह अपना जीवन खोती।
इज्जत लुटती भरे बजार, अंग–अंग हो जाते छार।।
बँध कर उड़ती उच्च प्रदेश, भारत है पर्वों का देश।।

(१०)

"सरिता, सिन्धु तभी बनती है, जब तट का बंधन सहती है।
तीरथ बनते उसके कूल, अर्पित होते श्रद्धा फूल।।"
यही पर्व का है उपदेश, भारत है पर्वों का देश।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(११)

मानव तन को सार्थक करने, भव सागर से सम्यक् तरने।
तन को बांधो, मन को बांधो, संयम से जीवन को साधो।।
संयम से ही बने जिनेश, भारत है पर्वों का देश।।

सन्–1998

पर्वराज पर्यूषण आओ .... – 81

(१)

क्रोध भमकती अग्निज्वाला, क्षमा भाव समता का प्याला।
सबको जी – भर रोज पिलाओ, पर्वराज पर्यूषण आओ ।।१।।

(२)

मान महाविष, हालाहल है, विनयी पाता मोक्ष महल है
मन मृदुता के भाव जगाओ, पर्वराज पर्यूषण आओ ।।२।।

(३)

ऋजुता है सब गुण की खान, माया ठगिनी लेती प्राण।
सबको आर्जव पाठ पढ़ाओ, पर्वराज पर्यूषण आओ ।।३।।

(४)

सत्य तो है परमात्म स्वरूप, झूठा गिरे नरक के कूप।
सच को आसन उच्च दिलाओ, पर्वराज पर्यूषण आओ ।।४।।

(५)

शुचिता है आतम श्रृंगार, खोले मुक्ति नगर का द्वार।
लोभ 'पाप का बाप' भगाओ, पर्वराज पर्यूषण आओ ।।५।।

(६)

संयम यम को लेता जीत, इंद्रिय – निग्रह से कर प्रीत।
जगती पर करुणा बरसाओ, पर्वराज पर्यूषण आओ ।।६।।

(७)

तप – सांकल से मन का हाथी, बँध कर होता शिव का साथी।
श्रुताभ्यास में उसे लगाओ, पर्वराज पर्यूषण आओ ।।७।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(८)

त्याग शांति का द्वार खोलता, जीवन में पीयूष घोलता।
स्व – पर हितैषी लक्ष्य बनाओ, पर्वराज पर्यूषण आओ ।।८।।

(९)

तृष्णा भाग, उठा ले डेरा, बस, केवल आतम ही मेरा।
फाँस – परिग्रह – पोट नशाओ, पर्वराज पर्यूषण आओ ।।९।।

(१०)

ब्रहाभाव अन्तर की ज्योति, आकर यहाँ प्रकाशित होती।
इस सूरज को शीस नमाओ, पर्वराज पर्यूषण आओ ।।१०।।

सन्–2001

दशलक्षण की गंगा में आतम को अवगाहो - 82

(१)

उत्तम क्षमा – मार्दव – आर्जव, शौच – सत्य को जानो।
संयम – तपस्त्याग – आकिंचन, ब्रह्मचर्य पहचानो।।
इनके उल्टे क्रोध – मान अरु, माया – लोभ कषायें।
हिंसा आदिक पांच पाप मिल, प्राणी को भटकायें।।
जगत दुखों से पिंड छुड़ाकर, यदि अक्षय सुख चाहो।
तो दशलक्षण की गंगा में, आतम को अवगाहो।।

(२)

उत्तमक्षमा

क्रोध भंयकर नाग विषैला, बार न जाये खाली।
इसने मुनिवर द्वैपायन की, भी दुर्गति कर डाली।।
क्रोध बैर के दांत नुकीले, मिटें न इसके लेखे।
देखो भैया! कमठ जीव ने, दस भव तक दुख देखे।।
क्रोध आग को क्षमा सलिल से, अगर बुझना चाहो।
तो दशलक्षण की गंगा में, आतम को अवगाहो।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३)

उत्तममार्दव

मान महाविष इसको पीकर, प्राणी नीच कहाता।
पीने में तो मीठा लगता, पर कड़ुवा फल पाता।।
मान जाल में जो भी उलझे, फिर वे सुलझ न पाये।
इकलख पूत, सवा लख नाती, काल के गाल समाये।।
मार्दव के अमृत को पीकर, अगर शांति – सुख चाहो।
तो दशलक्षण की गंगा में, आतम को अवगाहो।।

(४)

उत्तमआर्जव

मायाचारी – कपट – छलावा, बड़े नरक के द्वारे।
मकडजाल मायावी उलझें फिरते मारे – मारे।।
सरल स्वभावी पाय सम्पदा, लक्ष्मी पुण्य की चेरी।
छल से प्राप्त नहीं होती है, बढ़े पाप की ढेरी।
मन – वच – काया – ऋजुता पाकर, अगर मोक्ष पद् चाहो।
तो दश क्षण की गंगा में, आतम को अवगाहो।।

(५)

उत्तमसत्य

सत्य धर्म का प्राण कहा है, साँच को आंच न आये।
सांचे को सांचा मिलता है, सांचे मांहि समाये।।
जहाँ अहिंसा की रक्षा हो, सत्य वहीं रहता है।
निन्दा – कटुता सब असत्य है, जैनागम कहता है।
नारद जैसा सत्य पालकर, अगर स्वर्गशिव चाहो।
तो दशलक्षण की गंगा में, आतम को अवगाहो।।

(६)

उत्तमशौच

लोभ पाप का बाप कहाता, हस्ति चरण ही जानों।
पाप – कषायों का यह कारण, तृष्णा जननी मानों।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

शौचधर्म तो बड़ा धर्म है, अमृतसम हितकारी।
नहीं शौच – सन्तोष के बिना, होय धर्म अधिकारी।।
बाहर – भीतर, इस भव – पर भव, जो शुचिता को चाहो।
तो दशलक्षण की गंगा में आतम को अवगाहो।।

(७)

उत्तमसंयम

कूर्म अंग सम सकल इंद्रियाँ, जो वश में कर लेते।
त्रस – स्थावर षट् कायिक की, रक्षा में चित देते।।
वे ही संयम – रत्न प्राप्त कर, बैठें धर्म की नौका।
भवसागर से पार उतरने, का पा जाते मौका।।
यदि तुम यम को जय करने की, कला सीखना चाहो।
तो दशलक्षण की गंगा में आतम को अवगाहो।।

(८)

उत्तमतप

जग से तारे, पार उतारे, कहलाता वह तप है।
मन – मर्कट को बांध रखे जो कहलाता वह जप है।।
अनशन – ध्यान हुताशन द्वारा, कर्मशत्रु को जारो।
सदुपयोग सँग मानवतन की, सार्थकता स्वीकारो।।
कनक महल पर रत्न कलश को अगर चढ़ाना चाहो।
तो दशलक्षण की गंगा में, आतम को अवगाहो।।

(९)

उत्तम त्याग

तपकर वस्तु विकार त्यागती, क्रमिक शुद्धता पाती।
तथा आत्मा तप के द्वारा, त्यागधर्म अपनाती।।
यथा रक्त को जल धो देता, तथा पाप को धोता दान।
औषधि–शास्त्र–अभय–आहारा, इनसे मिलता पुण्य महान्।।
उत्तम त्याग धर्म अपना जो, उभय लोक सुख चाहो।
तो दशलक्षण की गंगा में, आतम को अवगाहो।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१०)

उत्तम आकिञ्चन्य

उभय परिग्रह ने अनादि से, विकट ग्राह बन घेरा।
आत्मतत्त्व अतिरिक्त न किंचित्, तीन लोक में मेरा।।
तृष्णा नागिन को वश कर के, बनो दिगम्बर धारी।
खोल–खोल सब मन की गाँठें, पियो साम्य सुखकारी।।
हो निर्भार, निशल्य, अकिंचन, लोक अंत यदि चाहो।
तो दशलक्षण की गंगा में, आतम को अवगाहो।।

(११)

उत्तम ब्रह्मचर्य

यथा अंत में सकल सरित जल, मिल समुद्र कहलाता।
तथा सभी धर्मांग मेल से, ब्रह्मचर्य बन जाता।
पंच अक्ष, मन निग्रह करके, आत्मलीन हो जाओ।
अणु से तर, तर से तम होकर, स्वयं ब्रह्म बन जाओ।।
बिन्दु–सिन्धु, कंकर–शंकर वत्, पद परमातम चाहो।
तो दशलक्षण की गंगा में, आतम को अवगाहो।।

19.04.2004

प्यास और तृप्ति - 83

(१)

एक बार यदि प्यास ज्ञान की, सच्चे मन से लग जाये।
तो समूह बाधाओं का फिर, सदा – सदा को भग जाये।।

(२)

प्यासा कौआ, घड़े में पानी, पर था मुश्किल पी पाना।
चौंच थी छोटी, पानी नीचे, रहा असंभव मिल पाना।।

(३)

अकल लगाई, कंकड़ डाले, आया ऊपर को पानी।
चौंच डालकर देखी, पहुँची, छककर खूब पिया पानी।।

(४)

वह था कौआ, हम हैं मानुष प्यास जो सच्ची लग आवे।
तो फिर हम पाताल फोड़ दें, प्यास सदा को बुझ जावे।।

सन्–2003

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कुत्तों से सावधान - 84

कुत्ते
दो प्रकार के होते हैं।
एक – पालतू
दूसरे – फालतू

राग है कुत्ता पालतू
द्वेष है कुत्ता फालतू
एक–एक कुत्ते के, दो दो बच्चे हैं।
हैं तो बहुत बुरे, पर हमें लगते अच्छे हैं।।

राग के बच्चे हैं – माया और लोभ
द्वेष के बच्चे हैं – मान और क्रोध
ये हमारे ही भीतर रहते हैं
और जिस पत्तल में खाते हैं
उसी में छेद करते हैं।।
इनमें है सबसे बड़ा दूषण,
ये रात – दिन फैलाते हैं प्रदूष।
क्रोध के धुँए का
मान की मनमानी का
माया की छाया का
और, संग्रह के आग्रह का

ये हमें उकसाते हैं
हम लड़ते हैं, ये हमें लड़ाते हैं।
कभी खुद से, कभी भाई से
कभी बाप से, तो कभी माई से।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अनादिकाल से यही हो रहा है
पर, हमारा विवेक
अज्ञान की चादर ओढ़कर
सो रहा है।

श्रीगुरु आते हैं
अज्ञान को हटाते हैं
विवेक को जगाते हैं
हमें समझाते हैं।

वे कहते हैं –
रे मानव महान्!
हो, कुत्तों से सावधान,
अगर नहीं, तो
नरक – निगोद में पड़ेगा
जहाँ से आया था, वहीं सड़ेगा।

धन्य है गुरुदेव आपको
आप कल्याण कारी हैं।
परम उपकारी हैं
आप महान् हैं
आपको कोटि – कोटि प्रणाम है।

Dt. 17.9.2009

रत्नाकर बैंक में खाता खुलवाइये - 85

मैंने
रत्नाकर बैंक में
एक पौधा लगाया था
पेड़ हो गया।
जमा किया था एक
डेढ़ हो गया।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यह, हर माह फलता है
दूध का, सब्जी का –
ऊपर का काम चलता है।
बीबी और बच्चे –
सभी खुश हैं –
वे समझते हैं –
हमारे पापा भी कुछ हैं।

इसलिये
मैं आपसे कहता हूँ –
मत करो धन के लिए ईश्वर की इबादत।
डालो अपने जीवन में बचाने की आदत।।

एक एक कदम से, सफर कट जाता है।
एक एक कण से पहाड़ बन जाता है।।
सागर के बनने में हर बूंद का महत्व है।
रोम एक दिन में नहीं बना था यह कथन सत्य है।।
इसलिए हर माह कुछ न कुछ बचाइये।
और छोटी – सी रकम से लखपति बन जाइये।।

देखना एक दिन –
जब बूढ़े हो जाओगे।
तब दुनिया की नजरों में –
तुम कूड़े हो जाओगे।।
तब यही बचत, तुम्हारे काम आयेगी।
लड़खड़ाते हाथ की, लाठी बन जायेगी।।

आज की बचत
कल काम आयेगी।
निराशा के अँधेरे में, दीपक बन जायेगी।
लड़की बड़ी होने पर,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

माँग में सिन्दूर, इसी से भरा जायेगा।
लड़का भी पढ़ेगा और डॉक्टर बन जायेगा।।

जब कभी घर में लोग होंगे बीमार।
दवाइयों की, मेहँगाई की, पड़ेगी भारी मार।।
सोचो, तब कौन काम आयेगा
बचत का बेटा, डॉक्टर बन जायेगा।।

अगर कहीं बेटा बुढापे में साथ छोड़ेगा।
हिलता सिर देख असमय में सम्बन्ध तोड़ेगा।।
पर रहना बेफिकर ये बैंक का बेटा।
कभी साथ नहीं छोड़ेगा।।

आज की बचत भविष्य में फलेगी।
जीवन की गाड़ी बड़े आराम से चलेगी।।
इसलिए बन्धुओ! आज ही आइये।
"रत्नाकर बैंक" में अपना खाता खुल वाइये।।

सरस्वती पुत्रों की यात्रा, दक्षिण महासभा, 2001

पावन पुष्पगिरि - 86

(१)

यहाँ चतुर्दिक् फैल रही है, अनुपम प्रकृति – श्री।
तीर्थक्षेत्र यह, नाम है इसका – पावन – पुष्पगिरि।।

(२)

पुष्दंत आचार्यश्री ने, यहाँ सु – विहार किया,
उनकी चरण–कमल–पावन–रज, इसमें है बिखरी।।

(३)

श्रीमुनिराज तरुणसागर के – है प्रयास का फल।
पुष्पित वृक्ष–लताओं से यह, चारों ओर घिरी।।

(४)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मध्यप्रदेश देवास जिले में, सोनकच्छ नगरी।
उसकी ही यह एक पहाड़ी, बन गयी सोनपरी।।

(५)

मध्यप्रदेश मालवा की है, सिर का ताज बनी।
आगामी वर्षों में होगी, भारत–मुकुट–मणि।।

(६)

चिन्तामणि श्री पर्श्वनाथ की, मनहारी प्रतिमा।
आचार्यप्रवर श्री पुष्पदंत को, सपना दे निकरी।।

(७)

आचार्यरत्न श्री पुष्पदंत की, वाणी का जादू।
श्वास–श्वास अनुभव में आता, बन माखन–मिश्री।।

(८)

तरुणनिधि की सिंह गर्जना, है वातास घुली।
कण–कण बोली बोल रहा है, ज्यों चमके बिजुरी।।

(९)

सेवा है संकल्प क्षेत्र का, शांति जगत छाये।
मीन–नीर–सी, इसकी जन–जन, आशा प्रीति जुरी।।

(१०)

स्वर्गों में होता बसंत है, होते संत नहीं।
यहाँ हैं दोनों, अतः पुष्पगिरि, स्वर्गादपि श्रेष्ठ–खरी।।

सन्–2005

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इतिहास, पुरातत्व, जैन धर्म, संस्कृति तथा प्राकृतिक सौन्दर्य से भरपूर नगरी चन्देरी पर रचित रचना

बुन्देलखण्ड के इस वैभव को कवि के बारम्बार प्रणाम-87

(1)

गिरिओं, ताल–तलैयों वाली, चन्देरी के क्या कहने।
प्रकृति धर्म के पहन रखे हैं, इसने सुन्दरतम गहनें।।
इसका मुकुट बना है अनुपम, आदिनाथ का श्री खंदार।
तथा हृदय पर शोभित होता, "चौबीसी" का मनहर हार।।
"पारसनाथ पुरातन मन्दिर", लगता मन को ललित–ललाम।
बुन्देलखण्ड के इस वैभव को, कवि के बारम्बार प्रणाम।।

(2)

नदी 'बेतवा' धोती इसका, निश–दिन पूनम चन्द्रवदन।
ये हरदम धारण करती है, मूल्यवान 'साड़ी' नूतन।।
नदियाँ, ताल–तलैया इसकी, साड़ी पर रचतीं चित्राम।
काजू–किशमिश से बढ़कर हैं, इसके जामुन–खिन्नी आम।।
यह 'बूढ़ी' हो जाने पर भी, लगती है अतिशय अभिराम।
बुन्देलखण्ड के इस वैभव को, कवि के बारम्बार प्रणाम।।

(3)

बाहर–भीतर आसपास में, स्थित हैं स्थान अनेक।
पुरातत्व, इतिहास दृष्टि से, रखते हैं महत्व प्रत्येक।।
मंदिर–मस्जिद, महल–मकबरे, दुर्ग–कन्दरा–कुण्ड सभी।
समय आवरण ओढ़े कहते, रहा था स्वर्णिम काल कभी।।
हिन्दु–मुस्लिम–जैन संस्कृति, के दर्पण का करते काम।
बुन्देलखण्ड के इस वैभव को, कवि के बारम्बार प्रणाम।।

(4)

फुट छयालीस तुंग, खड्गासन, प्रतिमा आदिनाथ भगवान।
गिरि 'खंदार' सुशोभित होती, देती मनवांछित वरदान।।
क्षेत्र मनोरम अतिशयकारी, और चाहता अभी विकास।
अंधकार तब ही हटता है, जब होता है सूर्य प्रकाश।।
सब मिलकर यदि हाथ बढ़ायें, नहीं है कोई मुश्किल काम।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बुन्देलखण्ड के इस वैभव को, कवि के बारम्बार प्रणाम।।

(5)

अद्वितीय, उत्तम रचना है, चन्देरी की 'चौबीसी'।
सबका चित्त चुरा लेती है, अनुपम मुखछवि श्रीजी की।।
भारत क्या?संसार में अब तक, कोई न इसका शानी है।
धर्मधुरंधर सवासिंह की, ये बेजोड़ निशानी है।।
गंधकुटी, बीस कुलिकाएँ, यह भी रहा अनन्वय काम।
बुन्देलखण्ड के इस वैभव को, कवि के बारम्बार प्रणाम।।

(6)

यहाँ सुरक्षित हस्तलिखित हैं, श्रेष्ठ, पुरातन ग्रंथ हजार।
याद दिलाते हैं हम सबको, भट्टारक युग के उपकार।।
प्राप्त हुई जो हमें धरोहर, नहीं मात्र रक्षा कर्तव्य।
किन्तु प्रकाशित करके उनको, ज्ञान प्रसारित हो सर्वत्र।।
विषयों के वन भटके मन को, मिलता ग्रन्थों में विश्राम।
बुन्देलखण्ड के इस वैभव को, कवि के बारम्बार प्रणाम।।

(7)

चन्देरी के इस वैभव में, आज और आ गया निखार।
उपाध्याय श्री ज्ञाननिधि के, सन्निधान का पा उपहार।।
शास्त्रि परिषद् शिविर प्रशिक्षण, का आयोजन रहा सफल।
भारत के कोने–कोने को, प्राप्त हुआ है अमृतफल।।
सुमति 'ज्ञान'–'संयम' को पाकर, भव्य सहज पाते निर्वाण।
बुन्देलखण्ड के इस वैभव को, कवि के बारम्बार प्रणाम।।

(8)

ब्रह्ममुहूर्त 'निशान्त' जाग कर, किया नित्य जिनवर गुणगान।
चौबीसों जिन अर्चा करके, करी अशुभ कर्मों की हान।।
मोक्षशास्त्र–दशधर्म–व्याकरण,न्यायिकविद्या–विधि–विधान।
आत्मसात् कर सभी ने साधा, परमलक्ष्य 'श्रेयस्' निर्वाण।।
हम तो भूल नहीं पायेंगे, यहाँ हुए जो शुभ परिणाम।
बुन्देलखण्ड के इस वैभव को, कवि के बारम्बार प्रणाम।।

(9)

भारतविश्रुत महामनीषी, सैद्धान्तिक उद्भट् विद्वान।
श्री श्रेयांसकुमार ने दिया, मोक्षशास्त्र का सम्यग्ज्ञान।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सबके द्वारा गये सराहे, विद्वद्वर धार्मिक प्रवचन।
रहे प्रभावी, सहजानन्दी, जिनवच औषध संजीवन।।
श्री अशोक–निहाल–अरुण से, विकसे भव्यकमल अभिराम।
बुन्देलखण्ड के इस वैभव को, कवि के बारम्बार प्रणाम।।

(10)

चन्देरी जितनी सुन्दर है, उतने सुन्दर जन के भाव।
बालक–वृद्ध सभी नारी–नर, रखते मन सेवा का चाव।।
हम चाहें तो इनसे सीखें, कैसे करते गुरु सम्मान।
किस प्रकार से प्राप्त करें हम, जिनवाणी का सम्यग्ज्ञान।।
विद्वत्सेवा–अतिथि समर्पण प्रशंसनीय अति शुभ परिणाम।
बुन्देलखण्ड के इस वैभव को, कवि के बारम्बार प्रणाम।।

सन्–2003

श्री 1008 पार्श्वनाथाय नमः

श्री 1008 दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र पवाजी तीर्थ क्षेत्र वन्दना-88

आओ भव्यों ! दर्श करें हम, पवा तीर्थ स्थान के।
जहाँ मनोहर बिम्ब विराजे, पार्श्वनाथ भगवान के।।
दाता भेद विज्ञान के......

(1)

नया जिनालय चौबीसी का, मन को हरने वाला है।
आदि–वीर–चौबीस जिनों का, ज्ञानमयी उजयाला है।।
मंदिर में प्रवेश करते ही, मन–शीतलता आती है।
चन्द्रप्रभ की मनमोहन छबि, आँखों को भा जाती है।।
कर्मनाश जो शिवपुर पहुँचे, बिम्ब उन्हीं इंशान के।
आओ भव्यों ! दर्श करें हम, 'पवा' तीर्थ स्थान के।।

(2)

पहला मंदिर शांतिनाथ का, है अति ही अतिशयकारी।
दर्शन करते ही मिट जाती, मन की आकुलता सारी।।
आँख बन्द कर शांतिनाथ को, सच्चे मन से ध्याते हैं।
तो भक्तों के जनम–जनम के, पाप सभी कट जाते हैं।।
स्तुति करते ही छट जाते, सब बादल व्यवधान के।
आओ भव्यों ! दर्श करें हम, 'पवा' तीर्थ स्थान के।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(3)

पूजा मंदिर बाहुबली का, केशरिया लहराता है।
मानों अपने हाथ हिलाकर, हमको निकट बुलाता है।।
खड्गासन जिन बिम्ब सुशोभित, लता माधवी अंग चढ़ी।
पैरों में सर्पों ने बाबीं, बना रखीं हैं बड़ीं–बड़ीं।।
आयें भरत किया सम्बोधन, नेत्र खुले तब ज्ञान के।
आओ भव्यों ! दर्श करें हम, 'पवा' तीर्थ स्थान के।।

(4)

श्याम वर्ण श्री पारस स्वामी, मंदिर तीन विराजे हैं।
श्वेतवर्ण, मरमरी वेदिका, ऊपर जिनवर सजे हैं।।
मुख छबि मनको हरने वाली, नासा दृष्टि लगाये हैं।
आत्मसिन्धु में डूबे भगवन, अरि–रज–रहस नशाये हैं।।
मिले दिव्य उपदेश सभी को, जगहित कर भगवान के।
आओ भव्यों ! दर्श करें हम, 'पवा' तीर्थ स्थान के।।

(5)

यह अतिशय प्राचीन क्षेत्र है, शिलालेख बतलाते हैं।
संवत् नौ–सौ बारह की हम, यहाँ प्रतिमाजी पाते हैं।।
देवपत–खेवपत पाड़ाशाह का, नाम अमर इतिहास में।
थोवनजी के रहने वाले, चन्देरी के पास में।।
उनके ही शुभ भाव हुए थे, यह भौंयरा निर्माण के।
आओ भव्यों ! दर्श करें हम, 'पवा' तीर्थ स्थान के।।

(6)

हाथ जोड़ कर, शीस नमा कर, जब हम भीतर जाते है।
पार्श्व प्रभु के दर्शन करके, हम सचमुच तर जाते हैं।।
वीतराग मुद्रा को लख कर, मन में शांति समाती है।
सारी चहल–पहल बाहर की, बाहर ही रह जाती है।।
तब होने लगते हैं दर्शन, अपने ही भगवान के।
आओ भव्यों ! दर्श करें हम, 'पवा' तीर्थ स्थान के।।

(7)

इसी भौंयरे में सु–विराजित, पाँच तीर्थंकर अन्य हैं।
आदि–अजित–संभव जिन स्वामी, सबके बिम्ब अनन्य हैं।।
मल्लि–नेमि जिन की मुद्रा–लख, रोम–रोम हर्षाता है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अति जिनवर प्राचीन बिम्ब लख, भक्त लीन हो जाता है।।
नहीं चाहता हटने को मन, दर्शन कर भगवान के।
आओ भव्यों ! दर्श करें हम, 'पवा' तीर्थ स्थान के।।

(8)

चौथा मंदिर चन्द्रप्रभ जी, करता नभ से बातें हैं।
वर्ष सैकड़ों बीत गये, वह बांट रहा सौगातें है।।
पूर्ण चन्द्र को शरमाता है, अष्टम जिन का चन्द्र वदन।
इनके दर्शन से कट जाते, भक्तजनों के भव बन्धन।।
बिम्ब वेदिका में राजित हैं, चौबीसों भगवान के।
आओ भव्यों ! दर्श करें हम, 'पवा' तीर्थ स्थान के।।

(9)

मंदिर नम्बर पाँच विराजे, महावीर पद्मासन हैं।
प्रभु के शांत–सौम्य मुख मंडल, पर अद्भुत आकर्षण हैं।
बैठ वेदिका के सम्मुख जो, आतम ध्यान लगाते हैं।
इसमें कुछ सन्देह नहीं, वे महावीर बन जाते हैं।।
जिनवर की पूजन करने से, खुले द्वार कल्याण के।
आओ भव्यों ! दर्श करें हम, 'पवा' तीर्थ स्थान के।।

(10)

छठा जिनालय शीतलनाथ का, इसके अतिशय भारी हैं।
जिन्हें देख प्रत्यक्ष, चमत्कृत हुये सकल नर–नारी हैं।।
पूरव से उत्तर मुख प्रतिमा, हुई प्रवर्तित अपने आप।
करती है संकेत, स्वयं में निहित दिव्यता रूप प्रताप।।
कल्पवृक्ष से उत्तम दाता, पद शीतल भगवान के।
आओ भव्यों ! दर्श करें हम, 'पवा' तीर्थ स्थान के।।

(11)

मानस्तम्भ शोभता सुन्दर, मान भंग करने वाला।
खड़ा हुआ है मानों प्रहरी, तीर्थ क्षेत्र का रखवाला।।
स्वर्णभद्र आदि ऋषियों ने, मोक्ष यहीं से पाया है।
भूरेबाबा ने भी अपना, अतिशय, यहीं दिखाया है।।
प्रश्नों के प्रामांणिक उत्तर, देते अवधिज्ञान से।
आओ भव्यों ! दर्श करें हम, 'पवा' तीर्थ स्थान के।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(12)

चलें, पहाड़ी ऊपर शोभित, चार जिनालय मनहारी।
खड्गासन केवलिजिन प्रतिमा, उनमें राजित सुखकारी।।
स्वर्णभद्र–वीर–गुण–मणि जी, मोक्ष पधारे इस ही थान।
उनके तप से पावन यह थल, अतः पवाजी इसका नाम।।
बीचों–बीच बनीं छतरी में, चरण इन्हीं भगवान के।
आओ भव्यों ! दर्श करें हम, 'पवा' तीर्थ स्थान के।।

(13)

भूरेबाबा नागदेव की, गुफा दूर तक पाते हैं।
बड़े बाबा के दर्शन करने, यहीं से बाबा जाते हैं।।
यह भक्तों ने देखा आँखों, अपकार किसी का नहीं किया।
व्यन्तर हैं, अवधिज्ञानी हैं, हर प्रश्न का उत्तर सही दिया।
मनोकामना होती पूरी, पारस के श्रद्धान से।
आओ भव्यों ! दर्श करें हम, 'पवा' तीर्थ स्थान के।।

(14)

उपाध्याय श्री ज्ञाननिधि के, मंगलमय आशीष तले।
श्रीमज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक, गजरथ पाँच यहाँ निकले।।
अगहन मास के कृष्ण पक्ष में, शुभ सन् रहा दो हजार चार।
लालचन्द्र "राकेश" ने तभी, यह गूँथा रचना का हार।।
धन्यवाद के पात्र सभी है, किया कार्य जी–जान से।
आओ भव्यों ! दर्श करें हम, 'पवा' तीर्थ स्थान के।।

सन्–2003

चल मेरे घोड़े चल रे चल, मुझ को मंदिरजी ले चल –89

(१)

प्रतिदिन तुझको ताजा–ताजा, मीठा दूध पिलाता हूँ।
बादाम–शर्करा–काजू–किशमिश, भी उसमें मिलवाता हूँ।।
पौष्टिक भोजन तुझे खिलाता, रोज खिलाता मीठे फल।
चल मेरे घोड़े चल रे चल, मुझको मंदिर जी ले चल।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२)

नौ मन तेल लगाता तुझको, प्रासुक जल नहलाता हूँ।
अच्छे-अच्छे सूती-ऊनी, वस्त्र तुझे पहनाता हूँ।।
गर्मी का सीजन आने पर, पहनाता तुझको मलमल।
चल मेरे घोड़े चल रे चल, मुझको मंदिर जी ले चल।।

(३)

एयरकंडीशन कमरे में, डनलप सेज सुलाता हूँ।
टी या काफी फ्रिज का पानी, मन माफिक पिलवाता हूँ।।
फिर भी तू तैयार न होता, कहता रहता है कल-कल।
चल मेरे घोड़े चल रे चल, मुझको मंदिरजी ले चल।।

(४)

तेरे पास पचास बहाने, पहले से रहते तैयार।
कभी दर्द घुटनों में रहता, चढ़ आता है कभी बुखार।।
रे शरीर बदमास बहुत है, तेरी मारी गई अकल।
चल मेरे घोड़े चल रे चल, मुझको मंदिर जी ले चल।।

(५)

बिना देवदर्शन के देखो, ख़ाना-पीना ठीक नहीं।
जिह्वा रानी ध्यान से सुनलो, यह है अच्छी रीति नहीं।।
तुम दोनों की मिली भगत यह, मुझको बहुत रही है खल।
चल मेरे घोड़े चल रे चल, मुझको मंदिर जी ले चल।।

(६)

अगर जोर से विनती पढता, जल्दी ही थक जाती हो।
तुम औरों का साथ न देतीं, जल्दी बहुत मचाती हो।।
खाने में मजबूत बहुत हो, गाने में बनतीं निर्बल।
चल मेरे घोड़े चल रे चल, मुझको मंदिर जील ले चल।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(७)

अगर भजन में साथ न दिया, दाँतों से कटवाऊँगा।
छप्पन भोग न करने दूँगा, दलिया रोज पिलाऊँगा।।
सावधान हो जाओ दोनों, प्रभुभक्ति जीवन का फल।
चल मेरे घोड़े चल रे चल, मुझको मंदिर जील ले चल।।

(८)

बेचारी आखों को देखो, दर्शन को अकुलाती हैं।
दृष्टिक्षीण होने से प्रभु को मन मंदिर बुलवाती हैं।।
पलक पॉवड़े बिछा, बन्द कर, धोती चरण अश्रु के जल।
चल मेरे घोड़े चल रे चल, मुझको मंदिर जील ले चल।।

(६)

मैंने तेरा साथ निभाया, तू भी मेरा साथ निभा।
जब तक श्वांस रहे जीवन में, मुझको मंदिर जी ले जा।।
रसना प्रभु का नाम सुमरना, नयन देखना छवि प्रतिपल।
चल मेरे घोड़े चल रे चल, मुझको मंदिर जील ले चल।।

(१०)

तन थकने से कुछ नहिं होता, मेरे मन तो है उत्साह।
जिसे चाह होती है सच्ची, मिल जाती है उसको राह।।
पाँव नहीं चढ़ते पहाड़ को, चढता है संकल्प प्रबल।
चल मेरे घोड़े चल रे चल, मुझको मंदिर जील ले चल।।

सन्–2013

वृद्धकाल मंगलमय हो – 90

(१)

जिसने भू – पर जन्म लिया है, उसको निश्चित मरना है।
जैसे यौवन बाद बुढ़ापा, फिर उससे क्या डरना है।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२)

साठ वर्ष की आयु अनंतर, सही शुरू होता जीवन।
सेवा से निवृत्त हुए पर, नव स्फूर्ति पाता है मन।।

(३)

दुख–अवसाद–निराशा–चिन्ता का यह समय नहीं भाई।
शुभ कार्यों में व्यस्त रहो तो, हो जीवन आनन्ददायी।।

(४)

मन–मस्तिष्क युवा हैं जिनके, नहीं बुढ़ापा आता तन।
विजय सम्पदा वे ही वरते, सदा युवा है जिनका मन।।

(५)

सूर्योदय जितना सुन्दर है, उससे कम सूर्यास्त नहीं।
जब तक रुचि रहती जीवन में, होता व्यक्ति परास्त नहीं।।

(६)

क्रोधी–जिद्दी–ईर्ष्या–द्वेषी, कुढ़ना–चिढ़ना जिनका काम।
आलस–हीनभावना वाले, कर लेते निज कामतमाम।।

(७)

वृद्धावस्था, वरिष्ठ नागरिक, का देती जन को सम्मान।
वे चाहें तो कर सकते हैं, इसमें भी अति उत्तम काम।।

(८)

उठो! प्रभात, करो जिन पूजा, स्वाध्याय अमृतरस लो।
मन में वास रहे शुभता का, वृद्धकाल मंगलमय हो।।

सन्–1994

आत्मसम्बोधन - 91

आया बुढ़ापा, मूरख चेत । उड़ गईं चिड़ियाँ, चुग गईं खेत ।।

(१)

गर्दन मड़वा जैसी हिलती, पलित केश सब हो गये सेत।
दृष्टि–विवेक रहा न कुछ भी, हित–अनहित न दिखाई देत।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२)

लार–नाक परनाले बहते, रस वीभत्स चुनौती देत।
गलित दंत–नख, वलित हुआ तन, रेख गणित की शिक्षा हेत।।

(३)

हाथ की लाठी थर–थर काँपै, कमर धनुष की आकृति लेत।
सूखी लकड़ी से पग दोनों, देह खण्हर बैठा प्रेत।

(४)

सरिता का जल सूख गया है, शेष बची है रेतई–रेत।
अंधकूप में पैर लटकते, आरई मौत धकेला देत।।

(५)

बचपन बीता खेल–खेल में यौवन विषयों रहे अचेत।
तन जर्जर अब हुआ जरा से, जरा–जरा में रो–रो देत।।

(६)

क्यों "राकेश" हो रहे गाफिल, अब भी क्यों हो रहे अचेत।
प्रभु का नाम सुमर लो मन से, वे ही अंत सहारा देत।।

सन्–13.08.2008

मूरख चेत! बुढापा आया - 92

(१)

सकल इन्द्रियाँ शिथिल हो गई, हाथ–पैर दे दिया जबाब।
दांत दगा दे चुके पूर्व ही, चेहरे पर कुछ रही न आब।।
नख – शिख वलित हो गई काया, मूरख चेत बुढापा आया

(२)

पलित केश यमराज ने चिट्ठी, सावधान करने पहुँचाई।
खुदा के वन्दे, अन्त समय अब, कुछ तो कर ले पुण्य कमाई।।
लेकिन तू तो समझ न पाया, मूरख चेत बुढ़ापा आया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३)

यहाँ है कोई सगा न साथी, ना कोई पिता–पुत्र या नाती।
मरघट तक सब नाते रिश्ते, जैसे दूल्हा और बराती।।
चेतन क्यों जग में भरमाया, मूरख चेत बुढ़ापा आया।

(४)

धन–दौलत सब यहीं, रहेंगे, चलें संग ना महल–अटारी।
साथ जायगी केवल तेरे, जो कुछ की है पुण्य कमाई।
पड़ी रहेगी यहीं पै माया मूरख चेत बुढ़ापा आया।।

सन्–2011

कर लो अपनी तैयारी - 93

अब करो न कुछ भी देर, लग गई टेर, आ गई बारी,
कर लो अपनी तैयारी।

(१)

ये जरा मृत्यु का आंमत्रण, है लगा जन्म के साथ मरण।
यह लीक प्राकृतिक, नहीं टरेगी टारी, कर लो अपनी तैयारी।।

(२)

आता–जाता तन, जड़–नश्वर, लेकिन है चेतन, अजर–अमर।
पर, अनादि से एकमेक, ये रखे हैं यात्रा जारी, कर लो अपनी तैयारी।।

(३)

चावल भोजन में मिलते ज्यों, कच श्वेत शीर्ष पर आते त्यों।
सूचित करते, अब खतम हो गई पारी, कर लो अपनी तैयारी।।

(४)

तू पुण्य–पाप का लेखा कर, शुभ और अशुभ को देखा कर।
हित–अनहित पहचान, बनो शुभचारी, कर लो अपनी तैयारी।।

(५)

सब पाप–कषायों को तजकर, अब शील–व्रतादिक धारण कर।
धर्म–भावनायें भाकर, कर सल्लेखन तैयारी, कर लो अपनी तैयारी।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(६)

यह नर तन सफ़ल तभी पाना, पुरुषार्थ करो शिवपुर जाना।
महाकठिन, नर भव मिलना, चिन्तामणि सुखकारी, कर लो अपनी तैयारी।।

(७)

यम खड़ा सामने मुँह बाये, क्यों मूर्ख नहीं जिनवर ध्याये।
उम्र शाख को काटे तेरी, तीक्ष्ण समय की आरी, कर लो अपनी तैयारी।।

(८)

तेरे तीनों पन व्यर्थ गये, अब लंगड़े, बहरे, अंधे भये।
तूने सींची न कभी धर्म की क्यारी, कर लो अपनी तैयारी।।

12–11–2006

तन का सत् उपयोग करो - 94

पाँच भूत तत्वों से मिल कर, बना है यह तन तेरा।
कर ले सत् उपयोग बाबरे, मान ले कहना मेरा।।

(१)

मिट्टी का घट, काँच की शीशी, फूट क्षणिक में जाये।
चुका तेल, बाती जल जाती, दीपक झट बुझ जाये।।
मौत की आँधी चलते क्षण में, उठ जायेगा डेरा।
पाँच भूत तत्वों से मिलकर बना है यह तन तेरा।।
कर ले सत् उपयोग बाबरे, मान ले कहना मेरा।।

(२)

जीवन क्या है, भरा हवा का – पतला – सा गुब्बारा।
या कि देखते छिप जाता है – उगा भोर का तारा।।
इन्द्र धनुष – बदली की शोभा, या बुद बुद जल केरा।।
पाँच भूत तत्वों से मिलकर बना है यह तन तेरा।।
कर ले सत् उपयोग बाबरे, मान ले कहना मेरा।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३)

देव – शास्त्र – गुरु सेवा कर ले, संयम – तप आचर ले।
दया – दान तीर्थों की यात्रा, रत्नत्रय आदर ले।।
पता नहीं कब शिर आ धमके, पापी काल लुटेरा।
पाँच भूत तत्वों से मिलकर, बना है यह 'तन तेरा।
कर ले सद् उपयोग बाबरे, मान ले कहना मेरा।।

12–11–2006

कांणा पौंडा – 95

कांणा पौंड़ा यह तन तेरा, मत करना उपभोग रे।
पछतायेगा अगर किया ना, इसका सत् उपयोग रे।।

(१)

प्रथम भाग नाजुक, नीरस है, बिना गंध ज्यों फूल रे।
सारहीन, धरती पर लोटे, रहे चाटता धूल रे।।
व्यर्थ अर्थ पा सकता है यदि, मिले ज्ञान का योग रे।
पछतायेगा अगर किया न, इसका सत् उपयोग रे।।

(२)

मध्यभाग विष कीट लगे हैं, नहीं विज्ञ के काम का।
धर्म खेत में बोकर इसको, बन राही शिवधाम का।।
स्वर्गो में सन्देह नहीं कुछ, शाश्वत सुख का योग रे।
पछतायेगा अगर किया ना, इसका सत् उपयोग रे।।

(३)

सड़ी – गली जड़, वृद्ध अवस्था बुझती दीपक जोत है।
भवसागर से पार उतरने, नरकाया दृढ़ पोत हे।।
इसके द्वारा मिट सकते हैं, जन्म –जरा–मृतु रोग रे।
पछतायेगा अगर किया ना, इसका सत् उपयोग रे।।

सन्–2006

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मेरौं मन तनिक चैन नहिं पावै – 96

-- --

(१)

इत खौं उचकै, उत खौं उचकै, ऊधम खूब मचावै।
विषयों की शाखों पर झूमै, जान बूझ बिष खावै।।

(२)

ध्यान के खम्मा बाँध के राखौ, तो भी भग–भग जावै।
शास्त्र सभा में बैठौ–बैठौ, मूरख पाप कमावै।।

(३)

मंदिर में मूरत न देखै, सूरत देख रिझावै।
तन तौ ठाड़ौ पूजा करवै, मन दिल्ली भग जावै।।

सन्–2007

मेरौं मन तनिक न धीर धरै – 97

(१)

पलभर में आकाश में उड़े, पल में भूमि परै।
बहुत दिये उपदेश शास्त्र के, एक न कान धरै।।

(२)

मोह पाश में ऐसा जकड़ा, बुद्धि न काम करै।
तू का हाथ लगा लै मूरख, भावी नाहिं टरै।

(३)

नाम प्रभु का सुमरन कर लै, जासै विपति टरै।
सर्व विकल्प छोड़ कैं चेतन, रह अपने ही घरै।।

सन्–2007

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

रे मन! तू अधीर न हो! - 98

(१)

कर्म असाता के आने पर, तू अधीर न हो।
जो आया है अवश जायगा, उसके लिए न रो।। रे मन....।

(२)

होगा वही जो होना होगा, व्यर्थ न चिंतित हो।
मिटा नहीं सकता है कोई, कर्म की रेखा को।। रे मन....।

(३)

जैसा कर्म किया है तूने, फल वैसा ही हो।
बीज अगर बोया बबूल का, आम कहाँ से हो।। रे मन....।

(४)

कर्ता–भोक्ता जीव स्वयं है, अपने कर्मों को।
अतः पराई बुद्धि छोड़ कर, समता स्वाद चखो।। रे मन....।

सन्–2012

शरीर-किराये का मकान - 99

किराये के मकान में रहते हैं हम।
मुश्किलें हैं ज्यादा, और सुविधायें कम।।

(१)

जगह–जगह पै विषघरों के बन रहे हैं बिल।
फिर भी दृढ़लगाव है, छोड़ता न दिल।।
चाहते हैं गुल जबकि मिलते हैं खार।
खुले रहते रात–दिन सबके सब द्वार।।
पलभर को विषय चोर, लेते नहीं दम।
किराये के मकान में रहते हैं हम।
मुश्किलें हैं ज्यादा, और सुविधायें कम।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२)

रोज–रोज हम इसे चंदन से लीपते।
रात और दिन इसकी सेवा में बीतते।।
डाल–डाल पर्दे बेपर्दगी मिटा रहे।
पुर जोर है प्रयत्न, ये किसी तरह बना रहे।।
काट रहे जिन्दगी, लगा–लगा के खंम।
किराये के मकान में रहते हैं हम।
मुश्किलें हैं ज्यादा, और सुविधायें कम।।

(३)

एक दिन अवश्य ये करना पड़े खाली।
एक भी घड़ी नहीं जायेगी टाली।।
देखते रहेंगे, सब हाली औ हवाली।
छोड़ने पड़ेगें, यहीं लोटा और थाली।।
ले के वारंट जब आयेगा जर्म।
किराये के मकान में रहते हैं हम।
मुश्किलें हैं ज्यादा, और सुविधायें कम।।

(४)

जब इसे छोड़ कर हम चले जायेंगे।
धुंए के गुवार ही गुवार नजर आयेंगे।।
आंसुओं की बाढ़ इसे बुझा नहीं पायेगी।
और फिर केवल कहानी रह जायेगी।।
शनैः शैनः होगा, अध्याय ही खतम।
किराये के मकान में रहते हैं हम।
मुश्किलें हैं ज्यादा, और सुविधायें कम।।

(५)

रोते–रोते आये थे, रुला–रुला चले।
अब तो भले आदमी कुछ काम कर भले।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काम–क्रोध–लोभ–मोह छोड़ दे तमाम।
लेना पड़े न यों पुनः किराये का मकान।।
नित्य ही जपा करो, ऊँ नमः सिद्धम्।
किराये के मकान में रहते हैं हम।
मुश्किलें हैं ज्यादा, और सुविधायें कम।।

सन्–1980

समय-चक्र - परिवर्तनशील संसार - 100

ये दुनियाँ बदलती रही है हमेशा,
ये दुनियाँ हमेशा बदलती रहेगी।

(१)
कभी है उजाला, अँधेरा कभी है,
कभी शाम है, तो सबेरा कभी है।
कभी सूर्य आता, तो जाता कभी है,
कभी चाँद उगता, तो ढलता कभी है।।
पूनम बदलती रही है हमेशा, हमेशा अमावस बदलती रहेगी।
ये दुनियाँ बदलती रही है हमेशा, ये दुनियाँ हमेशा बदलती रहेगी।।

(२)
कभी सुक्ख मधुमास आते यहाँ हैं,
कभी दुक्ख पतझड़ की चलती हवायें।
कभी सूखती भाग्य–सरिता की धारा,
कभी भाग्य–सरिता उमड़ती यहाँ हैं।।
यहाँ राह महलों की वनको हमेशा, बदलती रही हैं, बदलती रहेगी।
ये दुनियाँ बदलती रही है हमेशा, ये दुनियाँ हमेशा बदलती रहेगी।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३)

कभी जन्म–उत्सव भी मनते यहाँ हैं,
कभी मौत की सहते रो–रो व्यथायें।
कभी भरके सिन्दूर सजती है दुल्हन,
तो दूल्हा चिता को सजाता यहाँ हैं।।
जीवन की धारा सदा मोड़ अपने, बदलती रही है, बदलती रहेगी।।
ये दुनियाँ बदलती रही है हमेशा, ये दुनियाँ हमेशा बदलती रहेगी।।

सन्–1970

जीवन एक पतंग हैं – 101

(१)

भोजन–पानी–वायु विन, रहे न जीवन तत्व।
लेकिन इनसे भी अधिक, रखती आयु महत्त्व ।।

(२)

जवीन एक पंतग है, आयु है उसकी डोर।
आजाता है एक दिन, उसका अंतिम छोर।।

(३)

विष भी अमृत बन जाता है, आयु कर्म यदि शेष।
अमृत भी विष बन जाता यदि, आयु कर्म नहिं शेष।।

दिनांक–5.12.2012

उड़ गई चिड़ियाँ, चुग गई खेत – 102

(१)

उड़ गई चिड़ियाँ, चुग गई खेत।
सरिता का जल सूख गया है, रह गई केवल जलती रेत।।

(२)

वह घट कैसे भरा रहेगा, जिसमें होवें नौ–नौ छेद।
सरिता का जल सूख गया है, रह गई केवल जलती रेत।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३)

बचपन–यौवन खूब हँसे थे, अब तो जरा में रो–रो देत।
सरिता का जल सूख गया है, रह गई केवल जलती रेत।।

(४)

अब तक सोया, सब कुछ खोया, अंत समय तो मूरख चेत।
सरिता का जल सूख गया है, रह गई केवल जलती रेत।।

(५)

उम्र शाख दो-चूहे काटें, एक है करिया दूजो श्वेत।
सरिता का जल सूख गया है, रह गई केवल जलती रेत।।

सन्–2000

एक दिन सबको जाना है - 103

(१) राजा–रंक
यहाँ जो आया
उसको जाना है।

आज चले तुम
कल हमको भी
निश्चित आना है।।

(२) बादल–महल
तुहिन तृणऊपर
जग ठहसना है।

यह है
चार दिनों का मेला
फेर उठाना है।।

(३) इस मेले में
आया जो भी
मन उलझाना है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इन्द्रधनुष
सतरंगी चूनर
पा, इतराना है।।

(४) टूटा धनुष
जरी चूनरिया
चिता सुलाना है।

कर झटपट
जो करना चाहे
सूर्य डुबाना है।

(५) यह तन तो है
घड़ा कांच का
पलक फुटाना है।

यह सराय है
मकां किराये का
दिन दो क ठिकाना है।

(६) यौवन है
चुल्लू का पानी
रिस बह जाना है।

मानव जीवन
सुबह का तारा
क्षणिक छुपाना है।।

(७) जग के रिश्ते
स्वार्थ भरे हैं
नेह सुखाना है।

धन– धरती
गढ़–महल–चराचर
सब रह जाना है।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(६) सोच–समझ
"राकेश" जगत् में
क्यों भरमाना है।

करले सुकृत
भजले भगवन्
यही संग जाना है।

सन्–2001

आज बिदा की वेला आई-II (समाधिकाल) - 104

(१)

आना–जाना शाश्वत क्रम है, इसको कौन रोक पाया है।
कल निश्चित जाना है उसको, आज यहाँ पर जो आया है।।
मत आने में हर्ष मनाओ, मत जाने में करो रुलाई।। आज.........।।

(२)

तन का पाना जन्म कहाता, तन वियोग ही मृत्यु वरण है।
किंतु आत्मा अजर–अमर है इसका होता नहीं मरण है।।
शुद्ध–अमूर्तिक–अक्षय–चेतन, जिनवाणी पहचान बताई।। आज..........।।

(३)

एक पेड़ पर पक्षी आकर, कर लेते हैं रैन बसेरा।
उड़ जाते हैं दिशा–दिशा में, जैसे ही होता है सबेरा।।
वैसे ही परिवार हमारा, चन्द दिनों की भेंट–भलाई।। आज.......।।

(४)

यह संसार धर्मशाला इक, जीव पथिक संज्ञा पाता है।
बढ़ जाता अपनी मंजिल पर, जब जिसका क्रम आ जाता है।।
उचित नहीं स्नेह जोड़ना, मोह की फाँस बड़ी दुखदाई।। आज.........।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(५)

देखो भैया! चलती बिरियाँ, अशगुन करना उचित नहींहै।
जय जिनेन्द्र के शब्द उचारो, जाती बिरियाँ शगुन यही है।।
जीवन सार्थक रहा उसी का, जिसने मरण समाधि लगाई।। आज........।।

(६)

उन्हें प्यार करते हो मन से, उनके पथ पर बढ़ते जाओ।
जो उनके अरमान शेष थे, उनको पूरा करते जाओ।।
हिल–मिल कर रहना सब घर में, सच्ची यह श्रद्धांजलि भाई।। आज......।।.

सन्–1995

उड़ गई सोन चिरैया – 105

नौ दरवाजे बन्द कर पै, उड़ गई सोनचिरैया।
पड़ा रहा सोने–सा पिंजरा, कोऊ नहीं पुछैया।।

(१)

बड़े यत्न से पाली–पोषी, नौ मन तेल लगाया।
देख–देख चमकीली चमड़ी, फूला नहीं समाया।।
आत्म तत्व को जान न पाये, काया के इतरैया। नौ दरवाजे...........

(२)

माता–पिता–पुत्र–पत्नी सब, मिलकर डाला घेरा।
बचा न पाये चेतन धन को, लै गऔ काल लुटेरा।।
नहीं लौट कर आये कोई, करे सैं रोवा–रैया। नौ दरवाजे...........

(३)

आँगन बैठी रोय अंगना, मरघट तक घर वारे।
उतै की राख सिरा न पायी, होन लगे बटवारे।।
सबने लीपा–पोती कर लई, हो गई खा–खा खैया। नौ दरवाजे...........

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४)

जब तक हँसा, तब तक रिश्ते, हो गई खतम कहानी।
बचपन गया खिलौनों के संग, विषयन गई जवानी।।
अब 'राकेश' भजन कर प्रभु का, जो चाहे हित भैया।
नौ दरवाजे बन्द करे पै, उड़ गई सोन चिरैया।।

सन्–1998

आज यह अरथी उठाई जा रही है... – 106

(१)

भूमि को देखा नहीं झुक कर कभी, नित तान सीना आसमां तकता रहा।
थी मनुजता आपदाओं से विकल, पर दनुजता ही सदा करता रहा।।
मान के वश में हुआ, खुद को समझता था बड़ा।
तीन बोतल का नशा, उसको सदा रहता चढ़ा।।
करने मान का मर्दन देह भू पर लिटाई जा रही है।
आज यह अरथी उठाई जा रही है।।

(२)

मोह–माया–भोग–लिप्सा में सदा लिपटा रहा।
हाय रुपया, हाय पैसा ही सदा रटता रहा।।
चौंक पड़ता रात में, उठ बैठता सोता हुआ।
देखा गया वह स्वप्न में, हँसता हुआ–रोता हुआ।।
उठ न बैठे नींद से रस्सी कसाई जा रही है।
आज यह अरथी उठाई जा रही है।।

(३)

व्यस्त जीवन था अधिक, किया न राम का सुमरन।
पढ़ी न भागवत गीता, महाभारत न रामायण।।
कलह–विद्वेष की गाथा, सुनी हँस–हँस के जी–जी भर।
नाम पर धर्म चर्चा के, चढ़ आता था विषमज्वर।।
राम की धुन अंत में इससे सुनाई जा रही है।
आज यह अरथी उठाई जा रही है।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४)

चूसा दीन–दुखियों को, बन कर जोंक का कीड़ा।
कमाया, पर नहीं खरचा, सही निशदिन अकथ पीड़ा।।
धर्म के नाम पर जिसने नहीं खर्ची कभी कौड़ी।
मरते मर गये लेकिन न पापों की गली छोड़ी।।
इसलिये उसकी कमाई, यों लुटाई जा रही है।
आज यह अरथी उठाई जा रही है।।

(५)

उन्नत सिर अपावन है, बंधी है मान की पगड़ी।
अपावन हाथ हैं जिनसे न खरची दान में दमड़ी।।
अपावन पेट है, जैसे भरी हो पाप की गगरी।
इसे खाकर बसाये कौन! बोलो नरक की नगरी।।
इसलिये इस देह की भस्मी बनाई जा रही है।
आज यह अरथी उठाई जा रही है।।

(६)

नहीं की तीर्थ यात्रायें, भटकना व्यर्थ का माना।
नहाना गंगा –यमुना में, है केवल मन को समझाना।।
पियी मदिरा, पै चिन्नामिर्च का आस्वादन जाना।
कुटुम के लोग क्यों चाहेंगे, जीवन भर को पछताना।।
इसलिए प्रयाग में भस्मी सिराई जा रही है।
आज यह अरथी उठाई जा रही है।

सन्–1963

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अरथी और डोली – 107

एक तरफ से अरथी आई, एक तरफ से डोली।
दोनों सखियाँ मिली राह में, करने लगीं ठिठोली।।

(१)

चार इधर हैं, चार उधर हैं,दोनों संग बराती।
एक राह मरघट की जाती, एक महल को जाती।।
दोनों के ऊपर बिखरें है, फूल– मखाने– रोली।
दोनों सखियाँ मिलीं राह में, करने लगी ठिठोली।।

(२)

इधर मरण है, उधर वरण है, दो पहलू जीवन के।
एक तरफ है अंत, दूसरी तरफ महल सपनों के।।
छूटा साथी इधर एक का, उधर मिला हमजोली।
दोनों सखियाँ मिली राह में, करने लगीं ठिठोली।।

(३)

इधर शाम है, उधर सबेरा, है पर्याय विनाशी।
किन्तु आत्मा ध्रौव्य रूप है, है अक्षय अविनाशी।।
आना जाना लगा हुआ है, माँ जिनवाणी बोली।
दोनों सखियाँ मिली राह में, करने लगीं ठिठोली।।

(४)

जिसकी डोली आज उठी है, कल अरथी उठ जाए।
ऐसा कोई नहीं जगत में, जिसको मौत न आए।।
लेकिन जिसने संयम पाला, मिले न चोला –चोली।
दोनों सखियाँ मिलीं राह में, करने लगीं ठिठोली।।

(५)

अरथी वाला जले आग में, जले राग में डोली।
इस प्रकार दोनों ही जलते, आग–राग की होली।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सुखी सदा वे रहें जिन्होंने समता केशर घोली।
दोनों सखियाँ मिलीं राह में, करने लगीं ठिठोली।।

(६)

एक रुला अपनो को आई, आई एक हँसाने।
उजड़ गया संसार एक का, आई एक बसाने।।
सुख–दुख देती सदा जीव को, निज कर्मो की टोली।
दोनों सखियाँ मिलीं राह में, करने लगीं ठिठोली।।

(७)

सूरज डूबे इसके पहले, अपना दीप जलालें।
समग्दर्शन–ज्ञान–साथ में संयम को अपना लें।।
मद–मिथ्यात्व–कषायें छोड़ें, जला पाप की होली।
दोनों सखियाँ मिलीं राह में, करने लगीं ठिठोली।।

(८)

जो आता है जाता निश्चित, जीवन सुख–दुख मेला।
तन तो यहीं पड़ा रहता है, जाता हंस अकेला।।
चेतन एक पहनने वाला, बदल जात है चोली।
दोनों सखियाँ मिलीं राह में, करने लगी ठिठोली।।

सन्–1998

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

जो जहाँ में नाम रोशन कर गये, वे अमर हैं, कौन कहता मर गये - 108

(१)

पीड़ितों के दुख हरने का जिन्होंने व्रत लिया।
और को अमृत पिलाया, और खुद ने विष पिया।।
उपकार कर सबके दिलों घर कर गये।
वे अमर हैं कौन कहता मर गये।।

(२)

संकटों को झेलकर, जो मुस्कुराते ही रहे।
आपदायें ठेलकर, जो गीत गाते ही रहे।।
कर्तव्य पालन कर, जगत का मार्गदर्शन कर गये।
वे अमर हैं कौन कहता मर गये।।

(३)

जब अँधेरा था, नहीं था ज्ञान उजयारा।
तब जलाया ज्ञान का दीपक, मिटा अज्ञान अँधयारा।।
जो अँधेरे में उजाला कर गये।
वे अमर हैं कौन कहता मर गये।।

सन्–2005

मेरी श्रद्धांजलि सभा - 109

मैं
एक रात
शयन को गया।

णमोकार मंत्र का
सुमरण किया
चौबीस तीर्थंकरो की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्तुति पढ़ी
और कहा –
हे भगवन्।
अब मैं शयन को जाता हूँ
सबसे क्षमा माँगता हूँ
और सबको क्षमा करता हूँ

हे प्रभो।
अगर जीवन रहा
तो प्रातः फिर
दर्शनों को आऊँगा
अभिषेक – पूजन करूँगा
और जीवन सफल बनाऊँगा।

इतना कहते – कहते
मैं सो गया।
फिर क्या था, सपनों में खो गया

सपना तो सपना है
जिन्दा मर सकता है और
मुर्दा जिन्दा हो सकता है

सपने में –
समाधिमरण हुआ।
साधुओं ने सम्बोधा।
और मैं देह त्याग कर
देव हो गया।

यद्यपि
आत्मा तो अजर अमर है
पर, देह नश्वर है।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

इसलिए
मैं संसार की दृष्टि में
मर गया।

अरथी में बँधा –
चिता में जल गया।
पोटली बना–
पानी में गल गया।

यद्यपि
मैं तो था–
अवगुणों का कोष।
मुझ में गुण
एक भी नहीं
थे दोष ही दोष।

फिर भी –
मित्रों ने सभा की।
श्रद्धा की –
अंजलि दी।
सारा हॉल भर गया
मैं एक रात –
सपने में मर गया।।
मित्रों ने
गुणों का बखान किया।
दोषों पर –
ध्यान न दिया।
एक ने कहा –
प्राचार्य जी
सज्जन और उदार थे।
जीवन सादा, उच्च विचार थे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आप
छात्रों को पढ़ाते थे।
शिक्षकों को –
आगे बढ़ाते थे।
उन्हें शासन से
पुरस्कार दिलवाते थे।
लेकिन
बिचारे मर गये
मोहल्ला खाली कर गये।।

दूसरे ने कहा –
पंडित जी
बड़े विद्वान् थे।
उनके आदर्श महान् थे।

प्रवचन
अच्छा करते थे।
वाणी में
फूल झरते थे।

लेकिन
चले गये, गद्दी खाली कर गये।
तीसरा व्यक्ति बोला –
'राकेश जी'
अच्छे कवि थे।
अच्छे इंसान थे।
नगर की शान थे
सारा देश उन्हें जानता था।
वे नगर की पहचान थे।

चौथे व्यक्ति ने कहा –
(जो स्वयं कवि था।)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

'राकेशजी मरे नहीं हैं
वे थे, हैं और रहेंगे।
क्योंकि –
कवि, कभी मरता नहीं हैं.।
वह, अपनी कृतियों से,
यशरूपी शरीर से,
सदा जीवित रहता है

कहा भी है. –
"नास्ति येषां यश : काये
जरा मरणजं भयम्।"
अर्थात्
कवियों के यश रूपी शरीर में बुढ़ापा एवं मृत्यु का
भय नहीं होता।
इसलिए
कवि 'राकेश' जी
अजर और अमर हैं।

पाँचवें और अंतिम व्याक्ति ने कहा –
(वह भी कवि था)
पं. दौलतरामजी, पं. भागचन्द् जी
वृंदावन जी, मंगतरायजी
'पुष्पेन्दु' और 'कुमुद' जी
ये मरे कहाँ हैं!
इन्हें हम रोज पढ़ते हैं
याद करते हैं।
ये सब दुनिया से कहते हैं –
कवि मरता नहीं है,
वह तो अजर – अमर होता है।

इतने में –
पत्नी ने आवाज लगाई,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

उठो भाई , उठो भाई।।
सूरज आ गया
और
"राकेश" अपने घर गया।
मैं एक दिन सपने में मर गया।।

सन्–2008

बंद लिफाफा - 110

तुम न मेरी मौत पर आँसू बहाना,
एक दिन सब को यहाँ से अवश्य जाना।

(१)

जो यहाँ आया उसे जाना पड़ा है।
काल पहरेदार सिरहाने खाड़ा है।।
श्वांस की गिनती उलट कर चल रही है।
बढ़ रही जो आयु, घट कर छल रही है।।
है कठिन इस सत्य को स्वीकार पाना। तुम न मेरी...... ।।

(२)

यह आत्मा तो है अमर, कभी मरती नहीं है।
देह पुद्गल, क्षणिक – नश्वर, थिर सदा रहती नहीं है।।
जीर्ण कपड़े को बदलना, सब तरह से है जरूरी।
शीर्ण जब हो जाय नौका, पार कर सकती न दूरी।।
है असंभव अनिवार्यता से छूट पाना। तुम न मेरी।।

(३)

जन्म लेकर जीव क्षण–क्षण मृत्यु का मुख भर रहा है।
काय की काबड़ लिये नित, कर्म अर्जन कर रहा है।।
कर्म का फल पंच परिवर्तन, रहट–सम घूमता है।
भोगता संक्लेश दारुण, चहुँगति हिंडोला झूलता है।।
लक्ष्य हो भव पार कर, निर्वाण पाना। तुम न मेरी....।।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४)

साथ जग में कुछ दिनों का, धार बहते काष्ठ जैसे।
छोड़ जाते विहग तरुवर, पथिक तजैं सराय जैसे।।
चार दिन का भरा मेला, फिर उजड़ना है सुनिश्चित।
जन्म जिसने भी लिया है, मृत्यु उसकी है सुनिश्चित।।
चार दिन के नेह को तुम, रज्जु न लम्बी बनाना। तुम न मेरी... ।।

(५)

मृत्यु तो उत्तम सखा है, अगर कोई उसे पा ले।
सप्त भय को त्याग कर, सल्लेखना उत्तम बना ले।।
जन्म उसका सार्थक है, मृत्यु जिसकी सुधर जाये।
मृत्यु को घर में बुलाकर, गीत जीवन के सुनाये।।
वीर का लक्षण प्रमुख है, मृत्यु का उत्सव मनाना। तुम न मेरी ।।

(६)

घूटना है जो सुनिश्चित, चाहिये उसे छोड़ देना।
भीतरी के बोझ से, चाहिये निर्भार होना।।
वृक्ष की हरिताभ डालीं, मोह की सन्तान हैं ये।
देह का सम्बन्ध इनसे, संसार की पहचान हैं ये।
संग दशविध को न तुम, कलह का मुद्दा बनाना। तुम न मेरी..

सन्–2014

मंगल-कामना - 111

देव, शास्त्र, गुरु के चरणों में, बारम्बार नमाऊँ माथ।
जब तक नहीं मोक्षपद पाऊँ, तब तक रहे हमारा साथ।।
हे! हे! माता सरस्वती जी, हे! हे माता जिनवाणी।
सदा शर्मदा वास करो तुम, मम मन मंदिर कल्याणी।।
अब तक माँ का शरणा पाया, आगे भी माँ साथ रहे।
अन्त समय तक तेरे चरणों झुका हुआ मम माथ रहे।।
रसना, कलम न रुकने पाये, करें सदा जिनवर गुणगान।
सत्यं, शिवं, सुन्दरम् मय हो, मेरे जीवन का अवसान।।

जनवरी–2014

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बहुमुखी प्रतिभा के धनी

पं. श्री लालचन्द्र जैन "राकेश" : एक परिचय

– लेखिका : श्रीमती शोभा जैन
एम.ए., एम.एड, विदिशा

"कोई नहीं रोक पाया है, होकर रहा सबेरा।
दिनकर से डर कर भागा है, काला, सघन अँधेरा।।
बढ़ने वाले पार हो गये, चीर उदधि की छाती।
गिरि के शिखर, नदी की धारा, उन्हें रोक ना पाती।।" 8/2

पंडित प्रवर श्री लालचन्द्र जैन "राकेश" के "आत्मवृत्तम्" से उद्घृत ये पंक्तियाँ उनके संघर्षपूर्ण जीवन को दर्पणायित करती हैं। उनका जन्म उत्तरप्रदेश के ललितपुर जिला अंतर्गत ग्राम सिलगन् में एक धर्मनिष्ठ दम्पत्ति श्री कालूराम जी जैन मुनीम एवं श्रीमती कौशाबाई जी के घर 01 जुलाई, 1934 को हुआ जबकि बाल्यकाल नानी के यहाँ ग्राम किसलवास में बीता।

ग्राम में स्कूल तथा गाँठ में धन नहीं था, अतः आपकी प्रारम्भिक शिक्षा निकटस्थ ग्राम गुरसौरा में हुई। तदनन्तर जैन अनाथालय बड़नगर, श्री नाभिनन्दन दि. जैन विद्यालय,बीना एवं सर सेठ हुकमचन्द दि. जैन संस्कृत महाविद्यालय, इन्दौर में अध्ययन किया। दस वर्षों तक इन संस्थाओं में रहकर आपने जहाँ जैनदर्शन, न्याय, साहित्य विषयों में शास्त्री परीक्षा उत्तीर्ण की वहीं स्वाध्यायी रूप से हाई स्कूल एवं साहित्यरत्न की परीक्षाएँ भी उत्तीर्ण कर ली। वाराणसी प्रथमा एवं संस्कृत साहित्य सम्पूर्ण मध्यमा न केवल प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की अपितु मध्यमा **परीक्षा में तो विश्वविद्यालय में प्रथम स्थान भी प्राप्त किया।** इसी बीच सन् 1952 में परिणय हो जाने के कारण आपको शिक्षा प्राप्ति को विराम देकर कर्मक्षेत्र में उतरना पड़ा।

सन् 1953 में आप जैन विद्यामंदिर इण्टर कॉलेज नहटौर (बिजनौर) उत्तरप्रदेश में शिक्षक हो गये। आप उस समय इस कॉलेज में सबसे कम उम्र के शिक्षक थे। यहाँ एक वर्ष रहे फिर आपने आचार्य श्री देशभूषण दि. जैन गुरुकुल अयोध्या में शिक्षण, श्री मनोहरलाल जी वर्णी "सहजानन्द" महाराज के संघस्थ रह "सन्मति-सन्देश" पत्र का सम्पादन,श्री पार्श्वनाथ दि. जैन संस्कृत विद्यालय बरुवासागर एवं जैन टेक्नीकल इण्टर कॉलेज, मुंगावली में अध्यापन किया।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अध्यापन के साथ-साथ अध्ययन भी चलता रहा। आपने इस जीवन का भरपूर लाभ उठाया। जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आये उनसे संघर्ष करते हुए आपने सन् 1958 में **बी.ए. की परीक्षा न केवल उत्तीर्ण की अपितु मेरिट में भी स्थान प्राप्त किया।** यह जीवन की दूसरी महान उपलब्धि थी। इससे जीवन का एक नया अध्याय प्रारम्भ हुआ।

आप सन् 1958 में प्रायवेट सर्विस को छोड़ शासकीय उ.मा.वि. शिवपुरी में उच्च श्रेणी शिक्षक हो गये। यहाँ एक वर्ष रहे। सन् 1959 में शा: हाईस्कूल चाचौड़ा (गुना) आ गये। अध्यापन के साथ अध्ययन का क्रम यहाँ भी जारी रख आपने सन् 1962 में बी.एड. एवं 1963 में संस्कृत में एम.ए. परीक्षा उत्तीर्ण की तथा 1963 में ही आप शा.उ.मा.वि. रायसेन में व्याख्याता हो गये। सन् 1970 में आपने हिन्दी विषय में भी एम.ए. किया। लगभग 28 वर्ष व्याख्याता रह सन् 1990 में आप हाई स्कूल में प्राचार्य रह सन् 1994 में ससम्मान सेवानिवृत्त हो गए। अपने अध्याप्य विषयों के उत्तम परीक्षा-फल के लिए आपको शासन द्वारा अनेकशः सम्मानित किया गया।

आर्थिक विपन्नता एवं अभावों से घिरा, माता-पिता, भाई-बहन तथा रिश्तेदारो के लिए समर्पित दीपक की तरह जलकर दूसरों को प्रकाश देने वाला आपका जीवन प्रेरणादायक एवं जीवन मूल्य सिखाने वाला है।

आप जैसी सरलता, सहजता, सादगी, .सौम्यता, सज्जनता, सहिष्णुता एवं संवेदनशीलता का समुच्चय विरले ही लोगों में दृष्टिगत होता है। आप चरित्रनिष्ठ विद्वान् एवं कृपावंत गुरु हैं।

आपका व्यक्तित्व बहुआयामी, कार्य क्षेत्र व्यापक एवं कर्मफलक विस्तृत है। यथालब्ध में संतुष्ट हैं, राजनीति से विरक्त हैं और धर्म में अनुरक्त हैं।

आप हिन्दी, संस्कृत एवं जैन दर्शन के निष्णात विद्वान् हैं। आप जहाँ भी रहे अपनी प्रतिभा एवं ज्ञान के अवदान से समाज को लाभान्वित करते रहे। धार्मिक कार्यों में सक्रिय, सराहनीय सहभागिता रही। सभाओं के सफल संचालक, उत्तमवक्ता, कुशल कवि, प्रभावी लेखक एवं सरस प्रवचनकार आपकी पहचान रही। आपने अपने ज्ञान सौरभ से परिवेश को न केवल सौरभित किया अपितु वहाँ स्थायी छाप भी छोड़ी। रायसेन में धर्मचक्र का निर्माण एवं सिरोंज में टौरी जिनालय का जीर्णोद्धार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आपके धार्मिक एवं उदार जीवन के सुफल है। अतः नगर की विभिन्न संस्थाओं ने आपको सम्मानित कर गौरव का अनुभव किया।

विद्यार्थी जीवन के उषाकाल (सन् 1944) से ही सत्साहित्य साधना में आपको गहरी रूचि रही है। तब से आप निरन्तर स्फुट रचनाएँ लिखते रहे हैं। शासकीय सेवा से निवृत्त होने के बाद तो आप पूरी तरह सारस्वत सेवा में संलग्न हो गए।

आपने अनेक सन्तों पर महाकाव्य एवं जीवनियाँ लिखी हैं। आपको मुनिजीवन पर "सदलगा के संत" महाकाव्य की रचना करने वाले देश के प्रथम कवि होनेका गौरव प्राप्त है।

आपने अनेक पिछड़े एवं अविकसित तीर्थ क्षेत्रों के विकास एवं प्रचार-प्रसार के लिए क्षेत्र परिचयात्मक काव्य; क्षेत्र पूजन,आरती, विधान एवं चालीसा लिखकर निर्लोभ तथा निस्वार्थभाव से श्रद्धा का जो अर्घ्य चढ़ाया है, वह अप्रतिम है।

गुरु भक्ति से प्रेरित होकर आपने अनेक मुनिवरों पर पूजन, आरती, चलीसा भी लिखे हैं। सम-सामयिक स्फुट रचनाएँ भी आपने लिखी हैं, जिनकी संख्या पाँच सौ से अधिक है। विद्वत् संगोष्ठियों के लिए भी आपने शोध लेख लिखे है। यह श्रुतसेवक प्रतिदिन "काव्य शास्त्र विनोदेन" ही अपने समय का सदुपयोग करता है। अब तक आप माँ सरस्वती के चरण कमलों में साठ सुकृति सुमनों का अर्घ्य समर्पित कर चुके हैं। साहित्य साधना अभी भी अनवरत जारी है।

आपका जीवन आध्यात्मिक एवं धार्मिक भावनाओं से ओतप्रोत है। आपने सिरोंज के टौरी स्थित जिनालय में एक भव्य एवं वृहद् वेदिका का निर्माण कराया है, श्री सिद्धक्षेत्र पावागिरि में स्वर्णभद्र केवली की आदमकद खड्गासन प्रतिमा विराजमान की है तथा अतिशय क्षेत्र सेरौन में समंतभद्रस्वामी की चरण छतरी बनवाने का पुण्यार्जन किया है।

आप अपनी समाज तथा नगर के प्रतिष्ठित एवं बहुचर्चित विद्वान् हैं। सच पूछा जाय तो आप अपने नगर गंजबासौदा की पहचान हैं।

आपको अखिल भारतीय विद्वत् महासंघ, अखिल भारतीय शास्त्री परिषद्, अखिल भारतीय विद्वत् परिषद्, आचार्य ज्ञानसागर वागर्थ विमर्श केन्द्र व्यावर,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

त्रिलोक शोध संस्थान हस्तिनापुर, श्रुत संवर्द्धन संस्थान मेरठ, साहित्यकार संघ बासौदा, सकल दि. जैन समाज ललितपुर, साँची, बीना, बासौदा आदि अनेक संस्थाओं ने पुरस्कृत, सम्मानित एवं धर्मदिवाकर सुधांशु जैसी उपाधियों से अलंकृत कर स्वयं को महिमामंडित किया है।

जीवन के अंतिम पड़ाव के पथिक आप मारणान्तिकी सल्लेखना के प्रति भी जागरूक रह मृत्यु के प्रमोदमय अभिनंदन के लिए तैयार हैं।

आपके जीवन-उद्यान में सर्वविध सुख, सौभाग्य, समृद्धि के सुमन विकसित हों, आपकी कीर्ति कौमुदी दिग् दिगंत में प्रसृत हो तथा आप परिवार सहित स्वास्थ्य के शत-शत बसन्तों को देखें, यह मंगल कामना है।

संपर्क - श्री पारसनाथ कलेक्शन, शॉप नं. 20,
क्लब रोड, शेरपुरा, विदिशा (म.प्र.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पं. श्री लालचन्द्र जैन "राकेश" की साहित्य-सपर्या
जनवरी-२०१४ तक कुल संख्या-६० कृतियाँ

1. तीर्थंकर साहित्य – 1

क्रम	नाम	विवरण	पद्य संख्या	प्रकाशन वर्ष
1.	श्री पार्श्वनाथ चरितम्	भ.पार्श्वनाथ का चरित्र	52	2005

2. महाकाव्य – 6

1	सदलगा के संत	आचार्य श्री विद्यासागर जी का दिव्य जीवन। मुनिजीवन पर लिखा गया देश का प्रथम महाकाव्य	768	1998
2	संस्कृत प्रहरी मुनि सुधासागर	मुनि श्री सुधासागर जी का दिव्य जीवन	1800	2003
3	गणिनी ज्ञानमती महाकाव्य	गणिनी प्रमुख ज्ञानमति जी हस्तिनापुर का दिव्य जीवन।	1696	2008
4	कलातीर्थ सांगानेर	अतिशय क्षेत्र सांगानेर का परिचय	708	2007
5	आध्यात्मिक संत मुनि आर्जव सागर	मुनि श्री आर्जव सागर जी का दिव्य जीवन	1500	शीघ्र प्रकाश्य
6	अनेकान्त ज्ञान मंदिर काव्य सहस्त्री	अनेकान्त ज्ञान मंदिर बीना की प्रगति यात्रा।	1213	2012

3. मुनि जीवनी/जीवन चरित्र गद्य – 2

1	गुणों के आगर, ज्ञान के सागर	उपाध्याय श्री ज्ञान सागर जी का दिव्य चरित्र	342 पृष्ठ	2001
2	अमावस्या के चाँद	उपाध्याय विद्यासागर जी का दिव्य चरित्र	25	अप्रकाशित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

4. विद्वत परिचय (पद्य) – 20

1	आत्मवृत्तम्	स्वयं का काव्यात्मक परिचय	335	2013
	गीता–ज्ञान–आराधना काव्य	पं. श्री ज्ञानचन्द्र जी जैन "स्वतंत्र" गंजबसौदा का जीवन परिचय	150	अप्रकाशित
से	ज्योतिषाचार्य पं. हरदास जी : एक परिचय	पं. श्री हरदास जी, गंजबासौदा का परिचय	52	प्रकाशित 2012
20	प्रतिष्ठाप्रज्ञ–शतकम्म्	पं. प्रवर श्री विमलकुमारजी सौरंया टीकमगढ़ का परिचय	111	2013
	श्रुताराधक –	डॉ. श्रेयांस कुमार	131	2014

5. संत–शतक–साहित्य–5

1	आचार्य श्री ज्ञानसागर शतक	गुरुणांगुरु आचार्य श्री ज्ञानसागरजी का दिव्य जीवन	145	2002
2	आर्यिका चंदनामती–सौरभ	आ. चंदनामती हस्तिनापुर का दिव्य जीवन	131	2013
3	शास्त्रि परिषद् का सुनहरा सफर	अ.भा.दि. जैन शास्त्रि परिषद् का परिचय	101	2008
4	श्री सहजानंद शतक	श्री मनोहरलाल जी वर्णी "सहजानंद" जी का दिव्य जीवन	182	2010
5	गुलाल–कर्पूर–मंजरी	ब्र. श्री गुलजारीलाल जी की जीवन–यात्रा	161	2010

6. प्राकृत से हिन्दी पद्यानुवाद – 01

1.	तत्व–रहस्य	आचार्य कुंदकुंद रचित ग्रंथ	115	शीघ्र प्रकाशित

7. संस्कृत पद्य से हिन्दी पद्यानुवाद–5

1	भक्ताम्मर महाकाव्य	आचार्य श्री मानतुंग रचित भक्ताम्मर स्तोत्र का पद्यानुवाद	48	1972
2	विद्यासागराष्टकम्	पं. पन्नालाल जी साहित्यचार्य रचित विद्यासागराष्टकम् का पद्यानुवाद	08	1975

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

3	महावीराष्टकम् स्तोत्र	पं. भागचन्द जी रचित स्तोत्र के	08	2010
4		दो पद्यानुवाद		
5	दृष्टाष्टक स्तोत्रम्	–	10	2009

8. हिन्दी गद्य से हिन्दी पद्यानुवाद–1

1	तरुण चिन्तामणि	मुनि श्री तरुण सागर जी के "क्रांतिकारी सूत्र" सिर्फ आठ लाइन का आठ लाइन में पद्यानुवाद	112	2009

9. क्षेत्र परिचय काव्य–8

1	सेरौन सुषमा	श्री दि. जैन अतिशयक्षेत्र सेरौन जी (ललितपुर) का परिचय	150	1972
2	कोनी–दर्शन	–"– कोनी जी जबलपुर–"–	270	1975
3	सिरोंज के जैन मंदिर	–"– (सिरोंज विदिशा) –"–	70	1989
4	नैनागिरी–वैभव	–"– नैनागिरि छतरपुर –"–	450	2008
5	पावन–पावागिरि–दर्शन	–"– पावागिरि ललितपुर –"–	गद्य	2007
6	गंजबासौदा : एक परिचय	–"– समस्त जिनालयों का–"–	गद्य	2008
7	तीर्थ क्षेत्र ईशुरवारा	–"– ईशुरवारा (सागर) –"–	165	2011
8	भोपाल के जैन मंदिर	पृष्ठ–44	70	2008

10. पूजन–आरती–चालीसा–16

1 से 16	श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र सेरौन जी, त्रिफणी अतिशय क्षेत्र पटेरा (गढ़ाकोटा) बिजौलिया पारसनाथ, सांगानेर, रेवासा–3, साँची, बड़ागाँव (धसान) गंजबासौदा, जवाहर चौक भोपाल, पावागिरी (ललितपुर) उ.प्र., खजुराहो, पवाजी के पारसनाथ, स्वर्णभद्र केवली, भ. बाहुबली इत्यादि।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

11. पूजन-स्तुति-आरती-30

1 से 30	श्री 108 आचार्य शांतिसागर जी (छाणी), आ. विद्यासागरजी आचार्य विमल सागर जी, भिण्ड, आचार्य सूर्यसागर जी, आचार्य सुमति सागर जी, आ. विरागसागर जी, उपाध्याय ज्ञानसागर जी, मुनि वर्द्धमान सागर जी, माँ कौशलजी, मुनिसमतासागर जी, मुनि प्रमाण सागर जी, आ. विशुद्धसागर, मुनि अजितसागर जी, मुनिआर्जवसागरजी, मुनि विशदसागरजी इत्यादि।

12. अष्टक-40

1	मुनि श्री सुधासागर जी	मुनिश्री सुधासागर जी की स्तुति	08	1989
	मुनि श्री अभयसागर जी	मुनिश्री अभयसागरज़ी	08	2008
से	अनेकान्त ज्ञान मंदिर, बीना	अतिशय क्षेत्र श्रुतधाम का परिचय	50	क्रमशः
40	गणिनी आर्यिका	स्तुति	50	क्रमशः
	ज्ञानमती माताजी	इत्यादि 40 संतों के अष्टक	–	सामयिक

13. विधान-1

1	"सुमतिनाथ विधान"	श्री दिम्बर जैन अतिशय क्षेत्र रेवासा (सीकर) राजस्थान	101	2011

14. संपादन-9

1	सन्मति संदेश	पाक्षिक पत्र ज़बलपुर	1954-55
2	जैनाचार्य	जैनाचार्यों का परिचय ग्रंथ	1955
3	मनीषी	प्राचार्य नरेन्द्रप्रकाश अभिनंदन ग्रंथ	2004
4	बासौदा में विद्यासागर	गजरथ महोत्सव स्मारिका	2008
5	प्रव़चन पर्व पत्रिका	झाँसी	1998
6	भावविज्ञान पत्रिका	भोपाल	अनवरत
7	साहित्य मनीषी की काव्य स्मृतियाँ	पं. दयानंदजी अभिनंदन ग्रंथ	2010
8	प्रतिष्ठा-प्रज्ञ	(पं. विमल कुमारजी सौरंया अ.ग्र)	2013
9	प्रणमामि	आ. श्री ज्ञानसागर जी महाराज की रजत संयम वर्ष स्मारिका	2013

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

15. **कविता-संग्रह :** जिन गुणानुवाद-मंजरी (111 कविताएँ) 2014

16. सम – सामयिक 500 से अधिक कविताएँ, लेख, शोधालेख, कहानियाँ, ग्रंथ समीक्षाएँ, सम्पादकीय, आद्यवचन इत्यादि। साहित्य साधना का क्रम अभी भी अनवरत चालू है।

सारांशीकरण

क्रम	विधा का नाम	संख्या
1.	तीर्थंकर-चरित्र	01
2.	महाकाव्य	06
3.	मुनि जीवनी (गद्य)	02
4.	विद्वत् परिचय (पद्य)	20
5.	शतक	05
6.	प्राकृत से हिन्दी पद्यानुवाद	01
7.	पद्यानुवाद (संस्कृत से हिन्दी)	05
8.	पद्यानुवाद हिन्दी गद्य से हिन्दी पद्य	01
9.	क्षेत्र परिचयात्मक काव्य	08
10.	पूजन-आरती-चालीसा (तीर्थंकर)	16
11.	पूजन-आरती-स्तुति (आचार्य आदि)	30
12.	अष्टक	40
13.	विधान	01
14.	सम्पादन	09
15.	स्फुट कविताएँ, शोध आलेख, कहानियाँ, समीक्षाएँ, आद्यवचन प्रस्तावना इत्यादि	500 से भी अधिक।
16.	कविता-संग्रह	01

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्राप्त पुरस्कारों की सूची

क्रम	पुरस्कार नाम	राशि
1.	आचार्य श्री सूर्यसागर स्मृति श्रुत संवर्द्धन पुरस्कार-2002	Rs. 31,000/-
2.	श्रीमती स्व. चन्दारानी जैन स्मृति विद्वत् महासंघ पुरस्कार-2002	Rs. 11,000/-
3.	महाकवि आचार्य ज्ञानसागर त्रयोदश पुरस्कार-2005	Rs. 51,000/-
4.	जम्बूद्वीप पुरस्कार हस्तिनापुर-2008	Rs. 25,000/-
5.	अ.भा.दि. जैन शास्त्री परिषद् पुरस्कार-2008	Rs. 51,00/-
6.	श्री सहजानंद वर्णी पुरस्कार-2009	Rs. 11,000/-
7.	अ.भा.दि.जैन गोपालदास वरैया स्मृति विद्वत् परिषद् पुरस्कार-2010	Rs. 5,100/-
8.	सकल दिगंबर जैन समाज ललितपुर द्वारा विशेष सम्मान निधि से सम्मानित-2000	Rs. 11,111/-
9.	साहित्यकार संघ, गंजबासौदा (विशेष सम्मान)-2010	---
10.	श्रीमान् वर्धमान, ऋषभ जी मोहिवाल परिवार, कोटा (विशेष सम्मान)	Rs. 21,000/-

उपाधियाँ

1. धर्म दिवाकर-श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक एवं गजरथ महोत्सव समिति साँची (म.प्र.)
2. सुधांशु-श्री नाभिनन्दन दिगम्बर जैन हितकारिणी सभा बीना सागर (म.प्र.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अर्थसौजन्य प्रदाता

क्र.	राशि	नाम
01	1000	श्रीमान् ब्र. गोकुलरामजी, दिल्ली
02	11,111	श्रीमती सरोज जैन / ईजी. श्रीविजय जैन, A-11, अरिहंत न्यू मिनॉल रेजीडेन्सी
03	5001	श्रीमती संगीता जैन / श्री रवीन्द्र जैन, F-24, मिनॉल
04	2501	श्रीमती सरोज जैन / श्री अशोक जैन, A-27, NMR
05	2100	श्रीमती शशिकान्ता जैन / श्री इंजी. निर्मलचन्द्र जैन, अयोध्यानगर
06	1100	श्रीमती डॉ. सविता जैन / श्री डॉ. अशोककुमार जैन
07	1100	श्रीमती सरिता जैन / श्री अकलंक जी जैन, दुर्गेश विहार (एड.)
08	1101	श्रीमती ऊषा जैन / श्री कमल हाथीशाह, अयोध्यानगर
09	1101	श्रीमती किरण पाटनी / श्री जे.के. पाटनी, NMR/Tulip/509
10	1101	श्रीमती सरोज जैन / श्री राजमल जैन, A-251, मीनाल
11	1100	श्रीमती शकुंतला / श्री महावीर प्रसाद जैन, A-32, मीनॉल
12	1100	श्रीमती मंजु जैन / श्री विपिनकुमार जैन, Sdx-57, मीनॉल
13	1100	श्रीमती शुचिता जैन / श्री राजीव हाथीशाह, अयोध्यानगर
14	1100	श्रीमती प्रेमलता जैन / श्री विजय जैन, ट्रान्सपोर्ट, अयोध्या नगर
15	1100	श्रीमती रश्मि जैन / श्री सुशील जैन, श्रावणकान्ता एस्टेट
16	1100	श्रीमती साधना जैन / श्री सुनील कुमार जैन, 47, फ्लोरा सिटी
17	1100	श्रीमती शकुन्तला जैन / श्री के.सी. गोयल, D-37, अयोध्या नगर
18	1000	श्रीमती मंजुला जैन / श्री सन्तोष कुमार जैन, 191, अयोध्या नगर
19	1001	श्रीमती मीना जैन / श्री राकेश कुमार जैन, E/433, मीनॉल
20	500	श्रीमती राजकुमारी / श्री रवीन्द्र मोहन जैन, मीनॉल
21	500	श्रीमती शीला जैन / श्री मोहन पोतकर, गीत बैंगलोज
22	500	श्रीमती सुनीता जैन / श्री देवेन्द्र कुमार जैन, 61 सागर एवेन्यू
23	500	श्रीमती मंजु जैन / श्री अजित जैन NMR, A-07
24	250	श्रीमती राजकुमारी / श्री महेन्द्र जैन, न्यू मीनॉल
25	250	श्रीमती सुशीला / श्री पी.सी. जैन, बाकलीवाल, NMR

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सम्मतियाँ

आप एक अच्छे साहित्यकार एवं कवि हो। कवि होने के नाते कुछ न कुछ रचनाएँ करते रहते हों।

आपके प्रवचन समाज के अक्स और नक्श को बदलने के लिए लक्स का काम करते हैं।

कुन्दनलाल जैन
एल-15, भारती निकेतन,
गोविन्दपुरा, भोपाल
फोन : 0755-2583272

मैं जब-जब "पावन-पावा-गिरि-दर्शन" पुस्तक को पढ़ता हूँ, पवाजी जाने को मन व्याकुल हो जाता है। आपने बहुत ही सरल, सुन्दर भाषा में लिखा है, इसके लिए आपको बहुत-बहुत धन्यवाद व बधाई।

विनय कुमार जैन
401, पर्ल रेसीडेन्सी, म. गाँधी रोड,
एस.बी.-167, बापू नगर, जयपुर (राजस्थान)
मो.: 0141-2702077
दि.: 07.02.2010

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

श्री १००८ चिन्तामणि पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, अयोध्या नगर, भोपाल (म.प्र.)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi